पंच विधान संग्रह

रचयित्री
आर्यिका विज्ञानमती

सम्पादिका
आर्यिका आदित्यमती

प्रकाशक
धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
सागर (म. प्र.)

❑ कृति : **पंच विधान संग्रह**

❑ रचयित्री : **पूज्य आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी**

❑ सम्पादिका : **पूज्य आर्यिका श्री आदित्यमती माताजी**

❑ संस्करण : **प्रथम, अगस्त, २०१५**

❑ आवृत्ति : **११००**

❑ :

❑ प्राप्ति स्थान : **नीतेश जैन**
रमेशचन्द राकेशकुमार जैन (कालादेव वाले)
आरोन, जिला-गुना (म. प्र.) ९७५३७४२१५१

❑ मुद्रक : **विकास आफसेट, भोपाल**

समाहित आँचरी

विशाल भवन का प्रवेश द्वार छोटा ही होता है। प्रचण्ड दावाग्नि की जन्मदात्री चिंगारी छोटी ही होती है। विशाल वटवृक्ष को जन्म देने वाला बीज छोटा ही होता है। विशाल गंगा को जन्म देने वाली गंगोत्री गोमुख की धार बहुत छोटी ही होती है। विशाल शरीर को बलिष्ठ बनाने वाला मुख बहुत छोटा ही होता है, इसी प्रकार सद् संस्कारों से संस्कारित साधक अध्यात्म रसिक रसिया बहुत थोड़े ही हैं किन्तु उनका प्रभाव-प्रताप सिंह के समान सारे जंगल में होता है। उन्मार्गी को सन्मार्गी, मोही को मोक्षमार्गी, सग्रन्थ को निर्ग्रन्थ, सरागी को वीतरागी बनाने वाली भारतीय वसुंधरा, जैन संत साधुओं की आचरण पूर्ण चरणरज का सतत् स्पर्श कर धन्य भाग्य हुई उनमें पूज्य आर्यिका श्री का अग्रगण्य है। त्याग-तपस्या-संयम का अद्भुत तेज उनके आभामण्डल का चिरस्थायी अंग बन गया है। आपका सामीप्य पाते ही सभी भव्य आत्माएँ साधुत्व को प्राप्त करने को तड़प उठती हैं।

गणिनी आर्यिका ब्राह्मी-सुंदरी, सीता-अंजना, चंदना-चेलना, राजुल-द्रौपदी आदि आर्यिकाओं की परम्परा में संयम-तप-त्याग, ध्यान-अध्ययन, अध्यात्म साधना के लिए आम जनता में जिनकी विशिष्ट पहचान है, ऐसी पूज्य आर्यिका श्री का पालन-पोषण भीण्डर नगर के श्रेष्ठी श्री बालूलालजी की धर्मपरायणा पत्नि श्रीमती कमलादेवी के घर आँगन में साधु-संतों की छत्र-छाया में हुआ। उन्हीं से सद्संस्कारों को पाकर प्रभुवर को समर्पित हुईं। अन्दर इतनी अधिक प्रभुभक्ति समाहित है कि प्रभु का नाम तो बहुत दूर प्रभु के स्मरण मात्र से ही उनके सारे काम सहज हो जाते हैं।

आचार्य भगवन्तों ने कहा है कि प्रभु की भक्ति जन्म-जरा-मरणरूपी रोगों को समाप्त करती है, वरन् भक्ति के साथ सौदा न हो। भक्ति व्यापार-व्यवसाय न बनें। संसार में जिनभक्ति ही एक माध्यम है, जिससे की हर आत्मा परमात्मा से अपना सम्बन्ध बना सकती है। भक्ति सरागी की नहीं वीतरागी की होनी चाहिए। विषय सुख के लिए नहीं पाप

क्षय के लिए होना चाहिए। भक्ति बाहरी प्रलोभन से हट कर अंतरंग में आनन्द, उत्साह, उमंग की लहरियों के साथ तन्मयता पूर्वक होना चाहिए तभी हमारे अन्दरश्रद्धा, करुणा, प्रेम, वात्सल्य, पवित्रता, विवेक, संतोष आदि अनेकानेक गुण प्रवाहित हो सकते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि भक्ति किसकी करनी चाहिए तो आचार्य कहते हैं अपने इष्ट आराध्य और कोई नहीं अपने जिनेन्द्र देव ही होना चाहिए। अब कोई भक्ति, पूजन-विधान करके करता है, कोई भजन-गीत आदि कीर्तन करके करता है, कोई आरती करके, कोई जाप्य करके भक्ति का आनन्द अनुभूत करता है, इन सबमें भक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम पूजन-विधान ही है। जब कभी भी विषयों में डूबा मानव अपने जीवन से समय निकाल कर भगवत् भक्ति करके पापों का प्रक्षालन कर सकता है। भगवत् भक्ति से मेढ़क क्षण मात्र में स्वर्गिक विभूति को प्राप्त कर गया। जिस प्रकार सोना कभी भी आग में कूदने पर भी भयभीत नहीं होता है। उसी प्रकार जिनभक्त कभी परीक्षाओं से विचलित नहीं होता है। जैसे अंगारा हवा तूफानों से कभी बुझता नहीं है धधकता ही है, वैसे ही जिनभक्त प्रलोभन चमत्कार आदि हवाओं से डगमगाता नहीं है। वरन् चमकता जाता है।

भक्ति; मुक्ति देने वाली है, प्रभु के प्रति अगाध आस्था उत्पन्न करने वाली है, इस बात की अनुभूति करते हुए पूज्य आर्यिकाश्री ने अपने अनुभव से आगम के आधार पर अध्यात्म रस से भरी अन्तरंग भक्ति लहरों से कभी लघुकाय तो कभी बृहत्काय विधानों के रूप में भक्ति गंगा जनमानस तक प्रवाहमान की है। उसी भक्ति गंगा की शीतल बौछार है यह 'पंच विधान संग्रह' कृति।

पूर्व में १००८ बड़ेबाबा विधान, विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान, वर्द्धमान-महावीर विधान, शान्ति प्रदायक शान्ति विधान, सम्मेदशिखर महामण्डल विधान, इन सभी विधानों में ७२-७५ तक अर्घावली हैं। बृहत् जयमाला सभी को आह्लादित करती हैं। जिनभक्त लगभग ३०-३५ मिनिट में शान्ति से विधान अर्चना कर लेता है। समूचे भारत के जिन

श्रद्धालु इन विधानों की पूजा करके आपत्तियों को भी सम्पत्ति में परिवर्तित कर लेते हैं।

कई श्रावकों ने बड़े बाबा विधान को १००८ बार कर लिया। किसी ने पाँचों विधानों को अलग-अलग १०८-१०८ बार कर लिया है। एक बार एक व्यक्ति जो मंदिर में अष्ट द्रव्य का थाल लेकर तो पहुँच गया पर बड़े बाबा विधान की पुस्तक ले जाना भूल गया। अब क्या करें ? थोड़ा परेशान सा हुआ, फिर उसे याद आया कि मोबाइल हमारे पास है, उसने नेट पर देखा और बड़े बाबा का विधान खोलकर पूरा विधान कर लिया। कई श्रावक-श्राविकाओं को तो विधान याद है, वे पूजन के समय से अन्य समय में भी बैठे-बैठे विधान की पीठिका, जयमाला, अन्य अर्घ आदि गुनगुनाते ही रहते हैं। उनका कहना है कि इन पंक्तियों को पढ़ने मात्र से भी विशुद्धि बढ़ती है, संकट भी टलते हैं। कोतमा के एक श्रावक ने तो आकस्मिक मृत्यु बेला को भी टालने में सफलता इन विधानों को करके प्राप्त की। इन सभी की भावना थी कि पूज्य माताजी इन पाँचों विधानों को एक ही कृति में समाहित कर दिया जाये तो हम सभी विधान कर्ताओं को सहजता रहेगी। हमारा उपकार होगा। इन सभी की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए ही यह कार्य किया है। एक ही पुस्तक मंदिरजी में, यात्रा में अथवा अन्य कहीं पर भी जाते समय हम ले जा सकते हैं। हमारा जब जैसा मन बने तब हम वो विधान कर लें।

अतएव पूज्य आर्यिकाश्री के शुभाशीष से ब्र. भरत भैया, सागर ने कृति का संयोजन किया है। वे भी भविष्य में पूज्यपने को प्राप्त करें अर्थात् उन्हें रत्नत्रय की प्राप्ति हो।

अन्त में मुझे विश्वास है कि यह कृति सभी भक्तों को श्रेयस्कर लगेगी और सभी को क्षेम प्रदान करेगी। परम्परा से मुक्ति की प्राप्ति में सशक्त माध्यम बनेगी। इसी भावना से पंच परमेष्ठी, चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों के चरण कमलों में नमन-नमन-नमन....।

संघस्थ

आर्यिका आदित्यमती

श्री बड़ेबाबा विधान

स्तुति

(दोहा)

पूज्य बड़े बाबा तुम्हें, कोटि-कोटि परणाम।
थुति करता हूँ चाव से, मिट जावे भव नाम॥

(पद्धरी)

जय पूज्य बड़े बाबा महान, तुम दर्शन से हो पाप हान।
सब दोष विनाशक धीर वीर, मम दोष विनाशो गुण गरीर॥

मैं दरशन कर जो नन्द पाय, वो कह सकता ना शब्द माय।
है गद-गद वाणी पुलक देह, है केवल तुममें मम सनेह॥

मैं हरिहर आदिक देव देख, ना तुष्ट हुआ हूँ हे विशेख।
सो आया सबको छोड़ आज, मैं वंदन करहूँ सिद्ध काज॥

मैं हर्षित होकर नाच-नाच, मम इष्ट पूज्य हो आप साँच।
मैं ठुमक-ठुमक कर दऊँ ताल, मैं चलना चाहूँ आप चाल॥

मैं तननं-तननं तुरहि देय, मैं घननं-घननं घण्ट देय।
मैं ढम-ढम-ढम-ढम-ढोल बजा, मैं पूजूँ मेटो जनम सजा॥

तव दर्शन से हो अग्नि नीर, तव पर्शन से मिट जाय पीर।
हो पापी के भी पाप नाश, पुनवान बढ़ेंगे मोक्ष पास॥

मैं पर्वत चढ़कर निकटआय, सब मिटा परिश्रम आप पाय।
तुम कर्म रहित हो वीतराग, है मेरा तुमसे परम राग॥

दृग ज्ञान सुदर्शन सौख्य वीर्य, ना होते तुममें कभी शीर्य।
त्रयलोकालोकं रहे जान, है उसका फिर भी नहीं मान॥

सुर शक्री-चक्री पड़े पाद, पा जाने समकित सत्य खाद।
जो एक बार भी करे दर्श, ना होवे तन-मन कभी कर्श॥

वो फिर-फिर आवे आप चरण, ना तजता क्षण भर आप शरण।
गुरु विद्यासागर सूरि देव, तव दर्श करन को आप गेह॥

वे दरशन करके रीझ गये, वे पुनः-पुनः आ शीश नये।
फिर मंदिर नूतन बनवाया, जब बाबा को था पधराया॥

वह दृश्य देखने लायक था, हर बच्चा उसका भावक था।
तब हर्ष अश्रु भी झलक रहे,ना दर्शक की वा पलक नये[१]॥

यह मंदिर कितना है विशाल, यह संरक्षा की है मिशाल।
औ दीक्षा दीनी नेक यहाँ, यह गुरू कृपा है आज यहाँ॥

हम सबही उनके शिष्य रहे, हम भक्ति करे यह इष्ट अये।
अब मन में मेरे नहीं आस, मैं केवल तुमरा रहूँ दास॥

मैं बलि-बलि जाऊँ दिवस रात, मैं भव-भव पाऊँ आप साथ।
मम मोठे बाबा वर्ष-वर्ष, जयवंत रहे हो हर्ष-हर्ष॥

गुरु छोटे बाबा कोटि वर्ष, इह दरशन देवे देय पर्श।
हम दरशन पा द्वय बाबा के, हम बचे कर्म के धावा से॥

मैं नन्त-नन्तशः नमन करूँ, मैं शिव मारग पर गमन करूँ।
मैं तब तक पूजूँ आप पाद, ना होवे जब तक मुक्ति साथ॥

(दोहा)

महिमा तुमरी हे प्रभो, कह सकता है कौन?।
बृहस्पती भी हारकर, ले लेता है मौन॥

इति परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि!

---

१. पलकें नहीं झपक रही थी।

विधान पूजा

स्थापना

(ज्ञानोदय)

मोठे बाबा बहुत बड़े है, बुंदेली में सबसे ही।
बड़े कहे हैं कुण्डलपुर में, महिमाशाली सबमें जी॥
श्रीधर स्वामी इसी क्षेत्र से, मोक्ष गये हैं भव छोड़ा।
सिद्धक्षेत्र का अतिशय भारी, हमने भी आ मन जोड़ा॥

(दोहा)

पूज्य बड़े बाबा प्रभो, श्रीधर श्रेष्ठ महान्।
सन्निधि थापन उर बुला, अहनिशि पूजूँ आन॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(घत्ता)

मैं स्वर्णिम झारी, में जल डारी, हे शिवकारी गुण गाऊँ।
मम जन्म मिटा दो, जरा बढ़ा दो, मृत्यु नशा दो पद आऊँ॥
हे बाबा मंगल, मेटो दंगल, मिथ्या जंगल में उलझा।
मैं महिमा सुनके, तुमको भजके, पूजा करके अब सुलझा॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मलया चंदन, काटो बंधन, करके वंदन शरण गहूँ।
मैं शीतल बनने, आतप हरने, अर्चन करने चरण चहूँ॥
हे बाबा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ये अमल अखण्डित, सौरभ मण्डित, करने खण्डित पाप तमम्।
मैं अक्षत लायो, थाल भरायो, मन हरषायो मेट ममम्[१]॥
हे बाबा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. अहंकार

हे काम विभंगे! रंग बिरंगे, सुरभित चंगे पुष्प लये।
बस ताप नाश दो, चरण वास हो,आप खास हो धर्म महे!॥
हे बाबा मंगल, मेटो दंगल, मिथ्या जंगल में उलझा।
मैं महिमा सुनके, तुमको भजके, पूजा करके अब सुलझा॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ले नैवज मीठे, विधि मल रूठे, तुम हो नीठे त्रिभुवन में।
मैं थाल भराऊँ, मंदिर आऊँ, क्षुधा नशाऊँ, चरणन में॥
हे बाबा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये दीपक प्यारा, मणिमय न्यारा, आज उजारा देख तुम्हें।
सब मोह नशाने, ज्ञान सुपाने, दीप चढ़ाने भाग्य जगे॥
हे बाबा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये धूप दशांगी, सुरभित संगी, हे शिवरंगी लाया हूँ।
मैं कर्म जलाने, तुम गुण पाने, धूप चढ़ाने आया हूँ॥
हे बाबा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे गुण-गण धारी! लौंग सुपारी, पिस्ता प्यारी ले आऊँ।
दो मोक्ष महाफल, मेटो दल-दल, बनने अविचल नित ध्याऊँ॥
हे बाबा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं द्रव्य सजाके, जल्दी आके, पूज रचाके हर्षित हूँ।
औ आप अमोलक, हे सुख गोलक, बजा सुढोलक अर्पित हूँ॥
हे बाबा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक-अर्घ

(दोहा)

अष्टक से मैं पूजकर, मुख्य गुणों को अर्घ।
देता हूँ गुण सिन्धु को, मिटे कर्म उपसर्ग॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्/क्षिपामि॥

(ज्ञानोदय)

स्वेद नहीं हो चेतन में वह, मल है तन का क्यों आवे?।
स्वेदहीनता अतिशय प्रभु का, किसके मन को ना भावे॥
मंगल ग्रह भी मंगल कर दे, बाबा को जो अर्पित हो।
पूजन करके भक्ति भाव से, जीवन करे समर्पित औ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः निःस्वेदत्व जन्मातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं....।

मल-मूत्रों के आँख नाक के, नव द्वारों के मल से भी।
रहित रहा तन पूजा से मम सुधर गये हैं परभव भी॥
बृहस्पती सी बुद्धि बढ़ेगी बाबा तेरे दर पर आ।
श्रद्धा-पूर्वक अर्घ चढ़ावे, गुरुग्रह भी तो भागे वा॥ २॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः निर्मलत्व जन्मातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं....।

दुग्ध समा है धवल रक्त जो, वत्सलता को बतलाता।
क्षेम-कुशल के काम देखकर, तीनलोक तव गुण गाता॥
शुक्र ग्रहं क्या कर पायेगा, कुण्डलपुर के बाबा को।
सुमरण करके जप करले तो, जग में उसका नामा हो॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः क्षीरगौररुधिरत्व जन्मातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं....।

ऐसा सुन्दर रूप कहीं ना, सुरनर किन्नर खगधर में।
देखा हमने बाबा जैसा रूप कहाँ है जगभर में॥
मोह राहु भी तव अर्चा से, भगे राहु क्या कर पाये?।
तुमरे साथे बोल भव्य तू, क्यों ना प्रभु के गुण गाये?॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः समचतुरस्रसंस्थान जन्मातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

वज्रों से भी बलशाली तुम, तन से सबका हित होता।
चूर दिये हैं आत्म शक्ति से, पूजक का भव मित होता॥

क्रोध केतु भी तव चरणों की, आराधन से मिट जावे।
अहो केतु ग्रह कैसे बाबा, तुम भक्तों के टिक पावे॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः वज्रवृषभनाराच संहनन जन्मातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

सामुद्रिक शुभ लाञ्छन से ये, सुडौल सुन्दर अद्भुत औ।
सौरूप्यं है अतिशय बाबा, वन्दक भी तो अद्भुत हो॥
सूर्य ग्रहों से ग्रसित हुये भी सूरज सम वो चमक उठे।
आ जावे दरबार आपके,आनन्दित हो फुदक उठे॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः सौरुप्य जन्मातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

देह सुरभि से चम्प चमेली, पारिजात भी लज्जित हो।
बाबा भज लें आप चरण तो, प्रज्ञ जनों में सज्जित हो॥
मिथ्यातम का शनि लागा जो, नन्तकाल से प्राणी के।
मिट जावे शनि रुके कहो क्या, शरण पाय सुखदानी जे॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः सौगन्ध्य जन्मातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

एक सहस वसु लक्षण शोभित, आप वदन यह प्यारा है।
सहस भवों के पाप मेट कर, अर्चक लगता न्यारा है॥
भूत पिशाचं आकर बाबा, लीन होय सब भूल गये।
सता सके क्या भूत कहो जो, तव चरणों की धूल गहे॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः सौलक्षण्य जन्मातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं....।

उपमा कैसे अतुल शक्ति की, हो सकती है किससे जी।
भक्त पुजारी बाबा तेरा, आगे होता सबमें जी॥
जन्म-जरा के रोग मूल से, शरणागत के नाश करें।
कुष्ठ भगंदर आदि रोग क्या, रहे शीश जो पाद धरे॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अप्रमितवीर्य जन्मातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं....।

मिष्ठ वचन को सुनकर लाडू, पेड़ा घेवर बावर भी।
फीके लगते पूजक के तो नहीं बचेंगे पातक जी॥
सोम सौम्यता धरता जो भी सौम्य बिम्ब को पूजेंगे।
सोम ग्रहों का काम बचा क्या दुर्दिन सह भव रूठेंगे॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः प्रियहितवादित्व जन्मातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

(चौपाई)

चार शतक कोशों तक पूरी, दुर्भिक्षं से धरती दूरी।
रहती अतिशय बाबा तेरा, पूजन में मन लागा मेरा॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः गव्यूतिशत चतुष्टय सुभिक्षत्वघातिक्षय-जातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

पक्षी सम हो गगन बिहारी, बाबा तुमसे विधियाँ हारी।
लोक-अन्त में जाय बसे हो, पाद-पद्म उर आन बसे औ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः गगनगमनत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

कुछ कम कोटी पूर्व वर्ष तक, बिन खाये भी पुष्ट रहा तन।
भगवन भोजन कभी न करते, दुखियों के कष्टों को हरते॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

गमनों से वा दिव्य वाच से, प्राणी वध ना होय आप से।
अहोऽप्राणिवध अतिशय किसमें,हो सकता बस भगवन तुममें॥ १४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

तीर्थंकर जो कर्म आपका, उपसर्गों से रहित आप वा।
अन-उपसर्ग अतिशय जैसा, अन्य कहाँ हो बाबा वैसा॥ १५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़ेबाबा अर्हं नमः उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

सबको लगता प्रभु का आनन, मेरे आगे रहा आप तन।
चारों दिशि में दिखते सबको, आनन्द भारी बाबा हमको॥ १६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

सब विद्याएँ चेरी बनकर, रहती नित ही बाबा तुम पद।
विद्येश्वर की पूजा कर लूँ, फिर क्यों ना मैं भव को तर लूँ॥ १७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः सर्वविद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

अहा देह की छाया नाहीं, पड़ती भूपर तुमरी भाई।
अच्छायत्वं अतिशय कैसे, गावे हम हैं गूँगे जैसे॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अच्छायत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

आँखों की पलकें ना झपके, इनसे तो बस समता झलके।
देखन की सब इच्छा त्यागी, थकें नहीं हैं ये बड़भागी॥ १९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अपक्ष्मस्पंदत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

नख केशों की वृद्धि रुकी है, इन्द्र मुकुट की मणी झुकी है।
परमौदारिक देह रही है, अतिशय है यह बात सही है॥ २०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

(नरेन्द्र)

(लय : शांतिनाथ के पद.....)

अर्धमागधी भाषा सुनकर, असंख्यात भवि प्राणी।
एक साथ ही समझे बाबा, मिटे शंक दुख खानी॥
तव दर्शन से निःशंकित हो, समकित भी पा जावे।
अज्ञानों का अंध मिटे तो, तम से क्यों भय खावे?॥२१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

सिंह गाय औ साँप नेवला, जन्म विरोधी जीवा।
बैर भूलते तुम्हें देखकर, मिट जाती सब पीड़ा॥
सर्व जीव में बने मित्रता, अतिशय भगवन तेरा।
कुण्डलपुर में दर्श करे जब, हर्षित हो मन मेरा॥२२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः सर्वजन मैत्री-भाव देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

षट् ऋतुओं के फल-फूलों से, लद जाते इक साथे।
वृक्ष-लताएँ झाड़-झाड़ियाँ, मुकुलित हो चहकाते॥

तेरी अर्चा करने वाले, पुत्र पौत्र यश पूजा।
पाते पल में धन-धान्यों को,उन सम ना हो दूजा॥२३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः सर्वर्तुफलादि शोभित तरु परिणाम देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

आप विचरते जहाँ-वहाँ की, धरती दर्पण भाँती।
निर्मल होती रत्न प्रपूरित, सब मन को हर्षाती॥
चमक उठेगा तीन लोक में, रत्नों सम तुम सेवी।
पापों का प्रक्षालन करके, बन जावे वृष-नेमी॥२४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः आदर्शतलप्रतिमारत्नमयी देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

जिस दिशि में तुम विहरण करते, चले पवन अनुकूलं।
मन्द-मन्द ही नहीं किसी को, वायु रहे प्रतिकूलं॥
बाबा तेरे चरण पड़े तो, पाप पंक धुल जावे।
मन्द-मन्द ही कर्म उदय हो, कष्ट सभी भग जावे॥२५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः विहरणमनुगतवायुत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

तुम्हें देखकर कलिया मन की, खिलती पुलकित देही।
हो जाते हैं आनन्द पाते, चाहे हो निर्नेही॥
सुख में हो या दुख में होवे, गीत तुम्हारे गावे।
बाबा खुशियाँ जीवन भर हो, फूला नहीं समावे॥२६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः सर्वजनपरमानन्दत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

वायु जाति के देव मार्ग के, काँटे कंकड़ धूली।
दूर करे सो धरा स्वच्छ हो, जब आते शिव चूली॥
संकट टलते पूजक के जब, अर्पित होकर पूजे।
बाबा तुमको तजकर वे तो, और कहीं ना रीझे॥ २७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

मेघ जाति के देव गगन में, गर्जन करके आवें।
हरष-हरष कर रिमझिम-रिमझिम, गंधोदक बरसावें॥
आधि-व्याधि से झुलस रहा हो, आप भक्तिमय पानी।
पी लेवे तो पल भर में ही, बनता शान्ति प्रधानी॥२८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः मेघकुमार कृत गन्धोदकवृष्टि देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

पाद रखेंगे आप जहाँ पर, देव कमल रच देवें।
सहस पत्र के कनक विनिर्मित, सूर्य दीप्ति हर लेवें॥
दो-सौ पच्चिस पद्म देखकर, विस्मय सबको होवे।
पादयुगल को एक साथ रख, गमन आपका होवे॥२९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः पादन्यासेकृत पद्मानि देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

पकी फसल जब दर्शक का तन, रोमांचित कर देती।
त्रिभुवनपति के वैभव को ही, निरख-निरख सुख लेती॥
भाग्यवान जो भगवन तेरी, पूजा कर हरषावे।
भूत-प्रेत की बाधाएँ भी, क्षण-भर में विनशावे॥३०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः फलभारनम्रशालि देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

बिजली बादल ओस कणों से, धूँधल से भी रीता।
नभतल होता निर्मल जैसे, फटिक मणी हो शीता॥
बाबा आकर आप चरण में, लोट-पोट हो जावे।
आपद के सब बादल छटकर, नींद चैन की पावे॥ ३१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः शरत्कालवन्निर्मल गगनत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

तुरही घंटा ढोल नंगाड़ा, ढम-ढम झन-झन बाजे।
साढ़े बारह कोटि वाद्य से, सुरकृत दुन्दुभि साजे॥
बाबा तेरे पद पंकज की, धूली शीश चढ़ावे।
कल्याणक हो उसका पंचम, तीन लोक पद आवे॥३२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः एतैतैतिचतुर्निकायामर परस्पराह्वान देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

दसों दिशाएँ शारद नभ सी, निर्मलता ले भाती।
भाव मलों से रहित नाथ के, अतिशय को बतलाती॥
पुण्यास्रव हो पूर्व पाप का, नाश पाप ना आवे।
पूजे बाबा उसके घर में, खुशहाली छा जावे॥३३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः शरन्मेघवन्निर्मल दिग्विभागत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

सहस आर का झग झग करता, धर्म चक्र से पावन।
उसे देखकर पापी का भी, जीवन होता सावन॥
सौ-सौ उसके भाग्य जगेंगे, जो भगवन को ध्यावें।
अपयश मिटकर यश फैलेगा, सहज-सौख्य को पावें॥ ३४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः धर्मचक्रचतुष्टय देवोपनीतातिशय गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

(लय-दोहा)

सिंहासन पे राजते, फिर भी अधर विराज।
विस्मित सबको कर दिया, समवशरण में राज॥
कुण्डलगिरि में आय के, बाबा की हम आज।
दृम-दृम वीणा नाद कर, पूज रचे शिरताज॥३५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः सिंहासन प्रातिहार्य मण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

साढ़े बारह कोटि के, ढम-ढम ढोल बजाय।
तुमरा अतिशय देखकर, लायो अर्घ्य सजाय॥
कुण्डलगिरि में आय के, बाबा की हम आज।
दृम-दृम वीणा नाद कर, पूज रचे शिरताज॥३६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः दुन्दुभि प्रातिहार्य मण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

हरित मणी के पत्र का, सघन छाँव का गाछ।
उसके नीचे आपकी, छवि अशोक निरबाध॥
कुण्डलपुर.....॥ ३७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अशोकवृक्ष प्रातिहार्य मण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

---

१. उच्च गति प्राप्त करके सम्मानीय होगा।

चामर झुककर उठ रहे, कहते सुन ले भव्य।
झुक जा चरणों उच्च ही, गति हो होगा श्रव्य[1]॥
कुण्डलगिरि में आय के, बाबा की हम आज।
दृम-दृम वीणा नाद कर, पूज रचे शिरताज॥३८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः चतुषष्टि चामर प्रातिहार्यमण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

कोटि सूर्य चन्दा सभी, फीके ही पड़ जाय।
भामण्डल को देखकर, तेज सौम्यता पाय॥
कुण्डलपुर.....॥ ३९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः भामण्डल प्रातिहार्यमण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

तीन-लोक त्रय छत्र का कहते हैं स्वामित्व।
पूजन अर्चन से रहे, सुख में ना खामित्व॥
कुण्डलपुर.....॥ ४0॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः छत्रत्रय प्रातिहार्यमण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

दूर-दूर तक आपकी, दिव्य वाच फैलाव[1]।
समाधान सब प्रश्न का, पा जावे भवि चाव[2]॥
कुण्डलपुर.....॥ ४१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः दिव्यध्वनि प्रातिहार्यमण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

नाना-विधि के पुष्प जो, डण्ठल नीचे राख।
बरस कहे रे पूज ले, बन्धन होंगे राख॥
कुण्डलगिरि.....॥ ४२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः पुष्पवृष्टि प्रातिहार्यमण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

नंत दर्श से हे प्रभो अवलोकन हो जाय।
तीनलोक त्रयकाल सब, बिन श्रम के दिख जाय॥
कुण्डलगिरि .....॥ ४३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अनंतदर्शन गुण धारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

---

१. दिव्यध्वनि प्रसारित होती।
२. इच्छित समाधान पाते हैं।

नंत ज्ञान में सर्व ही, द्रव्यों की पर्याय।
गुणों सहित झलके अहो, दर्पण सम तुम माय॥
कुण्डलगिरि .....॥ ४४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अनंतज्ञान गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

मोह कर्म के नाश से, अनंत सुख सम्पन्न।
इन्द्रिय से ना उपजता, दूर हुआ परपंच॥
कुण्डलगिरि .....॥ ४५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अनंतसुख गुणधारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं....।

शक्ति रही अद्भुत प्रभु, और कहीं ना होय।
ना थकते नाराम[१] की, आवश्यकता होय॥
कुण्डलगिरि .....॥ ४६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः अनंतवीर्य गुण धारक जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

(सखी) (अति पुण्य उदय.....)

तव रत्नवृष्टि सुर करते, जब आप गरभ को धरते।
नव-मास आपकी सेवा, कर सुरिया पाती मेवा॥
छप्पन कुमारी सेव करती, मात की वसु याम है।
क्योंकी विराजे आप उसके, गरभ में शिव धाम है॥
बाबा गरभ में आप आये, रत्नमयी यह भू धरा।
ओहो हुई तब रत्नगर्भा, नाम इसने शुभ धरा॥
मैं गर्भ उत्सव पूजकर, ना चाहता हूँ सम्पदा।
मैं आप पद की शरण पाऊँ, क्यों मिले फिर आपदा॥४७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वर्गावतरण गर्भकल्याणक मण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

हे जन्म कल्याणक धारी, तव महिमा जग में न्यारी।
सुर करे मेरु अभिषेकं हम करते पूज विशेखं॥
हम पूज करते आपके अब, जन्म लड़ियाँ ना बची।
शचि देख मिथ्या मद तमों से, चंद क्षण में हाँ बची॥
बाबा तुम्हें जब सहस आठों, कलश से अभिषेचता।

१. आराम की नहीं

सौधर्म सुर कर सहस नयना, दरश कर भव खेवता॥
मैं धन्य हूँ प्रभु आपको पा, सर्व दुख से बच गया।
औ मोहतम अज्ञान मेरा, दूर मुझसे हट गया॥४८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः जन्मकल्याणकमण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

जब तप की भावन भाई, तब लौकान्तिक सुर आई।
तव करे प्रशंसा भारी, यह संयम की बलिहारी॥
देखकर तव संयमों को, तप तपस्या योग को।
वादी-कुवादी मोह तजते, भोगि छोड़े भोग को॥
दीक्षा कल्याणक देख बाबा, साथ तुमरे नृपवरम्।
जाके बने थे वन-निवासी, पावने को सुखवरम्॥
हे देव तुमने मौन धर, सम्मुग्ध सबको कर दिया।
मैंने सुउत्तम अर्घ देकर, शीश पद में धर दिया॥४९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः तपकल्याणकमण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

जब ध्यान अग्नि सुलगाई, तुम लीन हुए निज माहीं।
तब चार-घातिया धाये, प्रभु केवलज्ञान उपाये॥
तुम पाय करके ज्ञान केवल, समवसरण शोभित हुए।
भवि दिव्य-ध्वनि से देशना पा, आप पद मोहित हुए॥
बारह सभा में देव-देवी, मनुज नारी पशुगणम्।
ऋषि श्रमण-श्रमणी बैठ पीते, धर्म अमृत दुखहरम्॥
हम पूज करके, ताल देकर, छम छमा छम नाचते।
ये अर्घ देने आपको, बाबा धमाधम आवते॥५०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः ज्ञानकल्याणकमण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

जो घाति अघाति दुखदाई, वे पूर्ण मिटे जब भाई।
तब शिव-पुर में जा राजे, हम पूजें हे सुखसाजे!॥
हम पूजते जो मोक्ष पद में, राजते अति विमल हैं।
हे नाथ! अर्चा करहिं पापी, जीव बनते अमल हैं॥
हे श्रेष्ठ श्रीधर केवली ने, मुक्तिरमा को पा लिया।
इस भूमि को हो धन्य करके, सिद्ध पावन कर दिया॥

बाबा सदा ही आपकी जो, ध्यावते गुणमाल हैं।
वे मुक्तिवधु के हाथ से वा, पहन ले वरमाल हैं॥ ५१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः मोक्षकल्याणकमण्डित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

(लय - कहाँ गये चक्री ....) (विष्णुपद)

क्षुधा नागिनी डसती पल-पल, सो तुमने नाशी।
भूख दोष जो चारों गति में, दे पीड़ा खासी॥
उसको मूल मिटाया बाबा, पूजूँ हे धीरं।
क्षुत्-बाधा मिट जावे मेरी, अरजी है वीरं॥ ५२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः क्षुधा दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

तृषा व्यथित हैं तीन लोक के, हाय सभी प्राणी।
नेक भाँति के पेय पिये पर, तृप्ती ना जाणी॥
प्यास अशेषं नाशी है सो, जो अर्चे बाबा।
मिटे पिपासा धन वैभव की, पाता सुख खासा॥ ५३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः तृषा दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

जर-जर होती देह सभी की, पुष्ट नहीं होवे।
फिर भी पौष्टिक खाकर हा-हा, भेद ज्ञान खोवे॥
जरा नशी है आयेगी ना, भूल कभी बाबा।
चरणों शीश नमाते मिटता, कर्मों का धावा॥ ५४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः जरा दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

आँख-नाक के पेट पीठ के, रोगों ने घेरा।
औषध खाई पर ना बाबा, रोग मिटा मेरा॥
आतंकों के पार गये तुम, वन्दूँ तुम चरणा।
आधि-व्याधि में कष्टों में बस, तुम ही हो शरणा॥ ५५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः रोग दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

देव नरों के, नारक तिर्यग, भव में जन्मा हूँ।
मानस तन के आकस्मिक भी, दुख को सहता हूँ॥
जन्म शृंखला टूटी बाबा, अब ना जन्मोगे।
भव्यों पूजो क्षणभर भी तो, नाहीं भटकोगे॥ ५६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः जन्म दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

भाव मरण कर प्रतिपल मैंने, कर्मों को बाँधा।
इसीलिए तो मर-मर पाई, कारागृह बाधा॥
पण्डित-पण्डित मरण किया सो, सिद्धालय उपजे।
बाबा भवदिय चरण जजे तो, ना आपद निपजे॥ ५७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः मरण दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

लोकत्रय के भ्रमणों से हा, डरकर मैं आया।
कोई ना है थान चित्त में, मुझको जो भाया॥
निर्भय बाबा पूजक तेरा, सातों भय नाशे।
कुछ वर्षों में पा जायेगा शिव के सुखखाशे॥ ५८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः भय दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

छोटी-मोटी चीज देखकर, अचरज आया है।
क्योंकी मुझको अक्ष विषय ही, अबतक भाया है॥
तीन लोक को तीन काल को, बिन बाधा जानो।
बाबा तुमको विस्मय ना हो, मेरे अघ हानो॥ ५९॥

ॐह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः विस्मय दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

नन्त पदारथ में से भी तो, कुछ नाहीं भावे।
आप चरण को छोड़ जिनेश्वर, और कहाँ जावे॥
बाबा रतिया शेष नहीं सो, सगरे आते हैं।
इसीलिए बस मुझको तो तुम, चरण सुहाते हैं॥ ६०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः रति दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

मन भावन में इष्ट वस्तु में, चेतन ललचाया।
किया राग सो उनको पाने, पापों लिपटाया॥
राग रहित हो बाबा फिर भी, सब कुछ मिलता है।
देख आपकी वीतरागता, आनन खिलता है॥ ६१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः राग दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

बैर विरोधी झगड़ालू से, दूर सदा भगता।
निकट बसे यदि आकर के तो, चित्त नहीं पगता॥

द्वेष-भाव का नाम बचा ना, सो द्वेषी आते।
लखकर तेरी छवि को बाबा, मन वाँछित पाते॥६२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः द्वेष दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

ये मेरा है, ये तेरा है, पक्षपात नाहीं।
कर्त्तापन को छोड़ बने हो, निज आतम साँई॥
सब द्रव्यों से मोह मिटाकर, बाबा राजत हो।
किन्नर छम-छम नाच-नाचकर,महिमा गावत औ॥६३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः मोह दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

दर्शनावरणी मिटा तभी तो, निद्रा भागी है।
तव दर्शन की बाबा हममें, तृष्णा जागी है॥
चक्री-शक्री खगधर, विद्याधर भी पूजे हैं।
सब देवों को तजकर हम तो, तुममें रीझे हैं॥ ६४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः निद्रा दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

दरश मोह ना चरित मोह ना, अंतराय भागा ।
निर अम्बर हो निर आभूषण, मन चेतन पागा॥
गृह-गृहिणी को छोड़ चले तो, चिन्ता काहे की।
तीन लोक में मात्र आपके, चरणा भावे जी॥ ६५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः चिन्ता दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

औदारिक यह उत्तम तन है, स्वेद कहाँ आवे।
रहा पसीना देह मैल है, किसके मन भावे॥
धन्य हुए हैं आज दर्श कर, बाबा चरणों के।
तुमको लखकर पापी जन भी,रहते शरणों में॥ ६६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः स्वेद दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

कोई अच्छा बुरा करे तो, खेद नहीं करते।
कारण जग की सही व्यवस्था, ज्ञानों में धरते॥
नहीं किसी से अपनापन है, ना अपना मानो।
मिटे खेद जो भक्ति करेगा, ये निश्चित जानो॥६७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः खेद दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

इष्ट वियोगं होता ना है, आप अकेले हैं।
शोक मिटा है शौक बढ़ा है, सो हम चेले हैं॥
कुण्डलपुर के मोठे बाबा, शोक मिटाते हैं।
हम तो तुमरे भक्त बने, अब अर्घ चढ़ाते हैं॥ ६८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः शोक दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

क्या अच्छा क्या अच्छा ना है, आपेक्षित सारे।
आप जानते तभी आपके, नाहीं मद खारे॥
आप मदों के नाशक बाबा, पूजा रचवाये।
उसके मद की कारण विधियाँ,कैसे बच पावे॥ ६९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः मद दोष रहित जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं ....।

(गीता)

(लय : नवदेवता.....)

दुख दातृ चारों घाति नाशे वन्द्य श्रीधर केवली।
फिर चतुर्अघाती नाशने को, आय गुरुवर केवली॥
इस क्षेत्र पर ही सिद्ध पद को, पा लिया औ आपने।
हम अर्घ लेकर आपके पद, पूज करने आवते॥ ७०॥

ॐ ह्रीं सिद्ध पद प्राप्त श्री श्रीधर केवलिने नमः अर्घ्यं ....।

श्री आदि अजित श्रेयांस जिन श्री शांति पार्श्व अरनाथ के।
श्री चन्द्र सुविधि शीतल जिनेश्वर वीर नेमी नाम के॥
औ पूज्य मंदिर साठ अठ है क्षेत्र कुण्डलपुर जहाँ।
मैं अर्घ देता सर्व को जिन, पूज से हो विधि कहाँ॥ ७१॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थित सर्व जिनालयेभ्यो सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

पूर्णार्घ

(घत्ता)

ये सर्व जिनालय, सुख के आलय, बाबा के चहुँ ओर रहे।
सब वीतराग के, आत्म पाग के, दर्शक के मद तोड़ रहे॥
ये शिखर बद्ध औ, फिर न बन्द हो, श्रद्धा से जो नमते हैं।
वसु अर्घ संजोके, वसु मद खोके प्रतिपल तुमको भजते हैं॥ ७२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः।

(१०८ बार करें)

जयमाला

जयमाला भव खेव की, कुण्डलगिरि के देव।
गाऊँ बाबा आपकी, भक्त बना गुण सेव॥

(ज्ञानोदय)

यह सिद्धक्षेत्र है श्रीधर स्वामी, चार अघाती नाश किये।
अष्टम वसुधा जाय विराजे, शिव ललना के पास जिये॥
इस ही गिरि पर अतिशय वाला, एक बिम्ब है बाबा का।
जिनके दर्शन सुमरण से ही, बन जाते सब काम अहा॥ १॥

सहस-सहस अयनों से बाबा, लाखों-लाखों लोग यहाँ।
राजा श्रेष्ठी धार्मिक जन ने, पूज करी तिस पार कहाँ॥
पुरातत्त्व से इतिहासों से, जाने जाते आप यहाँ।
कैसे लाये कब लाये थे, कैसा मंदिर आज रहा॥ २॥

सपना आया इक व्यक्ती को, बैल रथों में जा करके।
ले जाओ ना भूल कभी तुम, देखो पीछे मुड़ करके॥
गाड़ी वाला प्रतिमा गाड़ी, में रख करके दृढ़ता से।
चला पटेरा नगर दिशा में, बाबा के प्रति ममता ले॥ ३॥

आगे-आगे गाड़ी चलती, उसके पीछे बाजों की।
संगीतों की ढोल मजीरे, पग के घुंघरु नाचों की॥
ध्वनियों साथे महामहोत्सव, यहाँ किसी ने रचवाया।
देखे बिन ना उत्सव को वह, गाड़ी वाला रह पाया॥ ४॥

जैसे ही वह पीछे मुड़कर लगा देखने बाजों को।
वहीं रुकी थी गाड़ी इक डग, आगे ना बढ़ पाये औ॥
बाबा तो बस यहीं रहेंगे, सोच यही सब भव्यों ने।
मंदिर बनवा विराजमान कर, दर्श किये थे श्रव्यों[१] के॥ ५॥

१. जिनके गुण सुनने के योग्य होते हैं।

लोगों में यह वर्षों वर्षों से प्रचलित शुभ गाथा है।
इसके ही बल श्रद्धा से सब, आय नमाते माथा है॥
और सुनो इतिहास नाथ का, दूजा मैं बतलाता हूँ।
मुनिवृन्दों से जुड़ा हुआ है, उनके गुण नित गाता हूँ॥ ६॥

कई दिनों जब सुरेन्द्र कीर्ति मुनि, जिनदर्शन ना कर पाये।
भोजन-पानी त्याग दिये थे, प्रभु भक्ती से अकुलाये॥
बिहार करते संघ आपका, नगर हिण्डोरी[१] जब आया।
कहा सभी ने कुछ दूरी पर, इक पर्वत है गुरुराया॥ ७॥

उस पर भूगत एक बिम्ब है, उनके दर्शन आप करें।
और दान का अवसर देकर, हमको भी कृतकाज करें॥
सुनकर लोगों की ये बातें, सूरीश्वर जी जल्दी से।
कुण्डलगिरि पर पहुँचे तब ही, सबने मिलकर फुरती से॥ ८॥

बाबा का औ बिम्ब निकाला, दरश कराये गुरुवर को॥
दरशन करके बाबा तेरे नाच उठे थे मुनिमन औ॥
उनके ही श्री नेमिदत्त जी, ब्रह्मचारी थे सज्ज्ञानी।
सेवा पूजन करते प्रभु की, लोक मध्य थे सन्नामी॥ ९॥

उनने नृपवर छत्रशाल को, दरशन करने स्वामी के।
बुलवाया सो बाबा तेरी, भक्ति करी सुखदानी रे॥
उसके फल में गया राज्य भी, वापस उसने पा लीना।
खुश होकर के सुन्दर मन्दिर, बनवाया था भवभीना॥ १०॥

अब कहता मैं पापी जन की, कीने जिनने उपसर्गम्।
दुष्फल पाकर शरण गही सो, तत्क्षण पाये सुखवर्गम्॥
आकर के औरंगजेब ने, बाबा तुम्हें मिटाने की।
प्रतिमा खण्डित करने तेरी, महिमा पूर्ण हटाने की॥ ११॥

लेय हथौड़ा पटका पग पर, दुग्ध धार आ निकल पड़ी।
देख अचम्भा हुआ सभी को, कल्पन नृप की विकल पड़ी॥

१. हिण्डोरिया

बतलाती थी मानो प्रभु के, तन में जनमों से ही हाँ।
क्षीर समा ही श्वेत रक्त था, तीर्थंकर का अतिशय वा॥ १२॥

एक बार तो इक पापी ने, विघ्न किया इह आकर के।
मधुमक्खी के यूथों ने झट, उसे भगाया खाकर के॥
आदि-आदि है चमत्कार जो, तेरे सबको दिखते हैं।
श्रद्धा से आ चरण आपके, क्या-क्या ना पा सकते हैं॥ १३॥

उनको लिखना कैसे संभव, वे तो गणनातीत रहे।
जो भी जितना माँगे मिलता चिन्तन से अघरीत भये॥
देश-विदेशों सभी प्रदेशों, जैन अजैनी सब आते।
तुमरे दरशन करके उनको, फिर ना कोई मन भाते॥ १४॥

और कहूँ क्या विद्यासागर, गणनायक गुरु आये थे।
पच्चिस सौ बत्तीस वीर के, मोक्ष समय गुण गाये थे॥
जूने मंदिर में से बाबा, तुमको जब ले जाना था।
नूतन मंदिर में तब माँसाहारी मानव आया था॥ १५॥

बाबा किंचित हिले नहीं तो, चिंता गुरु को उपजी रे।
नहीं खिसकते भगवन् सो क्या, नहीं हमारी भक्ती है॥
उसको बुलवा पूछा क्या तुम, खोटा-भोजन करते हो।
उसने उठकर जल्दी से गुरु, चरणों में सिर धरके औ॥ १६॥

त्याग किया फिर जाकर तुमको, उठा लिया ज्यों फूल रहें।
वा-वा-वा-वा जय-जय-जय-जय, करते सब ही झूल उठें॥
जैसे ही जब सिंहासन पर, आप तिष्ठ कर राजे थे।
गुरुवर का तो अद्भुत अनुभव, आनन पर ही लागे रे॥ १७॥

गुरु आशिष का फल था यह सब, दुनिया ने वा देख लिया।
धन्य हुआ मम रम्य हुआ मम, बाबा तुमको देख जिया॥
आदिनाथ या नेमिनाथ या, महावीर है अतिवीरा।
वन्द्य बड़े बाबा हैं हमरे, पूज्य अर्च्य गुण गम्भीरा॥ १८॥

बाबा हैं ये मोठे बाबा पूज्य बड़े बाबा जी हैं।
हम तो पूजे चौबिस घण्टे, इसमें ही मन राजी हैं॥
पृथ्वी कागज अर्णव जल को स्याही कर लूँ जिनवर के।
सब वृक्षों की कलम बनाकर लिखता जाऊँ मनभर के ॥ १९॥

गुण गाऊँ मैं कैसे बाबा, नन्त-गुणों के आगर हैं।
जीवन पूरा होगा गुण ना, छोटेंगे सुखसागर के॥
अल्पबुद्धि से बिन्दु समा ये, गुण गाये बस मैंने हैं।
भक्ति भार में मूक बना हूँ, शोध पढ़े जे पैने हैं॥ २०॥

पूर्ण करूँ अब मौन धरूँ मैं, लज्जा अनुभव करता हूँ।
हे स्वामी मैं क्षमा माँगकर, चरणों में सिर धरता हूँ॥
कर्म नाश हो दुःख नाश हो, बोधि समाधि प्राप्त करूँ।
यही प्रार्थना करता मैं तो, तुम सम प्रभुवर आप्त बनूँ॥ २१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बड़े बाबा अर्हं नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वादः

कुण्डलगिरि का श्रीधर स्वामी, पूज्य बड़े बाबा का जो।
विधान करता भाव भक्ति से द्वय भव दुखड़ा मिटता औ॥
सुरनर किन्नर विद्याधर के, सौख्य सहज ही मिलते हैं।
परम्परा से मोक्षमहल के, सुख भी उसको फलते हैं॥

परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् / क्षिपामि।

प्रशस्ति

(१)

शांति सिंधु से विद्या गुरु तक, सूरीश्वर की प्रतिभा है।
विवेकसागर दीक्षा दाता, तप संयम की प्रतिमा थे॥
कूकनवाली में धारा है, श्रमणी पद को जिसने वा।
पूज्य बड़े बाबा का प्यारा, रचा विधानं उसने हाँ॥

(२)

मुंगावलि में संघ नायिका,रही आर्जिका दृढ़मति जी।
व्यूह बड़ा है सत्ताइस का, उनसे मिलकर आये जी॥
मालथौन में पार्श्वनाथ के, दर्शन करके आय यहाँ।
पूर्ण हुआ है कोटि वर्ष तक, बनी रहे यह पूज महा॥

(३)

चैत्र शुक्ल की पूनम के दिन, सूर्यवार शुभ प्यारा है।
वीर मोक्ष चौंतीस वर्ष है, जैनधर्म सुखकारा है॥
पाँच बीस सौ संवत में ही, कुण्डलपुर के गिरिवर पे।
विराजमान श्री बाबा का यह, विधि विधान अति मनहर है॥

(४)

पानी पृथ्वी पावक पवनं, जब तक धरती धारे जी।
तब तक पूजा भक्ति रचाके, भव्य पाप को वारे जी॥
जयवन्ते यह पूज नाथ की,युगों-युगों तक दरशन हो।
बाबा के हम रहे पुजारी, जब लो शिव ना परसन हो॥

शान्तिप्रदायक

श्री शान्ति विधान

श्री शान्तिनाथाय नमः

पीठिका

कामदेव चक्रेश हैं, तीर्थंकर श्री देव।
शान्तिनाथ की स्तुति करूँ, मेरी नैय्या खेव॥

(ज्ञानोदय)

अमिततेज नृप एक बार निज, शत्रु वर्ग से लड़ने को।
जाता था वह प्राण हरण कर, विजयमाल ही वरने को॥
शत्रु अचानक विजयप्रभु के, समवसरण में पहुँच गया।
दर्शन करके तीर्थंकर के, वैर भाव सब सिमट गया॥ १॥

अमिततेज ने प्रभु की वाणी, सुनकर मिथ्यातम नाशा।
सम्यक् पाकर अनन्त भव को, चुल्लू भर बस कर डाला॥
एक बार फिर भाग्य खुला सो,अमर-सिन्धु का दरश किया।
पाकर के उपदेश धर्म का, महाव्रतों को ग्रहण किया॥ २॥

और मरण संन्यास किया जो, सोलह दिवि में जा उपजा।
आकर के बलभद्र हुआ सो, नारायण में मन उलझा॥
नारायण की मृत्यु हुई तो, शव में भी जब राग बढ़ा।
मुनिवर से सम्बोधन पाकर, तत्क्षण उससे राग घटा॥ ३॥

दीक्षा लेकर स्वर्ग गये फिर, आ करके नृप क्षेमंकर।
तीर्थंकर के पुत्र आपका, वज्रायुध था नाम अमर॥
चक्रवर्ति थे पुण्यवान थे, षट्खण्डों के अधिपति थे॥
नव निधियाँ थी चौदह रत्नों, के स्वामी थे सन्मति थे॥ ४॥

स्वर्ग लोक के इन्द्रों ने भी, इनकी सम्यक् श्रद्धा की।
करी प्रशंसा बार-बार तो, सबने उनकी शंसा की॥
लेकिन आकर एक देव ने, करी परीक्षा जब इनकी।
लेश मात्र भी च्युत न हुए तो, सत्य मान ली थी सबही॥ ५॥

फिर वे कुछ ही दिन में अपने, पूज्य पिता से दीक्षा ले।
बाहुबली की भाँति खड़े हो, तप तपने की शिक्षा दे॥
सहा घोर उपसर्ग देवकृत, ग्रैवेयक में इन्द्र हुए।
प्रवीचार से रहित हुए पर, सर्व सुखों के पूर हुए॥ ६॥

आकर घनरथ तीर्थंकर के, मान्य मेघरथ पुत्र हुए।
अवधिज्ञान था भेदज्ञान था, जिनशासन के सूत्र हुए॥
देवों ने आ इस भव में भी, करी परीक्षा करुणा की।
परम अहिंसा धर्म बताकर, अहो कबूतर रक्षा की॥ ७॥

श्रावक व्रत को पालन करते, ध्यान लीन थे सुनो तभी।
सुरियों ने आ ब्रह्मचर्य को, हर लेने की कोशिश की॥
नहीं डिगे थे परम ब्रह्म से, शीलवान थे साहस था।
फिर दीक्षा ले जनक पाद में,पाया समकित क्षायिक था॥ ८॥

तीर्थंकर पद का आस्त्रव कर, स्वर्ग गये फिर आकर के।
ऐरादेवी विश्वसेन के, घर जन्मे सुख पाकर के॥
आहा जिनने भवों भवों में, भव को मूल मिटाने की।
उपसर्गों में परीषहों में, धैर्य आत्मबल पाने की॥ ९॥

करी साधना सफल हुआ अब, उनका शिव पुरुषार्थ यहाँ।
गुणसागर के गुण गाने की, मैंने पायी भक्ति कहाँ॥
फिर भी चुप हो कैसे बैठूँ, भक्ति लहर उर उठ आई।
पूज्य रचूँ मैं विधान सुंदर, बुद्धि कहाँ से उड़ आई॥ १०॥

(दोहा)

शान्तिनाथ के गुण अहो, रहे अनन्तानन्त।
सुरगुरु भी गाने लगे, तो नहिं पावे अन्त॥

इति परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि!

विधान पूजा

स्थापना

(ज्ञानोदय)

तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जो, प्रातिहार्य से शोभित हैं।
समवसरण में बारह-गण के, मन को करते मोहित हैं॥
सुर-नर मुनिगण भाँति-भाँति के, स्तोत्रों से गुण गाते हैं।
दर्शन करके जीव असंख्यों, सम्यग्दर्शन पाते हैं॥
त्रय पद धारक उन ही प्रभु का, आह्वानन हम करते हैं।
सन्निधि थापन करके स्वामी, चरणों में शिर धरते हैं॥
सहस-सहस मम भाग्य जगे हैं, पूजन करना भाया है।
पाद-पद्म पा लगा आप सम, पद ही मैंने पाया है॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(लय : जहाँ डाल डाल पर .....)

चेतन झारी में हे स्वामी! ज्ञान पयस भर लाया।
जन्म -जरा-मृत्यु रोग मिटाने, कल्मष धोने आया॥
मैं पूजन करने आया।
तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ की पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं....।

जन्म ताप से घबराया सो, चन्दन घिस कर लाया।
आप चरण की छत्र-छाँव में, ताप मिटाने आया॥
मैं पूजन करने आया।
तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः संसारतापविनाशनाय चंदनं....।

क्षत-विक्षत उपयोग रहा सो, निज स्वरूप नहिं पाया।
अक्षय आत्म सुवै-भव पाने, अक्षत आज चढ़ाया॥
मैं पूजन करने आया।
तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं ....।

कामदेव हे कामविजेता, पुष्प चढ़ाने आया।
व्यथित हुआ मैं कामबाण से, उसे मिटाने आया॥
मैं पूजन करने आया।
तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं ....।

भोजन पाने पागल सा बन, दर-दर पर भटकाया।
ज्ञानामृतमय भोजन पाने, नैवज चरण चढ़ाया॥
मैं पूजन करने आया।
तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ....।

मिथ्यातम के अंधकार से, चारों गति भरमाया।
ज्ञान-दीप से मोह मिटाने, दीपक लेकर आया॥
मैं पूजन करने आया।
तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ....।

क्रोध अग्नि में जलकर हा! हा! आत्मबोध नहिं पाया।
धूप चढ़ाने के मिस[१] स्वामी, कर्म जलाने आया॥
मैं पूजन करने आया।
तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

१. बहाने

काजू किसमिस लौकिक फल से, विरतिभाव मन भाया।
मोक्ष महाफल पाने प्रभुवर, मेरा मन ललचाया॥
मैं पूजन करने आया।
तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

जल से फल तक सभी द्रव्य को, आज मिलाकर लाया।
आप नाम को सुना तभी से, मम आतम हरषाया॥
मैं पूजन करने आया।
तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं ....।

प्रत्येक-अर्घ

(दोहा)

पूजा आठों द्रव्य से, अब पूजूँ दे अर्घ।
शान्ति मिले सब जीव को, मिट जावे दुख दर्द॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्/क्षिपामि॥

(ज्ञानोदय)

चौंतीस अतिशय

औदारिक है देह आपका, फिर भी स्वेद न आता है।
स्वेदरहितता अतिशयधारी, आप नाम मन भाता है॥
शान्तिनाथजी शान्तिनाथजी, शान्तिनाथ जो नित्य रटे।
पाप कर्म की घनी घटायें, सारी उसकी शीघ्र छटे॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निःस्वेदत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

खाते पीते लेकिन तन में, मूत्र नहीं नहिं मल बनता।
निर्मलता यह जन्मजात है, भक्ति करे तो भव टलता॥

शिखि की वाणी सुनकर जैसे, भागे विषधर नाग सभी।
शान्तिनाथ की भक्ति करे नहिं, आ पावे शनि साँप कभी॥ २॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निर्मलत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

श्वेत रक्त है आप देह में, विस्मित मेरा देख जिया।
तभी इन्द्र ने क्षीरोदधि के, जल से तव अभिषेक किया।
क्लेश भाव की पापकर्म की, आग लगी हो चेतन में।
शान्तिनाथ का कीर्तन पानी, उसे बुझावे क्षण भर में॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं क्षीर गौररुधिरत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

लज्जित था वह इन्द्रराज भी, देख आपकी सुन्दरता।
तब तो चरणों की सेवा में, आ दिखलाई तत्परता॥
शान्तिनाथमय नागदमनियाँ, पास रहेगी जिस घर के।
राहुग्रहमय काले विषधर, आ न सकेंगे उस घर में॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं समचतुरस्र संस्थान जन्मातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

सहज सलौनी देह आपकी, सबको विस्मय उपजावे।
विस्मित नहिं हो मद ना करते, तब तो भव तज शिव पावे।
शान्तिनाथ के भक्त तुम्हारे, ऐरावत सम पाप भगे।
शेर सामने खड़ा दिखे तो, हाथी भी क्या वार करे॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौरुप्य जन्मातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

वज्रों से भी कठोर शक्ति पर, कोमलता अति भारी है।
उत्तम संहनन अतिशयधारी, महिमा जग में न्यारी है॥
शान्तिनाथ की भक्ति करे तो, वज्रों से भी कठिन रहे।
पाप कर्म भी कठोरता तज, मंद बनेंगे त्वरित अरे॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वज्रवृषभनाराच संहनन जन्मातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

सुगन्ध देही जग की सारी, खुशबू वाली चीजें भी।
दुर्गन्धित सी लगे प्रभो तो, भवि क्यों उनमें रीझे जी॥
सूर्य उदय से जैसे तम भी, भाग खड़ा हो क्षण भर में।
शान्तिनाथ की भक्ति हृदय हो,दुख भागेंगे पल भर में॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौगन्ध्य जन्मातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

मीन साथिया कमल आदि जो, श्रेष्ठ-श्रेष्ठ शुभ चिह्न रहे।
आप देह में शोभ रहे हैं, अतिशय सबसे भिन्न अरे।
पाप शत्रु आ वार करे तो, आप भक्तिमय तलघर में।
यदि छुप जावे आपद-विपदा, कैसे आवे जीवन में॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौलक्षण्य जन्मातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

तुलना कैसे किससे होवे, आप वीर्य की इस जग में।
तभी हिला था मेरुगिरी जब, शंका उपजी सुर मन में।
शान्तिनाथ की अर्चामय यदि, नौका का अवलम्बन ले।
दुःख शोकमय महासिन्धु को, पार करेंगे निश्चित वे॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अप्रमितवीर्य जन्मातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

कभी किसी से कुछ भी बोले, हितप्रद होंगे प्रिय होंगे।
आप वचन हे नाथ! लोक में, दुख मेटेंगे श्रिय देंगे॥
वज्रपात से जैसे पर्वत, चूर-चूर हो जाते हैं।
शान्तिनाथ की पूजा से सब, पाप दूर हो जाते हैं॥ १०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं प्रियहितवादित्व जन्मातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

केवलज्ञान के अतिशय

(चौपाई)

ईति भीति से अनावृष्टि से, भूमि दूर हो दुष्ट वृष्टि से।
चार घातिया कर्म घात से, अतिशय पाया शान्तिनाथ ने॥ ११॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं गव्यूतिशत चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

नभ तल में ही आप चलेंगे, धरती को ना स्पर्श करेंगे।
आधि व्याधि संताप मिटेंगे, शान्तिनाथ के चरण पड़ेंगे॥ १२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं गगनगमनत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

क्षुधा-तृषा का नाम मिटा है, आत्मामृत का पान बढ़ा है।
शान्तिनाथ का चेला बन जा, शान्ति मिलेगी निज को पा जा॥ १३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

प्राणिघात नहिं होता तन से, प्राणदान ही पाते तुमसे।
शान्तिनाथ त्रिभुवन के स्वामी, पूजें बनने निज के स्वामी॥ १४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

बाधा कोई देने आवे, तुमको लखकर गुण ही गावे।
शान्तिप्रभुजी शान्त हुए हैं, भवसागर से पार हुए हैं॥ १५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

चारों दिशि में आनन दिखता, ऐसा अतिशय किसको मिलता।
तीर्थंकर ही पा सकते हैं, स्मरण मात्र से अघ हरते हैं॥ १६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

इह परलौकिक सब विद्याएँ, चेरी बनकर तुम पद आए।
लीन रहेंगे शान्तिनाथ में, बन जायेंगे शान्तिनाथ वे॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वविद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

छाया प्रभु की नहीं पड़ेगी, अघ की कालिख शीघ्र हटेगी।
शान्तिनाथ को जो पूजेगा, रोग-शोक से पूर्ण बचेगा॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अच्छायत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

पलकें किंचित नहीं झपकती, इच्छा आकर नहीं फटकती।
निश्चलता को पाऊँ मैं भी, शान्तिनाथ के चरणों में ही॥ १९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अपक्ष्मस्पंदत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

घातिकर्म का मूल मिटा है, केवलज्ञान सुप्रकट हुआ है।
तब तो बाल न नख बढ़ते हैं, भक्त बने तो भव घटते हैं॥ २०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं समाननखकेशत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

देवोपनीतातिशय

(लय : शांतिनाथ के पद पंकज की .....)

मागध सुर आ आप देशना, बहुत दूर फैलावे,
जिसको सुनकर सुर नर तिर्यग्, अपने उर बैठावे।
शान्तिनाथ की पूजामय जो, कुल्हाड़ी को लेवे।
कर्म वृक्ष को काट शीघ्र ही, मोक्ष महल में सोहे॥ २१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

भवों-भवों के वैरी भी आ, वैर भाव को भूले।
शान्तिनाथ के दर्श करे तो, भव में क्यों वह झूले॥
अतिशय करते देव सुआकर, सब जीवों में मैत्री।
केवल तुमको मिल सकता है, आप रहे गत मैत्री॥ २२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वजन मैत्री भाव देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

आम जामफल कदलीफल भी, एक साथ फल जावे।
समवसरण जब शान्तिनाथ का, इस धरती पर आवे॥
इसी भाँति से आप भक्त को, सरस्वती अरु लक्ष्मी।
आकर के वर लेती जल्दी, बिना बुलाये सच्ची॥ २३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वर्तुफलादि शोभित तरुपरिणाम देवोपनीताशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

दर्पण जैसी निर्मल उज्ज्वल, धरती मन को भावे।
सौम्य शान्त छवि देख प्रभु की, चेतन मम हरषावे।
शान्तिनाथ की चरण धूल को, अपने शीश चढ़ावे।
भाव बनेंगे मोक्षमार्ग के, आकुलता मिट जावे॥ २४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आदर्शतल प्रतिमारत्नमयी देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

वायु चलेगी सुखदायी ही, आप जहाँ पर जावे।
सबके मन आनन्दित होवे, चरण शरण में आवे।
जो भी पूजे पादपद्म को, सौख्य शान्ति को पावे।
शान्तिनाथ का स्मरण करे तो, दरिद्रता मिट जावे॥ २५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विहरणमनुगतवायुत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

सर्व लोक आनन्द भाव से, भर जावे हे स्वामी।
आप पधारो वहाँ सभी को, सुख मिलता है नामी॥
शान्तिनाथ का भक्त लोक में, सब दुख से बच जावे।
चक्रवर्ति के स्वर्ग लोक के, सुख पा फिर शिव पावे॥ २६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वजन परमानन्दत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

काँटे कंकड़ धूल रहित भू समतल करते पूरी।
वायु जाति के देव अहो! जब, आते हैं अघचूरी॥
शान्तिनाथ का बने पुजारी, काँटों जैसे वैरी।
मित्र बनेंगे वैर तजेंगे, बजे कीर्ति की भैरी॥ २७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

मेघ जाति के देव सुउज्ज्वल, मिष्ट सुगन्धित पानी।
मन्द-मन्द बरसाते कहते, आये हैं सुखखानी॥
शान्तिनाथ के धर्मामृत में, स्नान करो हे प्राणी।
कष्ट मिटेंगे पुण्य बढ़ेंगे, पावे शिव रजधानी॥ २८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मेघकुमारकृत गन्धोदकवृष्टि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

चरण कमल के नीचे स्वर्णिम, कमल देव रचवावे।
छूते नहिं है लेकिन प्रभु तो, ऊपर से ही जावे।
शान्तिनाथ का भक्त शीघ्र ही, लक्ष्मी का बन स्वामी।
मोक्ष रमा को वर लेता है, हो जावे जगनामी॥ २९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पादन्यासेकृत पद्मानि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

धान्य आदि जब पक जाते तो झुक-झुक कर बतलाते।
त्रिभुवनपति ये आये आओ, इनसे ही सुख पावे।
भाग्यवान जो शान्तिनाथ के, चरणों आ हरषावे।
व्यन्तर ज्योतिष नहीं सतावे, सौख्य लहर लहरावे॥ ३०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं फलभारनम्रशाली देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

मेघ दलों की नहीं गर्जना, नहिं विद्युत भी चमके।
नभतल ऐसा लगता मानो, स्फटिक मणी ही दमके।
ऐसा ही हो निर्मल जीवन, शान्तिनाथ को ध्यावे।
चरण धूल को शीश चढ़ावे, बाधा सब मिट जावे॥ ३१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शरत्कालवन्निर्मल गगनत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

मधुर नाद में ढोल नंगाड़े, बज उठते हैं सारे।
श्रवण युगल में अमृत घोले, सुनते हो सुख सारे॥
शान्तिनाथ के जो गुण गावे, लोक प्रतिष्ठा पावे।
दर्शन कर ले एक बार तो, फिर न कभी घर जावे॥ ३२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं एतैतैति चतुर्निकायामर परस्पराह्वानन देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

समवसरण जब आता प्रभु का, दिशियाँ निर्मल होती।
जो भी पाता दर्शन उसकी, विधियाँ पलटे खोटी॥
शान्तिनाथ की करे अर्चना, पुण्य बढ़ेगा भारी।
पूर्व पाप सब मिट जावेंगे, छा जावे खुशहाली॥ ३३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शरन्मेघवन्निर्मल दिग्विभागत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

हीरा मोती पन्ना की भी, काँति पड़ेगी छोटी।
धर्मचक्र जब दिखे सामने, विधि न बचेगी खोटी॥
भज लेगा जो शान्तिनाथ को, धर्मचक्र को पावे।
सौ इन्द्रों से पूजा जावे, तीर्थंकर कहलावे॥ ३४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं धर्मचक्रचतुष्टय देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

आठ प्रातिहार्य

(दोहा)

चतु अंगुल ऊपर रहो, सिंहासन से आप।
देख-देखकर तृप्ति को, नहीं रहा है माप॥
बजरंगगढ़ में आय कर, नाच-नाचकर आज।
जो पूजेगा शान्ति को, अघ हो जावें साफ॥ ३५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सिंहासनप्रातिहार्यमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

झालर घण्टा बांसुरी, बाजे ढम-ढम ढोल।
नाद सुना तो काम सब, तज कर आया दौड़॥
सीरोंजी में आय कर, गा गाकर संगीत।
शान्तिनाथ को पूज ले, मिट जावे अघरीत॥ ३६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दुन्दुभिप्रातिहार्यमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

पत्र फलों से पुष्प से, लदा हुआ जो वृक्ष।
अशोक वह जहँ बैठते, धार्मिक जन अध्यक्ष॥
इषुवारा में शान्ति जो, वीतराग सर्वज्ञ।
कामदेव हैं काम को, नाश बने मर्मज्ञ॥ ३७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अशोकवृक्षप्रातिहार्यमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

चौंसठ चामर चरण में, झुककर ऊपर जाय।
कहते पूजो पाद युग, नीची गति टल जाय॥
भोजपुरी में शान्ति को, शत-शत करूँ प्रणाम।
पूजा का फल अब मिले, बचे न भव का नाम॥ ३८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुषष्टि चामर प्रातिहार्यमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

भामण्डल के सामने, सूर्य प्रभा घट जाय।
कोटि चाँद की चाँदनी, फीकी ही पड़ जाय॥
हरदा नगरी में रहे, शान्तिनाथ चक्रेश।
भाव भक्ति से जो भजे, पाप न बचते शेष॥ ३९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भामण्डल प्रातिहार्यमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

छाया पावे आपके, चरण छत्र की नाथ।
तीन छत्र यह कह रहे, सौख्य रहेगा साथ॥
ऐरानन्दन देव की, पूजा है सुख रूप।
शान्तिनगर के शान्ति का, पूजक हो शिवभूप॥ ४०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं छत्रत्रयप्रातिहार्यमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

अपने-अपने चित्त में, जो-जो संशय होय।
दिव्यध्वनि में हे प्रभो, नहीं बचेगा कोय॥
पजनारी के जो रहे, कामदेव तीर्थेश।
इनकी पूजा जो करे, बन जाये सर्वेश॥ ४१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

कल्पवृक्ष के स्वर्ग के, रंग बिरंगे फूल।
बरस कहे रे पूज ले, नहीं बचेंगे शूल॥
बीनाबारह क्षेत्र पर, खड्गासन शान्तीश।
शरण आपके चरण की, ले लो हो जगदीश॥ ४२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यमण्डित श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

अन्तरहित है अमित है, ज्ञान आपका शान्ति।
जानो जग के द्रव्य पर, नहीं रही मन क्रांति॥
शान्तिनाथ का नाम ही, शीघ्र मेटता ताप।
भक्ति करें तो कौन-सा, नहीं मिटें संताप॥ ४३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तज्ञान गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

शान्तिनाथ का दर्श गुण, अन्तर्चित आलोक।
चार घातिया नाश कर, पाया है गत शोक॥

सोलहवें तीर्थेश को, जो पूजे तज काम।
लौकिक कारज सब बने, फिर पावे शिवधाम॥ ४४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तदर्शन गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

कितना कैसा सुख रहा, तुलना उपमातीत।
शान्तिनाथ अरहंत ने, पाया बाधातीत॥
तीर्थंकर चक्रेश जो, कामदेव की मूर्ति।
तीनों संध्या में जजे, हो जावे सुखपूर्ति॥ ४५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तसुख गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

अतुल शक्ति को पा लिया, शान्तिनाथ ने जीत।
विषय वासना मोह को, गाकर अपने गीत॥
त्रयपद धारक देव ये, त्रय रोगों को नाश।
तीनों गुण को पा बने, तीन लोक के नाथ॥ ४६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तवीर्य गुणधारक श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

पंचकल्याणक के अर्घ

(लय : अति पुण्य उदय....)

है हस्तिनागपुर प्यारा, जहँ विश्वसेन नृप न्यारा।
ऐरा सुधर्म अनुरागी, जब स्वप्न देखकर जागी॥
जागी सुसपने देख माता, उठी प्रातः शयन से।
जाने सुफल तो लगा देखा, आज प्रभु को नयन से॥
तब गर्भ आये शान्ति स्वामी, इन्द्र ने उत्सव किया।
माता-पिता को पूजकर, सम्मान देकर सुख लिया॥
नौ मास तक आ देवियाँ माँ, के बहाने आपकी।
सेवा सुकरके पुण्य पाकर, कमी करती पाप की॥४७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं स्वर्गावतरणगर्भकल्याणक मण्डित श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

जो विश्वसेन के नन्दन, उन शान्तिनाथ को वन्दन।
जब जन्मे ऐरा आँगन, तब बजे सुरीले वादन॥
बज उठे सुवादन ढोल ढम ढम, शंख भेरी बाँसुरी।
सुन देव दानव मनुज नारी, भक्ति करते मनभरी।

वह जेष्ठ कृष्णा चौदशी भी, धवल उज्ज्वल हो उठी॥
प्रभु दर्श करके आपके, अज्ञान महिमा मम हटी।
वो भाग्यशाली पुण्य उसका, खिल गया था हे प्रभो॥
जिसने किया कल्याण दूजा,पा गया सब सुख विभो॥ ४८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जन्मकल्याणकमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

जब जन्म दिवस शुभ आया, वैराग्य चित्त में भाया।
तब लौकान्तिक सुर आये, यह कल्याणक मन भाये॥
मन भा गया कल्याण मेरे, उग्र-उग्र तप देखकर।
कृतकृत्य मेरा मन हुआ है, आप चरणों बैठकर॥
मैं क्या बताऊँ नाथ मुझको, आ गया आनन्द जो।
वो कह न सकता इन्द्र गुरु भी, भर गया उर नन्द जो॥
मैं आप पद में अर्घ देकर, छम छमाछम नाचता।
अब आपके चरणों बिना नहिं और कुछ भी भावता॥ ४९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं तपकल्याणकमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

जब आप आपमें पागे, तब चार घातिया भागे।
प्रभु केवलज्ञान सुपाये, तब सुर नर शीश नमाये॥
सुर शक्र राजा चक्रवर्ती, शीश रखते चरण में।
पा इन्द्र आज्ञा धनद ने आ, सिर नमा त्रय करण से॥
फिर सभामण्डप रच स्वयं के, धन्य माने जनम को।
कृतकृत्य सा बन शान्तिप्रभु से,पा लिया था धरम को॥
मैं ज्ञानकल्याणक मनाने, आप पद में आ गया।
मानो लगा मैं आज ही वा! मुक्ति वैभव पा गया॥ ५०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ज्ञानकल्याणकमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

तुम मोक्ष सदन के स्वामी, हे मुक्ति रमा जगनामी।
तुम सिद्धशिला पर राजो, मम पाप करम को नाशो॥
मम पाप सारे नाश स्वामी, सिद्धि भार्या दीजिए।
हो दोष मेरे नष्ट ऐसी, कृपा मुझ पर कीजिए॥
थी कर्म की जो शेष सत्ता, ध्यान चौथा जब किया।
डेरा उठाकर स्वयं उसने, झट पलायन तब किया॥

हे शान्ति प्रभुजी जन्म के दिन, विदा जग से हो गये।
मैंने सुना तो हर्ष से सब, रोम मेरे खिल गये॥ ५१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोक्षकल्याणकमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

१८ दोष से रहित अर्घ

(लय : वर्तमान को वर्धमान की....)

भूख न लगती इच्छा भी नहिं, कुछ भी खाने की।
मोह नहीं सो नहीं प्रयोजन, नैवज पाने की॥
आकांक्षा मिट जावे मेरी, अरजी है स्वामी।
क्षुधा रोग के जेता तुमको, नमते शिवगामी॥ ५२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं क्षुधादोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

ठंडाई से शीतल पानो से नहिं मतलब है।
देह नेह नहिं बचा तभी तो, आप न गफलत में॥
प्यास न लगती आत्मिक रस को, पीकर तुष्ट हुए।
पूजन करके शान्तिनाथजी, हम संतुष्ट हुए॥५३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पिपासादोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

ऐरा माँ के आँगन में आ जन्में तुम स्वामी।
पुनः नहीं तुम जन्मोगे सो जन्म रहित नामी॥
शान्तिनाथ जी सिद्ध शिला पर जाकर जन्मेंगे।
तभी भव्य जन अमितकाल तक इनको पूजेंगे॥५४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जन्मदोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

कुछ कम एक कोटि पूर्व तक, देह न जर-जर हो।
जरा दोष यह फटक न सकता, चाहे नर तन हो॥
उसका कारण कर्म रहा जो, नाश हुआ सारा।
शान्तिनाथ की पूजा से तो,मिटता अघ काला॥ ५५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जरादोषरहित श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

उदीरणा हो पाप कर्म की, तो ही रोगी हो।
रोग उसी को होगा जग में, होगा भोगी जो॥

रोग दोष का मूल नाश कर, स्वस्थ हुए स्वामी।
शान्तिनाथ का भक्त लोक में, होगा शिवगामी॥ ५६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रोगदोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

आयु कर्म का बन्ध करे तो, अगले भव में जा।
जन्मेगा यदि बंध न हो तो, निश्चित शिव होगा॥
त्रय पद धारक शान्तिनाथ ने, मरण रोग नाशा।
तभी शिवालय में जा करके, पाया सुख खासा॥ ५७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मरणदोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

बाह्य वस्तु से प्रीति बढ़े तो, उनकी रक्षा का।
भय लगता है संसारी को, देह सुरक्षा का॥
प्रीति नहीं है भय कषाय भी, बच नहिं पाई है।
तभी पूजने शान्तिनाथ को, जनता आई है॥ ५८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भयदोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

जिसको अब तक देख न पाया, उसको देखे तो।
अचरज होगा आप सभी, प्रत्यक्ष देखते हो॥
दोष नहीं है विस्मय तुममें, शान्तिनाथ स्वामी।
तुम सम बनने अर्घ चढ़ाऊँ, नमकर जग नामी॥५९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विस्मयदोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

अक्ष चित्त को भाता जो भी, उसमें राग करे।
इन्द्रिय मन से रहित आपको, कैसे राग वरे॥
शान्तिनाथ में रति कषाय का, नाम न शेष बचा।
पूजक के अब पाप नाम भी,ना अवशेष बचा॥ ६०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रतिदोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

राग आग भी आप भक्त को, जला न पावेगी।
राग करे जो आप चरण में, समता आवेगी॥
राग दोष यह सपने में भी, झाँक न पायेगा।
शान्तिनाथ को अर्घ चढ़ाओ, पाप न आयेगा॥ ६१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रागदोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

वैर भाव जो दुखदाई है, सोच यही नाशा।
शान्तिनाथ ने अपने में रम, पाया निज वासा॥
क्षमा भाव संतोष भाव से, द्वेष मिटाया है।
इसीलिए तो तीन लोक ने, अर्घ चढ़ाया है॥ ६२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं द्वेषदोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

निद्रा में यह गाफिल सा हो, धर्म कर्म छूटे।
आप निरन्तर जागृत रहते, आतम क्यों छूटे॥
शान्तिनाथ के चरण कमल में, अर्घ चढ़ावे जो।
मुनि बन करके मोक्षमहल में, कदम बढ़ावे वो॥ ६३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निद्रादोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

चिन्तित चीजें आप चरण की, सेवा से मिलती।
पूजा कर ले तेरी तो प्रभु, चिन्ता सब मिटती॥
शान्तिनाथ को चिन्ता नागिन, कैसे काटेगी।
आप भक्त को वह भी आकर, सुख ही बाँटेगी॥ ६४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चिन्तादोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

परमौदारिक देह आपका, प्यारा लगता है।
सप्त धातु अरु स्वेद रहित, पर मन को हरता है॥
शान्तिनाथ के दर्शन से ही, कल्मष धुल जाते।
अर्घ चढ़ा दे आकर के तो, भव को नहिं पाते॥ ६५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं स्वेददोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

मान हानि हो जावे यदि तो, खेद खिन्न होता।
करे प्रशंसा कोई तो हा! पाप बीज बोता॥
शान्तिनाथ जी खेद भाव से, दूर रहेंगे जी।
पूजा कर ले घर में सुख के, पूर भरेंगे जी॥ ६६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं खेददोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

इष्ट वस्तु का वियोग होवे, शोक बरसता है।
मन भावन को प्राप्त करे तो, साहस बढ़ता है॥
शान्तिनाथ की पूजा में जो, नाचे गावेगा।
दर्शन कर ले तो क्या उसको, कोई भावेगा॥ ६७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शोकदोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

अहंकार में फूल गया जो, भव में डूबेगा।
मद ना छोड़ेगा तो हा! हा!!, वृष से ऊबेगा॥
शान्तिनाथ की आराधन से, भवसागर सूखे।
मद नाशक की पूजा से ही, पाप पंक सूखे॥ ६८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मददोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

मदिरा पीकर पागल होता, मूर्च्छित होता है।
ऐसे ही यह मोह वशी हो, विवेक खोता है॥
मोह फँसा है शान्तिनाथ के, चंगुल आ करके।
पूजा कर ले सुख पायेगा, शिव में जा करके॥ ६९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोहदोषरहित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

(ज्ञानोदय)

चक्रवर्ति होकर भी तुमने, चक्कर उसका छोड़ दिया।
कामदेव होकर भी ओहो, काम भाव को तोड़ दिया॥
तीर्थंकर बन करके स्वामी, समवसरण से दूर हुए।
शान्तिनाथ प्रभु शान्तिप्रभ से, शिव में जा सुख पूर हुए॥

(दोहा)

कुन्दप्रभ से शान्ति ने, पूर्ण किया सब काम।
दोनों को मैं अर्घ दूँ, चाहूँ निज का धाम॥७०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय कुन्दप्रभकूटेभ्यो नमः अर्घ्यं .....।

जल में थल में विद्याधर के, गृह गाँवों में नगरों में।
गुफा कन्दरा गर्भगृहों में, गिरि पर्वत के शिखरों में॥
जहाँ कहीं भी खड्गासन से, पद्मासन से शोभित है।
शान्तिनाथ प्रतिबिम्ब सभी में, चित्त हमारा मोहित है॥

उन सबको मैं हाथ जोड़कर, सिर पर रखकर मन वच से।
काया से भी करूँ वन्दना, मिट जावे मम अघतम ये॥
और अर्घ ले सबके चरणों, भक्तिभाव से भेंट करूँ।
फल में स्वामी कर्म शान्त कर, शिव ललना से भेंट सकूँ॥ ७१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं ....।

पूर्णार्घ्य

(घत्ता)

हे शान्ति जिनेशा, तुम चक्रेशा, कामदेव का पद पाया।
तुमने जग छोड़ा, मन को मोड़ा, विषय भोग से निज ध्याया॥
मैं भव से बचने, शिव में रचने, तव चरणों में आया हूँ।
ये अर्घ सुलेकर, पद में देकर, पूजा करने आया हूँ॥ ७२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः पूर्णार्घं .....।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं जगच्छान्तिकराय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः।

(१०८ बार जाप करें)

जयमाला

शान्तिनाथ भगवान की, गुणमाला सुखकेतु।
भक्तिभाव से मैं कहूँ, शान्ति करन के हेतु॥१॥

(ज्ञानोदय)

नगर हस्तिनापुर है न्यारा, शान्तिनाथ ने जन्म लिया।
विश्वसेन पितु ऐरा माँ की, गोदी को कृतकृत्य किया॥
यहीं हुए थे त्रय कल्याणक, जन जन के हितकारक हैं।
चौथा नंद्यावर्त वृक्ष के, नीचे जो सुखदायक है॥ २॥

चक्रायुध जो लघु भ्राता ने, गणधर पद को पाया था।
पंचम सम्मेदाचल गिरि पर, पंचम गति को पाया था॥
दर्पण में निज रूप देखकर, एक वृद्ध इक यौवन का।
भरा चित्त वैराग्य भाव से, रस न बचा था जीवन का॥ ३॥

षट् खण्डों को कोटि अठारह, घोड़ों को झट छोड़ दिया।
सहस छियानव रानी गज लख, चौरासी मुख मोड़ दिया॥
सोलह वर्षों के तप ने ही, चार घातिया सोख लिये।
जिससे केवलज्ञान सुपाया, बन्धन सारे रोक दिये॥ ४॥

सहस रहे चौबीस शतक नौ, वर्ष चौरासी ऊपर वा।
दिव्य देशना देकर हमको, पहुँचे मोक्षमहल में जा॥
शान्तिनाथ के बाद सदा ही, धर्म रहा यह शाश्वत है।
इसीलिए तो पूजा करते, हम सब प्रभु की अब तक है॥ ५॥

इक किन्नर ने मथुरा में आ, व्याधि विषम जब फैलाई।
दुख से पीड़ित होकर हा! हा!! जनता सारी भरमाई॥
उपाय करके राजा ने भी, हिम्मत अपनी जब हारी।
तभी सुनो इक सुमति सेठ ने, युक्ति पूछकर दुखहारी॥६॥

पूजा की थी शान्तिनाथ की, सोलह दिन तक भक्ति बढ़ा।
व्याधि मिटी थी क्लेश मिटा था, वृद्ध हुआ था हर्ष महा॥
अप्पा साहब वर्धमान जी, मंत्री के सह आये थे।
रामटेक में मंत्री ने जब, जिन दर्शन नहिं पाये थे॥ ७॥

भोजन त्यागा सो राजा ने, खोज कराई जिनवर की।
पता लगा जब घनी झाड़ियाँ, ढके हुए हैं प्रभुवर जी॥
मंत्री ने झट शान्तिनाथ को, निकाल दर्शन पाये थे।
मंदिर बनवा महामहोत्सव, यहाँ बहुत करवाये थे॥ ८॥

सपना आया एक व्यक्ति को, देख खेत में जा करके।
भूगत है श्री शान्तिनाथजी, निकाल उनको पा करके॥
वह भी उठकर सुबह-सुबह ही, हाथ कुदाली ले करके।
पहुँच खेत पर खोदा तो वा! बिम्ब देख खुश हो करके॥ ९॥

लगा उठाने प्रतिमा को तो, हिला नहीं वह पाया था।
मात्र देखता रहा बिम्ब को, विस्मय ही मन आया था॥
लौट नगर में उसने सबको, पूरी बात बताई थी।
सब जन पहुँचे लेकिन प्रज्ञा, काम नहीं कर पाई थी॥१०॥

सबने मिलकर कोशिश की पर, प्रभु तो टस से मस न हुए।
वाणी आई नभ से तब हे, भव्यो क्यों तुम विकल हुए॥

कच्चा धागा लाकर प्रतिमा, शीघ्र उठाओ आप सभी।
उठ जायेंगे शान्ति प्रभु पर, छू ना लेना भूल कभी॥११॥

श्रावक जन ने बिम्ब निकाला, दर्श कराये जन जन को।
बिना परिश्रम गगन मार्ग से, चला बिम्ब क्यों अचरज हो॥
रुका पनागर के बाहर आ, मंदिर सबने बनवाया।
अद्यावधि भी शान्तिनाथ के, दर्शन कर मन हरषाया॥१२॥

क्षेत्र पनागर के स्वामी श्री, शान्तिनाथ का प्यारा ये।
कहा गया इतिहास लोक में, अतिशय इनका न्यारा है॥
क्षेत्र बहोरीबन्द जहाँ श्री, शान्तिनाथ खड्गासन है।
अतिशय युत है सौम्य शान्त है, मूर्ति बड़ी आकर्षक है॥१३॥

एक बार औरंगजेब ने, टाँकी ले इस प्रतिमा को।
खण्डित करना चाहा लेकिन दुग्धधार ने प्रतिभा को॥
प्रकट किया था, पूज्य प्रभु की, नृप बेचारा हार गया।
मधुमक्खी के झुण्डों ने भी, उसको हा! बेहाल किया॥१४॥

इषुवारा के जिनमंदिर पर, भारी विद्युत-पात हुआ।
शान्तिनाथ का कुछ ना बिगड़ा, नहीं किसी को ताप हुआ॥
धर्मी था इक सेठ बारहा, नगरी से नित जाता था।
बीना में भी बंजी करके, फल में धन भी पाता था॥१५॥

इक पत्थर से ठोकर लगती, रोज-रोज जब उसको तो।
सपना आया तुझको ठोकर, लगती जाकर उस ही को॥
खोद शान्ति प्रभु तुझे मिलेंगे, दर्शन पाकर आनन्द से।
विराजमान कर मंदिर बनवा, हो जावेगा नन्दन में॥१६॥

जब ले जावे भूल कभी भी, पीछे मुड़कर देख नहीं।
तीन दिवस तक खोदा तब तो, सपना निकला सही-सही॥
सोलहवें श्री तीर्थंकर की, प्रतिमा उसने पाई थी।
दर्शन करके भूरी-भूरी, महिमा उसने गाई थी॥१७॥

लाते लाते कौतुक वश हो, पीछे को जब देख लिया।
सो बीना में मंदिर बनवा, अपना मस्तक टेक दिया॥
आदि-आदि है कई जगह पर, शान्तिनाथ के जैसे जो।
चमत्कार कहने की ताकत, मुझ लघु धी में कैसे हो॥१८॥

सच पूछो तो शान्तिनाथ की, पूजा से क्या मिलता है।
सुरगुरुवर भी कह न सकेगा, जितना जो भी फलता है॥
घासफूस-सा शक्री चक्री, धन-वैभव सम्मान मिले।
आधि-व्याधि दुख-शोक कलुषता, पाप ताप संताप टले॥१९॥

शत्रु वर्ग की भूत प्रेत की, बाधाएँ टल जाती है।
मंगल शनि कृत पीड़ाएँ भी, सुख में ही ढल जाती है॥
और कहें क्या दर्श मात्र से, अपार जो भव सागर है।
शीघ्र सूखकर मात्र बचेगा, अञ्जलि भर दुखसागर ये॥ २०॥

भुक्ति मिले भरपूर लोक में, सुख ही सुख को पायेगा।
और बाद में मुनि बनकर जब, आतम ध्यान लगायेगा॥
मुक्ति रमा आ उसको खुश हो, वर लेगी पतिमान अहो।
उससे जो सुख पावे उसको, कह सकता है कौन कहो॥ २१॥

नगर बघेरा भोजपुरी में, अहारजी में, हरदा में।
तथा जहाँ भी शांतिनाथ हैं, उनमें मेरी श्रद्धा हैं॥
उन सबको मैं शीश नमाकर, कोटि कोटिशः नमन करूँ।
भव बंधन कट जावे मेरे, आप मार्ग में गमन करूँ॥ २२॥

(घत्ता)

हे शान्ति मुनीशा, त्रिभुवन ईशा, तीन लोक में शान्ति करो।
मम दुःख नाश दो, मोक्ष पास हो, भव्य जनों की क्लान्ति हरो॥
तुम जयमाला हो, सुखशाला हो, अर्घ चढ़ाऊँ आज चरण।
अब मुझको तारो, भाव सुधारो, भव-भव में हो आप शरण॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं .....।

आशीर्वाद

शान्तिनाथ की अर्चना, तीनों सन्ध्या काल।
जो करता है भाव से, खुल जाता शिव द्वार॥

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

प्रशस्ति

चौथी तिथि शनिवार रहा है, श्रावण का शुभ माह कहा।
शुक्ल पक्ष है वासुपूज्य जिन, प्रभु का मंदिर खास यहाँ॥
नगर रहा घाटोल जहाँ पर, दूजा मंदिर अनुपम है।
आदिनाथ का रहा अहिंसा, मंदिर तीजा सुखकर है॥

रामटेक में विद्यासागर, सूरीश्वर ने आज वहाँ।
दीक्षा दी चौबीस दिगम्बर, जो दुर्लभ है बहुत यहाँ॥
इस ही दिन में शान्तिनाथ का, विधान प्यारा पूर्ण हुआ।
भक्ति भाव से कर लो समझो, उसके अघ का चूर्ण हुआ॥

तीन लोक में सौख्य शान्ति हो, सब जीवों को शान्ति मिले।
आपद विपदा आधि-व्याधि के, साथ सभी की भ्रान्ति मिटे॥
इसी भाव से विवेकसिंधु की, शिष्या छोटी पंचम जो।
वो ही रच कर करे प्रार्थना, मेरी भी गति पंचम हो॥

श्री पार्श्वनाथ विधान

श्री पार्श्वनाथ विधान

(बिजौलिया क्षेत्र का)

विन्ध्यावल्ली पार्श्व के, गुण गाऊँ अविराम।
पंच कल्याणक पूज्य हो, पाया शिव का धाम॥

(ज्ञानोदय)

उपसर्गों को जीता जिनने, दस भव तक भी समता से।
उन पारस के चरणों के प्रति, अब तक मेरी ममता है॥
उनकी पूजा विधान करने, लिखूँ पीठिका दस भव की।
हे प्रभु तेरे गुण गाने से, मिटे आपदा भव-भव की॥ १॥

कमठ देव ने इक दिन श्री मरुभूति भ्रात पर एक शिला।
पटकी थी सो उससे मरकर, हाथी भव में जनम मिला॥
मुनिवर श्री अरविन्द पूज्य के, उपदेशों से बोधित हो।
अणुव्रत धारण किए भाव से, धर्मभाव अनुरोधित हो॥ २॥

कमठ बना अहि उसने गज को, काट लिया सो मरण हुआ।
कमठ गया था नरक,व्रती ने, बारम सुर में जनम लिया॥
अग्निवेग नृप बनकर मुनि हो, आत्मध्यान में लीन हुए।
नारक आकर भील बना तो, मुनि के तन में तीर दिए॥ ३॥

वैर भाव था इक में, इक में, सम भावों का स्रोत बहा।
तभी एक मर बना नारकी, दूजे को सुर सौध कहा॥
पहला आकर शेर बना तो, दूजे चक्री भूप बने।
साधु बना जब नृपवर तो, हा! सिंहराज ने प्राण हने॥ ४॥

पापी फिर से नरक गया अरु, मुनिवर शुभ से स्वर्ग गए।
स्वर्ग सुखों को भोग पधारे, आनन्द धरणी पाल हुए॥
षट्खण्डों को छोड़ भूप ने, मुनि के व्रत को ग्रहण किया।
और सुनो उस पापी ने आ,अजगर बनकर निगल लिया॥ ५॥

फिर भी ऋषि के उर में किंचित्, कोप भाव नहिं जाग सका।
भेदज्ञान से तन-चेतन के, तन का सारा राग गया॥

तभी उन्होंने समाधिपूर्वक, मरण किया सो सुर पाया।
और कमठ ने मुनि हत्या से, श्वभ्र सिन्धु में दुख पाया॥ ६॥

वही देव आ सोलह सपने, देकर वामा माता को।
बनारसी के अश्वसेन नृप, पुत्र बने शिवदाता औ॥
गर्भ-जन्म तप कल्याणक को, पाकर शिव की शिक्षा दी।
इन्द्र सुरासुर से पूजित हो, बालपने में दीक्षा ली॥ ७॥

और पधारे इसी क्षेत्र पर, निज आतम को ध्याते थे।
कर्म नाश की ठान धन्य हो, अपने में रम जाते थे॥
तथा मूर्ख वह कमठ जीव आ, पारस प्रभु का बन नाना।
तापस बनकर मिथ्यातम से, मरकर ज्योतिष पद पाया॥ ८॥

तभी सुनो उस ज्योतिस्सुर ने, आकर पानी बरषाया।
सात दिवस तक घोर उपद्रव, करके भी हा! हरषाया॥
फिर भी प्रभुवर पलभर को भी, च्युत न हुए सो हार गया।
तथा कर्म भी नष्ट हुए सो, कमठ पार्श्व के पाँव पड़ा॥ ९॥

नाग इन्द्र ने पार्श्वनाथ पर, अपने फण फैलाए थे।
पद्मावति देवी ने आकर, प्रभुवर के गुण गाए थे॥
तभी कमठ कृत उपद्रवों का, अन्त हुआ था पार हुआ।
दस भव का वह वैरपना भी,आज यहाँ निस्सार हुआ॥ १०॥

समवसरण भी लगा जहाँ पर, दिव्य देशना पायी थी।
जिसको पाकर मिथ्यामति की, प्रज्ञा भी विलसायी थी॥
उसी क्षेत्र श्री विन्ध्यावलि की, पूजन करता भाव भरी।
बिना अर्चना मानव के क्या, रहा लोक में सार कहीं॥ ११॥

नमस्कार कर करूँ वन्दना, बार-बार मैं नमन करूँ।
फल में स्वामी मात्र आपके,पथ पर ही नित गमन करूँ॥
आप चरण को छोड़ कभी भी, और कहीं नहिं जाऊँ मैं।
श्वास रहे इस तन में तब तक, आप शरण को पाऊँ मैं॥ १२॥

विधान प्रारम्भ

स्थापना

(ज्ञानोदय)

ज्ञान महोत्सव जहाँ हुआ था, उसी क्षेत्र के पारस का।
स्थापन करता सन्निधि करता, आह्वानन भव तारक का॥
आओ आओ आओ स्वामी, हृदय कमल पर बिठलाऊँ।
अवसर पाया भाग्य खुला जो, पूजन करके हरषाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

ले जल के कलशा,चेतन हरषा, सुख ही बरषा पूजन से।
सब पाप धुलेंगे, सौख्य मिलेंगे,भाग्य खिलेंगे अर्चन से॥
हे पारस देवा, पाते मेवा, करते सेवा जो पद में।
वे भव से तरते शिव को वरते, सुख से भरते पल-भर में॥

ॐह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं ....।

मैं लेकर चन्दन काटो बन्धन हे शिव नन्दन अरज करूँ।
मैं पाप मिटाने सुख को पाने, महिमा गाने शरण गहूँ॥
हे पारस देवा.....॥

ॐह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसार-ताप विनाशनाय चंदनं ....।

जो अक्षत लावे पद में आवे चित्त लगावे पूज करे।
पा शाश्वतपन को निजचेतन को, अक्षयधन को सौख्य वरे॥
हे पारस देवा.....॥

ॐह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् ....।

ले पुष्प सुगंधित त्रिभुवन वंदित हे सुख मण्डित चरण धरूँ।
मम काम मिटा दो, पाप हटा दो, ज्ञान बढ़ा दो नमन करूँ॥
हे पारस देवा.....॥

ॐह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं ....।

ले मीठे नैवज, आप चरण भज, बनने को अज चरण भजूँ।
हे क्षुधा विनाशक, पुण्य प्रकाशक, त्रिभुवन शासक शरण चहूँ॥
हे पारस देवा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ....।

मैं दीप चढ़ाऊँ पाप हटाऊँ ज्ञान सुपाऊँ चरण पड़ूँ।
हे शिव पथ नेता, मार्ग प्रणेता, मोह विजेता शरण गहूँ॥
हे पारस देवा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ....।

ले धूप दशांगी हे सुखसंगी, पाप विभंगी जो पूजे।
वो कर्म जलावे, निज को पावे, भव से जावे तुम्हें भजे॥
हे पारस देवा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

जो लौंग सुपारी भरकर थाली हे सुखकारी पूज करे।
वे शिव में जावे लौट न आवे, निज को पावे, ताप हरे॥
हे पारस देवा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं ....।

ले चन्दन पानी हे सुखखानी, अमृत वाणी पूज्य रही।
हे ज्ञान प्रभाकर, शीश झुकाकर, अर्घ बनाकर पूज करी॥
हे पारस देवा.....॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....।

(दोहा)

अष्टक से मैं पार्श्व को, पूजूँ आठों याम।
अंग नमाकर आठ ही, पाऊँ अष्टम धाम॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

जन्मकृत दस अतिशय के अर्घ

(ज्ञानोदय)

कर्मोदय से सप्तधातु के, तन में आता स्वेद सदा।
प्रभु के परमौदारिक तन में, आ सकता है स्वेद कहाँ॥
मिथ्यातममय शनि भागेगा, पार्श्वनाथ की अर्चा से।
पार्श्व भक्त के शनिग्रह की तो, मिट जायेगी चर्चा रे॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं नि:स्वेदत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

नव द्वारों से मल बहता है, सब संसारी प्राणी के।
नहीं बचा है मल प्रभुवर के, तभी पूजते प्राणी ये॥
मंगल ग्रह भी मंगल करने, आ जावेगा आपद में।
भक्त बनेगा पार्श्वनाथ का, जो भी आपद सम्पद में॥ २॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं निर्मलत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

बलशाली अरु महामल्ल हो, हार क्षणों में खा जाता।
उत्तम संहननधारी प्रभु की, पूजा में जो रम जाता॥
मोह राहु भी मिट जावे तब, राहु देव की बात कहाँ।
पूजे आकर पार्श्व चरण तो, राह दिखावे आय यहाँ॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं वज्रवृषभ नाराचसंहनन जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

तीन लोक में आप सरीखा, रूप कहीं क्या मिल पावे।
जो भी देखे जब भी देखे, मात्र देखता रह जावे॥
केतु ग्रहों की बात कहें क्या, क्रोध केतु भी नश जावे।
पुण्य केतु लहराये घर जो, भक्त पार्श्व का बन जावे॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं समचतुस्रसंस्थान जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

आप देह में क्षीर सिन्धु के, पानी सम ही रक्त रहा।
धवल भाव है तभी हमारा, चित्त चरण आसक्त रहा॥
गुरु ग्रह भी तो भाग खड़ा हो, या आ चरणों नमन करे।
भक्ति करे जो पार्श्वनाथ की, दुख भी उसके गमन करे॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्षीर गौर रुधिरत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

एक-एक औ अंग पार्श्व का, आकर्षक है सुन्दर है।
फिर भी काम न उपजे कारण, विरागता का मन्दर है॥
सूर्य ग्रहों सम पूजा जावे, पार्श्वनाथ की पूजन से।
क्या कर पावे ग्रह बेचारे, डर जावे गुण कूजन[१] से॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौरूप्य जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

देह सुरभि से त्रिभुवन के सब, सुरभिवान जो द्रव्य रहे।
गन्ध रहित हो पार्श्वनाथ की, शरण गहे तो श्रव्य कहे॥
शुक्र, शुक्र कर देगा उसका, विन्ध्यावलि में आकर जो।
भज लेगा प्रभु पार्श्वनाथ को, पा जावे गुण सागर को॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौगन्ध्य जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

स्वस्तिक कमल कलश आदिक जो, एक सहस शुभ लक्षण है।
इन लक्षण से शोभित प्रभु की, पूजा अघ की भक्षक है॥
भूत प्रेत क्या दुख दे पाये, वे भी आकर भक्त बने।
झूम-झूम कर पार्श्वनाथ की, भक्ति करे अनुरक्त रहे॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौलक्षण्य जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

अतुल अमित बल जैसा तुममें,नहीं किसी में मिल पावे।
पार्श्व चरण के पूजक को भी, वैसा ही बल मिल जावे॥
नहीं हटेगा पीछे हार न, खायेगा तुम भक्त कभी।
आगे होगा सबसे आगे, लौकिक सुख भी मिले सभी॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अप्रमितवीर्य जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

१. कीर्तन

षट् रस मिश्रित छप्पन व्यञ्जन, सब फीके पड़ जायेंगे।
अमृतमय तव वचन सुने जो, रोग-शोक नश जायेंगे॥
चन्द्र चाँदनी सम ही जग को, शान्ति प्रदाता बन जावे।
पार्श्व आपके चरण भजे तो, शिव के सुख भी वह पावे॥ १०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं प्रियहितवादित्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

(आला) (लय-शांतिनाथ मुख शशि.....)

सौ योजन तक सात ईतियाँ, मिट जाती है सभी भीतियाँ।
अनावृष्टि नहिं बहुत वृष्टि हो, पार्श्व भक्त के सौख्य सृष्टि हो॥ ११॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गव्यूतिशय चतुष्टय सुभिक्षत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

नभतल में हो गमन आपका, देख नाश हो शीघ्र पाप का।
पार्श्व सभी के कष्ट मिटाते, अतिशय सबको देव बताते॥ १२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गगनगमनत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

वर्षों-वर्षों भूख न लगती, नहीं देह की आभा घटती।
भोजन बिन भी तृप्त आप है, भक्त रहे हम सभी आपके॥ १३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं भुक्त्यभाव जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

प्राणी की हिंसा नहिं होगी, कभी न होगा अब वह रोगी।
जो पारस का स्पर्श करेगा, कंचन सम वह चमक उठेगा॥ १४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अप्राणिवधत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमःअर्घ्यं ....।

कौन सता पायेगा तुमको, सता दिया है कर्मों को जो।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, उपसर्गों से रहित सुनेता॥ १५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं उपसर्गाभाव जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

आनन तेरा सबको दिखता, दर्श मात्र से संशय भगता।
इक मुख है पर चार दिखेंगे, पारस अतिशय सभी भजेंगे॥ १६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं चतुर्मुखत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

लोक-अलौकिक सारी विद्या, आय विराजी बने अवद्या।
मिटे अविद्या सुमरण कर ले, पार्श्व चरण में सिर को धर ले॥ १७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सर्वविद्येश्वरत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

छाया कैसे पड़े आपकी, नहीं बची है गंध पाप की।
पूजा कर ले तू पारस की, छाया ना हो मिथ्यातम की॥ १८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अच्छायत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

नेत्रों की टिमकार नहीं है, सभी जानते बात सही है।
पार्श्वनाथ के चरण पड़ेगा, इच्छाओं का दमन करेगा॥ १९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अपक्ष्मस्पंदत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

नहीं बढ़ेंगे केश कभी भी, देव मुकुट भी झुके तभी जी।
अतिशय दसवाँ घाति नाश का, कहा गया है पार्श्वनाथ का॥ २०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं समाननखकेशत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

(लय : कहाँ गए चक्री जिन...)

दिव्य देशना सुनकर स्वामी, पशु भी सुलझे हैं।
प्रभु चरणों की पूजा कर ले, तो क्यों उलझेंगे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ २१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

सब जीवों में मैत्री उपजी, तब तो पूजे हैं।
तीन लोक के प्राणीगण आ, चरणों रीझे हैं॥

पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ २२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सर्वजन-मैत्री-भाव देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

आम जामफल आदिक सब ही साथ फलित होंगे।
आप पधारे जहाँ-वहाँ पर, पाप दलित होंगे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ २३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सर्वर्तुफलादि-शोभित-तरु परिणाम देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

दर्पण सम हो जाती धरती, रत्नों सी लागे।
समवसरण जब आता तेरा, विपदा सब भागे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ २४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयी देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

योग्य चलेगी पवन जहाँ पर, आप पधारेंगे।
पाप हटेंगे जिसके उर में, आप विराजेंगे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ २५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं विहरण-मनुगत-वायुत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

पापी से हो पापी तो भी, हर्षित होवेंगे।
पूजक के सब कल्मष जल्दी, मर्दित होवेंगे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ २६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सर्वजन-परमानन्दत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

काँटे कंकर धूल आदि भी, नाहीं बचते हैं।
आप गमन से भक्त जनों के, पातक मिटते हैं॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ २७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं वायुकुमारोपशमित धूलि-कंटकादि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

रिमझिम-रिमझिम गंधोदक को, सुर बरसाते हैं।
आप दरश से दुखियों के भी, मन हरषाते हैं॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ २८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मेघकुमारकृत गन्धोदकवृष्टि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

पाद रखेंगे जहाँ कमल की, रचना करते हैं।
पंकज सम ही खिले रहे जो पूजन करते हैं॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ २९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पादन्यासेकृत पद्मानि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

फल लद जाते वृक्षों पर तब, नम्रनीत होते।
पूजा करने वाले तेरी, सौख्य बीज बोते॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ ३०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फलभारनम्रशालि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

शरदकाल सम निर्मल नभ हो, समवसरण आवे।
आप चरण की पूजा कर ले, आपद भग जावे॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ ३१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं शरन्कालवन्निर्मल गगनत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

आओ-आओ कहकर मानो, दुन्दुभि बाजत है।
महा महोत्सव प्रतिदिन उसके, घट में राजत है॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ ३२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं एतैतैतिचतुर्निकायामर परस्पराह्वान देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

सभी दिशाएँ स्वच्छ सुपावन, मन को भाती हैं।
आप दरश से जन-जन के दिल, खुशियाँ छाती हैं॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ ३३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं शरन् मेघवन्निर्मल दिग्विभागत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमःअर्घ्यं ....।

झग-झग करता धर्म चक्र जो, आगे चलता है।
आप चरण की आराधन से,किस्मत खिलता है॥
पार्श्वनाथ का अर्चक जग में, चर्चित होगा रे।
रत्नत्रय को पाकर वह भी, अर्चित होगा रे॥ ३४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं धर्मचक्रचतुष्टय देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

(अतिपुण्य उदय मम आयो लय में पढ़ें)

जिस वृक्ष तले जा बैठे, प्रभु निज आतम में पैठे।
वह तरु अशोक हो जाता, फल फूलों से भर जाता॥
फल फूल से भर जाय तरु जब, पार्श्व की हो निकटता।
सब शोक मिटता जीव का, सुख शान्ति की हो प्रकटता॥
हे नील मणिमय पत्र न्यारे, सघन छाया शोभती।
जो दर्शकों के चित्त को क्षण, मात्र में ही मोहती॥
जो अर्घ उत्तम थाल भरकर, आप पद को पूजता।
वो कर्म कालुष मेट करके, जन्म से नहिं जूझता॥ ३५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अशोक वृक्ष प्रातिहार्य मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

सुर विविध पुष्प बरषाते, तब सबके मन हरषाते।
हो डण्ठल सबके नीचे, सब आ जाते हैं रीझे॥
सब आय रीझे आप पद में, भूल जाते भोग को।
बस पार्श्व उनके हृदय बैठे, फिर न पावे शोक को॥
सुन बरसते ये उग रहे ज्यों, फूल जग से कह रहे।
जो भव्य आया आप शरणा, बन्ध उसके कट गए॥
मैं काम तजकर सर्व जग के, ईश पद में आ गया।
मानों दरश से नाथ मैं षट्खण्ड वैभव पा गया॥ ३६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सुरपुष्पवृष्टि प्रातिहार्यमण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

ये चामर झुक-झुक कहते, प्रभु पार्श्व पाप को हरते।
सो चरण झुका दे माथा, बन जाय धरम का ध्याता॥
तू धर्म ध्याता बन सकेगा, नम गया यदि पाद में।
तू कीर्ति पाकर शीघ्र पहुँचे, मोक्ष पुर के पास में॥
जैसे सुनो ये चँवर चौंसठ, झुक रहे फिर उठ रहे।
वैसे सुपूजा जैन को वे, ऊर्ध्वगामी बन गए॥
जो अर्घ लेकर छम-छमा-छम नाचता है पूजता।
वो भोग इच्छा त्याग करके, मुक्ति में ही रीझता॥ ३७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं चतुःषष्ठी चामर प्रातिहार्य मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

तव भामण्डल सुखकारी, है महिमा जग में न्यारी।
यह प्रातिहार्य जगनामी, ये पार्श्व रहे सुखदानी॥
ये पार्श्व सबको सौख्य देकर, सब दुखों को नाशते।
जो पूजता है आप पद उसके सभी अघ भागते॥
है देह की यह श्रेष्ठ आभा, सात भव इसमें दिखे।
जब भव्य आकर अर्चना कर, आपके चरणों झुके॥
यह आप जैसे तीर्थकर ही, पा सकेंगे लोक में।
हे ईश! तेरी पूज कर मैं, बच सकूं भव भोग से॥ ३८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं भामण्डल प्रातिहार्यमण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

जब केवलज्ञान उपजता, त्रयलोक सौख्य से भरता।
सुर ढम-ढम ढोल बजावे, हम हर्ष-हर्ष गुण गावे॥
हम हरष-हरष गुण गाय स्वामी, तनन तन-तन ताल दे।
झालर बजाकर गीत गाकर, पद झुकाते भाल ये॥
साढ़े सुबारह कोटि बाजे, एक स्वर में बज रहे।
कह रहे हैं मोक्षपथ के, पार्श्व नेता यह रहे॥
सो भव्य तू भी शीघ्र आकर, मार्ग इनसे पूछ ले।
तू चाहता यदि अचल सुख तो, पाद इनके पूज ले॥ ३९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं दुन्दुभि प्रातिहार्य मण्डितश्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

त्रय धवल छत्र तव राजे, तुम तीन लोक सिरताजे।
ये करे सूचना स्वामी, प्रभु पार्श्व रहे गतमानी॥
तुम मान माया लोभ से भी, गत हुए सो शक्र भी।
आ पूजते गणनाथ मुनिवर, अर्चते शत इन्द्र भी॥
जो छत्र की है धवलता बतला सुधवलिम भाव को।
कह रही है पार्श्व पहुँचे, शुद्ध आतम पास औ॥
सो भव्य तू भी शीघ्र ही भव, छोड़ कलुषित भाव को।
तू पूज्य पद को पूज कर ही, पा सके शिवधाम को॥ ४०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं छत्रत्रय प्रातिहार्य मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

प्रभु दिव्य देशना प्यारी, जब खिरी पूर्ण सुखकारी।
तब गणधर गुरु ने झेली, पा बनी सुजनता चेली॥
बनकर सुजनता आप चेली, समवसरण में आ गई।
सुन आप वाणी भव्य जन के, चित्त को वा!भा गयी॥
सुर मनुज प्रभु गण होय गदगद्, चरण में अर्पित हुए।
वे व्रत सुसंयम धार करके, शील से सज्जित हुए॥
हे दिव्यध्वनि के नाथ पारस, दरश कर मैं धन्य हूँ।
शुभ अर्घ से पद पूज करके, आज मैं कृतकृत्य हूँ॥ ४१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं दिव्यध्वनि प्रातिहार्य मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

यह सिंहासन है ऊँचा, जो करता सबको नीचा।
रच दिया धनद ने प्यारा, यह प्रातिहार्य सुखकारा॥
सुखकार है यह स्वर्ण निर्मित,रत्न से झगझग करे।
श्री पार्श्वस्वामी चार अंगुल, अधर राजित मद हरे॥
निज पीठ धारा सिंह ने सो, नाम सिंहासन बना।
हे पार्श्व!अनुपम आपको लख, चित्त मेरा तर बना॥
ये कोष्ठ बारह चार दिशि में, सोहते मन मोहते।
जो भव्य आठों याम पूजें, भव भ्रमण को खोवते॥ ४२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सिंहासन प्रातिहार्यमण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

अनंत चतुष्टय के अर्घ

अन्त रहित सब द्रव्य गुणों को, पर्यायों को जानो।
अमित ज्ञान है अमित काल तक, शाश्वत अक्षत मानो॥ ४३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अनन्तज्ञान गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

अनाकार उपयोग नित्य ही, आलोकित है तुममें।
अनन्त सुदर्शन नाम इसी का, हो जावे अब हममें॥ ४४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अनन्तदर्शन गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

पंचेन्द्रिय की नहीं अपेक्षा, नहीं सौख्य की इच्छा।
अवलम्बन ना बाह्य वस्तु का, फिर भी सुख है अच्छा॥ ४५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अनन्तसुख गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

सबको जानो प्रतिपल नूतन, पर्यायें हैं सबकी।
नहीं थको नहिं शक्ति क्षीण हो, यही वीर्य है जिन जी॥ ४६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अनन्तवीर्य गुणधारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

(नरेन्द्र छन्द)

पंचकल्याणक के अर्घ

कृष्ण पक्ष की दूजी तिथि वैशाख मास की आयी।
पारस प्रभु जी गर्भ पधारे, अद्भुत खुशियाँ छायी॥ ४७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गर्भ कल्याणक मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

पौष कृष्ण की ग्यारस के दिन, वामानन्दन जन्मे।
अश्वसेन नृप बाँट बधाई, मन-ही-मन में हरषे॥ ४८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं जन्म कल्याणक मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

जन्म दिवस में जातिस्मरण से, विरत भाव मन आया।
कल्याणक को देख मुझे तो, मात्र पार्श्व पथ भाया॥ ४९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं तपःकल्याणक मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

चैत चौथ वह काली थी पर, दिव्य दीप जब पाया।
समवसरण में दर्श किए तो, अन्धकार विनशाया॥ ५०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ज्ञान कल्याणक मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

सावन शुक्ला सातम के दिन, शेष कर्म भी नाशे।
सम्मेदाचल अमर क्षेत्र से, सिद्धालय सुख चाखे॥ ५१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मोक्ष कल्याणक मण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

(दोहा)

क्षुधा दोष का नाम भी, मिटा आपके नाथ।
क्षुधा मिटाने मैं प्रभु, चरण नमाऊँ माथ॥
नाच-नाच कर पार्श्व को, जो पूजेगा आज।
लौकिक सम्पद प्राप्त हो, मिले मोक्ष का राज॥ ५२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्षुधादोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

प्यास लगेगी क्यों तुम्हें, आतम रस से तृप्त।
हुए तभी तो आपकी, अर्चा करती तृप्त॥
ठुमक-ठुमक कर ताल दे, जो पूजेगा पार्श्व।
आपद पास न आ सके,जब तक होवे श्वांस॥ ५३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पिपासादोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

आधि-व्याधि से नित्य ही, पीड़ित रहता लोक।
औषधि खा-खा थक गए, पर न मिटा है शोक॥
जन्म-जरा के रोग से, पूर्ण बचे हैं आप।
पारस प्रभु की पूज से, मिट जावे संताप॥ ५४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं रोगदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

जरा दूति है मृत्यु की, जर-जर होती देह।
तीर्थंकर हैं आप सो, जीर्ण नहीं हो देह॥
भक्ति-भाव से जो जजे, पार्श्वनाथ के पाद।
स्वर्गिक सुख भरपूर हो, मिले मुक्ति का साथ॥ ५५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं जरादोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

चारों गति में जन्म ले, मरा अनन्तों बार।
उससे बचने आपकी, पूजा ही है सार॥
पार्श्वनाथ ना जन्म ले, शिव ललना के पास।
शुक्लध्यान से कर्म का,किया आपने नाश॥ ५६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं जन्मदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

मर-मर स्वामी देह को, तज फिर पायी देह।
मरण मारने को प्रभु, तजा देह से नेह॥
अतिशय आठों द्रव्य ले, जो पूजे बन दास।
पार्श्वनाथ की शरण ले, पूरी हो अरदास॥ ५७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मरणदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

भय भी हो भयभीत रे, भाग गया है देव।
कैसे लौटे पार्श्व तो, रहे देव के देव॥
डर-डर कर के पाप से, पुनः कमाया पाप।
पार्श्वनाथ की अर्चना, कर देती अघ साफ॥ ५८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं भयदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

तीन लोक को जानते, तो विस्मय क्यों होय।
मोह कर्म नहिं शेष जो, इच्छा भी ना होय॥
पंचेन्द्रिय से हे प्रभो, नहीं जानते आप।
ज्ञान रहा प्रत्यक्ष है, पार्श्वनाथ निरमाप॥ ५९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं विस्मयदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

रागी को ही राग हो, आप रहे गतराग।
नहीं बचा रति दोष सो, बढ़ा हमारा राग॥
पार्श्वनाथ तव भक्ति से, रति ना बचती शेष।
परम्परा से भव्य के, भव न बचे अवशेष॥ ६०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं रतिदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

इष्ट वस्तु को देखकर, लालच उपजे उग्र।
उनको पाने पाप में, हो जाता है अग्र॥
पार्श्वनाथ की अर्चना, मेटे भव का राग।
वैर-भाव के साथ में, मिटे राग की आग॥ ६१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं रागदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

दस भव के उस शत्रु से, नहीं किया था वैर।
तभी कमठ आ चरण में, झुका छोड़कर वैर॥
पार्श्वनाथ के भक्त को, नहीं लगेगी ठेस।
मारे-काटे प्राण ले, तो न उपजता द्वेष॥ ६२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं द्वेष दोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

तेरा-मेरा सब मिटा, मिटा मोह का भाव।
इसीलिए तो पार्श्व के, चरण रहा मम चाव॥
राग-रोष के साथ में, बना मोह भी दास।
मोह विनाशक देखकर,भक्त बना मैं खास॥ ६३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मोहदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

पाँचों निद्रा का प्रभो! किया आपने नाश।
तभी रहूँ मैं पूजता, जब तक दिल में श्वांस॥
चार घातिया घात कर, पाया केवलज्ञान।
क्षण भर भी जो पूज ले, आ जावे निज भान॥ ६४॥

ॐह्रीं श्रीं क्लीं ऐं निद्रादोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

चिन्ता से ही लोक में, दुखियारा यह जीव।
चिन्ता नाशी आपने, तभी मिटी भव पीर॥
पार्श्वनाथ के पाद में, शत-शत करे प्रणाम।
यशस्कीर्ति हो लोक में, मिट जायेगा काम॥ ६५॥

ॐह्रीं श्रीं क्लीं ऐं चिन्तादोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

सप्त धातु से रहित है, देह आपकी नाथ।
कैसे आवे स्वेद कण, घातिकर्म ना साथ॥
पारस प्रभु का नाम ही, औषधि है अतिश्रेष्ठ।
रोग सभी क्षण में मिटे, जो खा लेवे जेष्ठ॥ ६६॥

ॐह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पसेवदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

यथाख्यात संयम रहा, सो ना उपजे स्वेद।
परम सौम्यता देखकर, हो जाते निरवेद॥
पारस प्रभु सा लोक में, नहीं रहा है देव।
चिन्तन से ही दुख मिटे, क्षण भर कर ले सेव॥ ६७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं खेददोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

वियोग ना हो इष्ट का, क्यों होवे फिर शोक।
प्रेम-द्वेष सब मिट गया, तभी बने गतशोक॥
पार्श्वनाथ की पूज से, मिथ्यातम नश जाय।
समकित सूरज उदित हो, दुर्गतियाँ मिट जाय॥ ६८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं शोकदोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

खोटा-अच्छा जो रहा, सभी अपेक्षित होय।
मिटी अपेक्षा आपमें, काहे को मद होय॥
पारस तेरी पूज से, पाप बन्ध रुक जाय।
पूर्व पाप भी ना बचे, पुण्य भाव बढ़ जाय॥ ६९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं मददोषरहित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः अर्घ्यं ....।

चौबीसी का अर्घ

(ज्ञानोदय)

वृषभ देव से महावीर तक, चौबीसों जिनराज रहे।
बिम्ब भरत श्री बाहुबली के, चौबीसी में राज रहे॥
ठीक बीच में पार्श्वनाथ देवाधिदेव अतिवीर कहे।
आदिनाथ भी खड्गासन है, कर्म महारिपु जीत गए॥
दोहा - सब बिम्बों के चरण में, नमन करूँ शत बार।
अर्घ चढ़ाऊँ हे प्रभो, खुल जावे शिव द्वार॥ ७०॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशतितीर्थंकर भरत-बाहुबली आदि सर्व जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

समवसरण का अर्घ (ज्ञानोदय)

दोहा - समवसरण है पार्श्वनाथ का,उनमें जितने बिम्ब रहे।
अर्घ चढ़ाऊँ मन में केवल, आप मात्र का बिम्ब रहे॥ ७१॥

ॐ ह्रीं समवशरणस्थ श्री पार्श्वनाथादि जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

गणधर मंदिर का अर्घ

दस गणधर है पार्श्व के, नमा सभी को शीश।
नाम स्वयंभू आदि है, अर्घ चढ़ाऊँ ईश॥ ७२॥

ॐ ह्रीं स्वयंभू आदि सर्व गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

(ज्ञानोदय)

पार्श्वनाथ जिनमंदिर जी के, चारों दिशि में मंदिर है।
तीन-तीन जिनबिम्ब सभी में, सबको मेरा वन्दन है॥
जल-फल आदिक अर्घ बनाकर, इन सबको मैं भेट करूँ।
पूजा करके हे स्वामी मैं, मुक्ति वधू से भेट सकूँ॥ ७३॥

ॐह्रीं श्री पार्श्वनाथ चतुःदिशि स्थित सर्व जिनालयेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

मानस्तम्भों के अर्घ्य

जिसे देखते ही जीवों का, मान स्तम्भित हो जाता।
मानस्तम्भ भी यहाँ विराजे,अर्घ चढ़ाऊँ शिवदाता॥ ७४॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भस्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

पूर्णार्घ्य

घत्ता

हे पार्श्व जिनेश्वर, तुम परमेश्वर,आप चरण में वन्दन है।
जो शरण गहेंगे, चरण रहेंगे, मिट जावे भव क्रन्दन ये॥
हम अर्घ सजाकर, भाव लगाकर, पूजा करते अविरल हैं।
तव नाम रटेंगे, पाप मिटेंगे, मिट जावेगी खलबल ये॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः। (१०८ बार)

जयमाला

चौथा कल्याणक हुआ, जहाँ पार्श्व का पूज्य।
कहूँ मालिका क्षेत्र की, बनने को मैं पूज्य॥ १॥

(ज्ञानोदय)

पार्श्वनाथ ने अश्व सुवन में, दीक्षा लेकर विहरण से।
कई वनों को कई नगर को, पूत किया था चरणन से॥

चार माह के बाद सुनो वे, बिजौलिया के जंगल में।
नाम रहा था भीमावन जो, भीम भयंकर जंगल है॥ २॥
आकर के इक बृहद् शिला पर, ध्यान लगाने बैठ गए।
अमित काल के कर्म नाशने, निज आतम में पैठ गए॥
उसी समय आकाश मार्ग से, संवर सुर जो ज्योतिष था।
विमान उसका जाता था सो, रुका पार्श्व के ऊपर आ॥ ३॥
सुर ने सोचा नीचे कोई, महापुरुष हो देखूँ जा।
नीचे आकर देखा तो अति, क्रोध बढ़ा था उसका हा॥
क्रोधित होकर महा भयंकर, ओले पत्थर बरसाएँ।
कठोर कर्कश वचनों से भी, पुनःपुनः वह भरमाएँ॥ ४॥
लेकिन प्रभु तो किंचित् भी ना, डरे नहीं हैरान हुए।
नहीं ध्यान से डिगे न उनके, कलुषित खोटे भाव हुए॥
सप्तम दिन में सुनो अचानक, नाग इन्द्र का आसन जो।
अचल रहा पर काँप उठा सो, हुआ सुचंचल मानस औ॥ ५॥
अवधिज्ञान से देखा हा! हा!!, किया सुरक्षण मेरा जी।
आया है उपसर्ग उन्हीं पर, मैं हूँ उनका चेला जी॥
दूर न कर दूँ उसको तो फिर, क्या मतलब है ताकत से।
नहीं करूँ तो रहा कृतघ्नी, बन जाऊँ दुख गागर मैं॥ ६॥
यही सोचकर उसने आकर, फैलाकर फणमण्डल को।
छाया की थी जिसे देखकर, भाग गया शठ कमठ अहो॥
जैसे ही उपसर्ग टला धरणेन्द्र, युगल के माध्यम से।
सात दिनों से लगातार जो, किया गया था भगवन पे॥ ७॥
वैसे ही चउ घाति नाश हो, तत्क्षण केवलज्ञान हुआ।
और उसी क्षण दुष्ट कमठ भी, पार्श्व चरण प्रतिपात हुआ॥
पारस के बस परस मात्र से, कमठ अयस भी कनक बना।
मिथ्यामल को धोकर वह भी, सब देवों में चमक उठा॥ ८॥
काँप उठे थे सुर इन्द्रों के, सिंहासन अरु मुकुट झुके।
जय-जय करके वैमानिक के, साथ देव सब आ पहुँचे॥

शचि स्वामी की आज्ञा से ही, कुबेर भी झट आया था।
समवसरण को रचकर उसने, जीवन सफल बनाया था॥ ९॥
अब सुन लो इतिहास कहूँ मैं, तीर्थ क्षेत्र का प्यारा जो।
शिलालेख पर खुदा हुआ है, क्षेत्र महत्ता गाता जो॥
श्रेष्ठी श्री लोलार्क एकदा, इस पथ से ही जाता था।
निशा बढ़ी सो इसी स्थान पर, रात बिताना भाया था॥ १०॥
सपना आया विभावरी में, देख पास जो कुण्ड रहा।
उसमें है श्री पार्श्वनाथ जी, निकाल उनको शीघ्र अहा॥
और सुनो यह स्थान तीर्थ है, पार्श्वनाथ से पूज्य हुआ।
चौथे कल्याणक को पाकर, प्रभु ने इसको पूज्य किया॥ ११॥
समवसरण भी लगा यहाँ पर, दिव्य देशना पायी थी।
सुर-नर किन्नर ने आकर के, महिमा इसकी गायी थी॥
ज्ञान क्षेत्र पर मन्दिर बनवा, अब जग में विख्यात करो।
श्रेष्ठी प्रतिमा बाहर लाकर, क्षेत्र प्रतिष्ठा ख्यात करो॥ १२॥
नींद खुली तो श्रेष्ठी को कुछ, नहीं हुआ विश्वास यदा।
सुर ने जाकर सेठानी को, स्वप्न दिया था खास तदा॥
सेठानी ने कहा देव तुम, कहो सेठ से जाकर के।
मंदिर निश्चित बनवायेगा, श्रेष्ठी धर्म उजागर है॥ १३॥
सेठानी की बात मानकर, देव सेठ के पास गया।
और पुनः दे सपना इस विध, बात कही थी खास अहा॥
यही रहा वह भीमावन है, जहाँ पार्श्वप्रभु आये थे।
रेवा सरिता का तट है यह, ये ही सुनो शिलाएँ हैं॥ १४॥
मूर्ख कमठ ने जिनको बरसा, नरक द्वार को खोला था।
प्रभु ने समता रखकर सबमें, मुक्ति द्वार को खोला था॥
आदि-आदि दे सपना सुर तो,उसी समय निज धाम गया।
और सेठ ने उठकर मंदिर, बनवाने का काम किया॥ १५॥
कुण्ड खोदकर बिम्ब निकाला, पार्श्वनाथ का श्रेष्ठी ने।
धन्य किया था अपना जीवन, बना भावना ज्येष्ठी ये॥

जिस दिन से यह बिम्ब निकाला, इसका पानी उस दिन से।
औषध बनकर रोग मिटाता,रही महत्ता अब तक ये॥ १६॥
इसी बात को बड़ी शिला पर, खुदवा टंकोत्कीर्ण किया।
वही बताता प्रभु का केवल, ज्ञान महोत्सव यहीं हुआ॥
देख शिलाएँ लगता मानों, रखी हुई है सुरकृत है।
मन भावन है सजी हुई है, सरल सहज है अद्भुत है॥ १७॥
और सुनो अंग्रेज लोग आ, शिलालेख के नीचे जी।
धन-दौलत भण्डार मिलेंगे, यही सोचकर रीझे जी॥
धन पाने को शिलालेख में, बारुद ले विस्फोट किया।
दुग्धधार तब निकल पड़ी सो, उनका भण्डाफोड़ हुआ॥ १८॥
उसके ही हैं छेद अभी भी, शिलालेख को फोड़ा जो।
दिख कर कहते पारस प्रभु ने, यहाँ कर्म को फोड़ा औ॥
मधुमक्खी के यूथों ने भी, आकर उनको काटा था।
डंक मारकर उनके तन में, तीक्ष्ण चुभाया काँटा था॥ १९॥
अद्यावधि भी कई लोग आ, भक्ति भाव से पारस की।
अर्चा-चर्चा करके प्रभु की, पूजन कर भव तारक की॥
रोग मिटाते शोक मिटाते, सौख्य शान्ति को पाते हैं।
आप चरण से आकर्षित हो, फिर-फिर दौड़े आते हैं॥ २०॥
आदि-आदि है चमत्कार जो, अनुभव में भी आते हैं।
मनमाना सब मिलता उसको, जो भी प्रभुगुण गाते हैं॥
पार्श्व आपके गुण गाने में, सुरगुरु भी तो हार गया।
फिर भी गुण गा करके मैंने, भाव भक्ति से काम किया॥ २१॥
गल्ती होवे उसमें जो कुछ, विज्ञ शोधकर पढ़ लेवे।
क्षमा भाव धर विधान करके, जीवन अपना गढ़ लेवे॥
आप गुणों को अमित काल तक, लिख-लिखकर थक जाऊँ मैं।
तो भी पूर्ण न होंगे स्वामी, उनका पार न पाऊँ मैं॥ २२॥
जयमाला यह पूर्ण करूँ मैं, चरणों शीश झुकाऊँ मैं।
आप शरण को छोड़ कभी भी, और कहीं नहिं जाऊँ मैं॥

आप चरण मम हृदय कमल पर, शिला उकेरित ज्यों होवे।
निद्रा में या सपने में भी, शरण आपका पथ होवे॥ २३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्हं नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं ....।

आशीर्वाद

पारसनाथ जिनेश्वर की जो, नित्याराधन करते हैं।
पाप-ताप-संताप मेंटकर, भव सागर से तरते हैं॥
मुक्ति-वधू का वरण करें फिर, लौट न भव में आते हैं।
अष्ट-गुणों से शोभित होकर, निज में ही रम जाते हैं॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

प्रशस्ति

शान्ति वीर शिव ज्ञान सिन्धु के, शिष्य सुविद्यासागर हैं।
शिष्य रहे हैं दूजे उनके, विवेक सिन्धु गुणआगर हैं॥
उनकी शिष्या रही पाँचवी, नाम रहा विज्ञानमती।
रचा उसी ने भाव भक्ति से, होकर के भी अल्पमती॥

आँवा नगरी शान्तिनाथ का, अतिशय जग में न्यारा है।
दो मंदिर हैं विशाल उन्नत, नसिया मंदिर प्यारा है॥
प्रभाचन्द्र शुभचन्द्र साधु जिनचंद्र मुनीश्वर गुरुओं के।
स्तम्भ बनाये धर्मचन्द्र ने, पूज्य सुसाधक पुरुओं के॥

यहीं हुआ यह विधान पूरा, बिजौलिया के स्वामी का।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, सर्व लोक में नामी का॥
आषाढ़ी के कृष्ण पक्ष की, अष्टम तिथि का दिन जानो।
वार रहा है चौथा जिसमें, पूर्ण हुआ है यह मानो॥

वीर मोक्ष पच्चीस शतक सैंतीस वर्ष का संवत है।
भव के क्षय का लक्ष्य बनाकर, रचा गया यह अर्चन है॥
सागर सूरज संत धरा पर, जब तक रह उपकार करे।
विधान करके पार्श्वनाथ का, भविजन निज उपकार करे॥

श्री वर्द्धमान-महावीर विधान

श्री महावीराय नमः

पीठिका

(दोहा)

वर्द्धमानअतिवीर के, विधान की जो श्रेष्ठ।
कहूँ पीठिका लोक में, जिनके गुण हैं ज्येष्ठ॥

(ज्ञानोदय)

भील पुरुरवा ने मुनिवर, उपदेश सुना व्रत धारे थे।
मद्य माँस मधु और साथ में, हिंसा आदिक त्यागे थे॥
मरकर सुर में गया वहाँ से, आकर चक्री पुत्र हुआ।
भ्रष्ट हुआ था जैनधर्म से, सो पापों का सूत्र हुआ॥ १॥

इस कारण ही भवों भवों में, भटक-भटक दुख पान किया।
तथा योग से हिमगिरि पर आ, सिंहराज बलवान हुआ॥
चारण ऋषि से सम्बोधन पा, उसको आतम ज्ञान हुआ।
मुँह में पकड़े मृग को छोड़ा, धर्म अहिंसा धार लिया॥ २॥

मरकर पहले स्वर्ग गया फिर, आकर कनक पुंग नृप के।
घर में कनकोज्ज्वल बनकर, उपदेश सुना मुनि पुंगव से॥
मुनिव्रत धारण करके तप में, लीन हुए संन्यास लिया।
समाधिपूर्वक मरण किया सो, सप्तम सुर में वास हुआ॥ ३॥

भोग-भोगकर नगर अयोध्या, के राजा की शीलवती।
रानी के तुम पुत्र हुए, हरिषेण नाम के पुण्यमती॥
पुनः महाव्रत धारण करके, त्रय योगों का तप धारा।
कर्म मूल को नाश करूँ यह, सोच पाप को दल डाला॥ ४॥

लेकिन पूरे कर्म नाश नहिं, हो पाये सो स्वर्ग गये।
महाशुक्र में सुर बन करके, विविध भाँति सुख शर्म गहे॥
आकर राजा सुमित्र के घर, प्रिय नामक प्रिय पुत्र हुए।
षट्खण्डों के अधिपति बनकर, जैनधर्म के सूत्र हुए॥ ५॥

श्री क्षेमंकर तीर्थंकर के, चरण कमल की वन्दन कर।
सुनी देशना तो वैरागी क्षण भर में ही मुनि बनकर॥
करी तपस्या सहसों मुनि के साथ रही अघ शोषक जो।
मोक्षमार्ग में कही गई है, मूलोत्तर गुण पोषक जो॥ ६॥

तो भी ओ हो मोक्ष न पाया, जिससे बारम स्वर्ग मिला।
मिली अलौकिक सौख्य सम्पदा, सुरांगना का योग मिला॥
लेकिन चित्त न रमता उनमें, संयम व्रत ही भाता था।
मुनि बन करके मोक्षमार्ग में, चलने को ललचाता था॥ ७॥

आकर छत्राकार नगर के, मेधावी नृप शासक जो।
नंद नाम था प्यारा उनका पुत्र, बना दुख नाशक वो॥
प्रोष्ठिल मुनि की वाणी सुनकर, विरत भाव मन उपजा था।
छह महिने तक अनशन धारा, आश्रय लेकर समता का॥ ८॥

और सुनो सब जीव लोक के, सुख पावे कल्याण करे।
इनके दुख मिट जावे सबहिं, जीवन में सुख पान करे॥
इसी भाव के कारण इनके, तीर्थंकर पद श्रेष्ठ रहा।
सोलहकारण भावन भाकर, बाँध लिया जग ज्येष्ठ महा॥ ९॥

तथा मरणकर अच्युत सुर में, इन्द्र हुए सुख पाए थे।
आकर के श्री कुण्डलपुरी में, त्रिशला माँ को भाए थे॥
ऐसे श्री महावीर वीर का, विधान लिखकर गुण गाऊँ।
कोटि कोटिशः वन्दन करके, पाप कर्म से बच जाऊँ॥ १०॥

इति परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि!

विधान पूजा

स्थापन

(ज्ञानोदय)

वर्द्धमान श्री महावीर अतिवीर वीर का वन्दन है।
तीर्थंकर सिद्धार्थ पुत्र का, करते हम अभिनन्दन है॥
भाग्य खिला सौभाग्य खुला, सो भाव हुए हैं पूजन के।
सन्मति त्रिशलानन्दन मेरे, बैठो उर के आसन पे॥

(दोहा)

करता आह्वानन प्रभो, सन्निधि है शुभ रूप।
स्थापन करके पूजता, हे त्रिभुवन के भूप॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीर जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(लय : श्री वीर महा अतिवीर.....)

ले स्वर्ण कलश में नीर, पूजा आज करूँ।
मम जनम विनाशो वीर! भव के काज तजूँ॥
जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।
मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीरजिनेन्द्राय नमः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ....।

ये चन्दन खुशबू युक्त, लज्जित हो आया।
हो जाऊँ अघ से मुक्त, चरणों ले आया॥
जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।
मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः संसारतापविनाशनाय चंदनं....।

मैं अक्षत उत्तम श्रेष्ठ, थाली भर लाया।
तव चरण चढ़ाना ज्येष्ठ, मेरे मन भाया॥

जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।
मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं....।

हे काम विनाशक! काम, मुझको दुख देता।
सो पुष्प चढ़ाकर आज, शिव का पथ लेता॥
जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।
मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रायनमः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं....।

ये घृत से निर्मित शुद्ध, नैवज मिष्ट रहे।
हो क्षुधा रोग अवरुद्ध, पूजन इष्ट रहे॥
जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।
मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रायनमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

ये मोह रहा है वीर, मुझको घेर लिया।
अब ज्ञान दीप जल जाय, दीपक भेंट किया॥
जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।
मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीरजिनेन्द्रायनमः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं....।

जो धूप दशांगी ज्येष्ठ, लेकर पद आवे।
वो कर्म जलावे शीघ्र, निज का पद पावे॥
जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।
मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीरजिनेन्द्रायनमः अष्टकर्मदहनाय धूपं ....।

मैं श्रीफल एला लौंग, फल के थाल भरूँ।
अब अर्पित करके नाथ, शिव की चाल चलूँ॥
जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।
मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रायनमः मोक्षफलप्राप्तये फलं ....।

जो जल-फल नैवज धूप, अक्षत चन्दन ले।
तव चरण जजे आ भूप! काटे बन्धन वे॥
जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।
मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रायनमः अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं ....।

प्रत्येक-अर्घ

(दोहा)

अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाद युगल श्रीवीर।
गुण-गण को मैं अर्घ दे, अब पूजूँ महावीर॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्/क्षिपामि॥

चौंतीस अतिशय

जन्म के दश अतिशयों के अर्घ

(ज्ञानोदय)

सप्त धातुमय तन है फिर भी, स्वेद न किंचित् झरता है।
अहो अलौकिक तन को देखे, बहता सुख का झरना है॥
जैसे चकवा स्वाति ऋक्ष के, जल से प्यास बुझाता है।
त्यों सन्मति तव दर्शन से भवि,भव आपद सुलझाता है॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निःस्वेदत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

बचा न मल का नाम निशाना, वीर प्रभु के शुभ तन में।
अति निर्मल ये कर्म मलों का, नाश करेंगे चेतन से॥
रवि के नभ में उग आने पर, अंधकार नहिं रह पावे।
महावीर की भक्ति करे तो, पाप पंक सब मिट जावे॥ २॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निर्मलत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

तीन लोक से वत्सलता का चिह्न सुधवलिम खून रहा।
हाथ-पैर के तलवे लेकिन, लाल रहे सुख पूर अहा॥
सुमेरु पर्वत पर हे स्वामी! हुआ जन्म अभिषेक यदा।
देव सुरासुर नाच उठे थे, पाप मिटा था पुण्य बढ़ा॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं क्षीर गौररुधिरत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

उपांग सुन्दर अंग आपके, सबसे न्यारे प्यारे हैं।
प्रथम रहा संस्थान देखकर, मिट जाते मद सारे हैं॥
जिसे देखने शचिपति ने भी, सहस नयन को धार लिया।
फिर भी तृप्त न हो पाया सो, फिर-फिर उनको देख जिया॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं समचतुरस्र संस्थान जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

वज्रमयी है हड्डी वेष्टन कीले भी हैं वज्रमयी।
लेकिन कोमलता इन जैसी, मिल न सकेगी और कहीं॥
महावीर की देह-शक्ति यह, उत्तम में भी उत्तम है।
शिवगामी हैं तद्भव सो हम, अर्घ चढ़ावे उत्तम ये॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वज्रवृषभनाराच संहनन जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

चक्रवर्ति अरु कामदेव अहमिन्द्र देव भी आ जावे।
आप रूप को देख दाँत के नीचे अंगुलि दब जावे॥
सौ-सौ युद्धों को जीता हो, वो भी सत्वर हारेगा।
उससे जो भी छोड़ सभी को, वीर शरण में आयेगा॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौरुप्य जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

कमल केतकी गुलाब चम्पा की खुशबू सब पीछे हैं।
सुगंधशाली आप देह त्रय लोक सुरभि को जीते हैं॥
सन्मति स्वामी की अर्चा से, अर्चित जग में हो जावे।
आपद-विपदा के सब बादल,क्षणभर में ही छँट जावे॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौगन्ध्य जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

एक सहस वसु लक्षण तन में, शुभ भविष्य के सूचक है।
कहते मानो अल्प उम्र में, बने कर्म के मोचक ये॥
महावीर जी तीन लोक के, चूड़ामणि जगवल्लभ है।
भक्ति करे वह पा जावेगा, जिसको पाना दुर्लभ है॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौलक्षण्य जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

तीन लोक को इक क्षण में ही उठा घुमाकर रख देवे।
किन्तु न ऐसा करते करुणाशाली सबके दुख मेंटे॥
महावीर में रहा अतुल बल तुलना किससे हो पावे।
देख आपके बल को हम तो अर्घ चढ़ावे मुस्कावे॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अप्रमितवीर्य जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

जन्मजात औ वचन आपके, प्रिय हित नन्दन दायक ही।
होते सबको सुख देते हैं, होते पाप प्रणाशक ही॥
कृपासिन्धु श्री महावीर के, करुणा सागर जिनवर के।
चरण पूजता वह पा जाता, यश वैभव सब त्रिभुवन के॥ १०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं प्रियहितवादित्व जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

केवलज्ञान के दस अतिशयों के अर्घ

(नरेन्द्र)

सौ-सौ योजन चारों दिशि में, सुभिक्षता हो जावे।
रोग शोक दारिद्र व्याधियाँ, निकट नहीं आ पावे॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे॥ ११॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं गव्यूतिशत चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

नभ पथ से तुम विहार करते, साथ चले मुनि स्वामी।
घाति कर्म चउ नाश हुए सो, अतिशय है जगनामी॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे॥ १२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं गगनगमनत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

भोजन पानी फल-फूलों को, नहिं खाते अतिवीरा।
तो भी तन है पुष्ट आपका, अचरज हमको धीरा॥

वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे॥ १३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

चाहे कितनी दूरी तक तुम, गमन करोगे देवा।
प्राणीवध नहिं हो सकता हम, करें आपकी सेवा॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे॥ १४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

कोई बाधा किसी भाँति की, प्रभु पर ना कर पावे।
इसीलिए उपसर्ग रहित यह, अतिशय हमको भावे॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे॥ १५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

मुख तो केवल एक रहा पर, दिखे सभी को भाई।
समवसरण में तुम्हें देखकर, मिटे पाप दुखदाई॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे॥ १६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

तीनलोक की सब विद्याएँ, चेरी बनकर तेरे।
चरण खेलती पूज्य आपके, भक्त सौख्य से खेले॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे॥ १७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वविद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

परमौदारिक देह रहा सो, नहीं पड़ेगी छाया।
वीर चरण की पूजा कर लो, मिट जायेगी माया॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे॥ १८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अच्छायत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

नहीं झपकती पलकें तो भी, नहिं थकती हैं आँखें।
इक क्षण के बस दर्शन से ही, खिल जाती हैं वाँछें॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे॥ १९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अपक्ष्मस्पंदत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

केश न बढ़ते नख का बढ़ना, रुका आपके स्वामी।
अर्पित होकर बने पुजारी, मेटे पाप निशानी॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे॥ २०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं समाननखकेशत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

देवकृत अतिशयों के अर्घ (चौपाई) (शांति नाथ मुख....)

अर्द्धमागधी तेरी भाषा, श्रोता पाते आनन्द खासा।
महावीर को भजने वाला, शीघ्र लगावे भव को ताला॥ २१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

वैर भूलकर जग के प्राणी, करे मित्रता मिल सुखदानी।
वीर प्रभु के भक्त सभी के, मित्र बनेंगे सुनो अभी वे॥ २२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वजन मैत्री भाव देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

सब ऋतुओं के फल लग आवे, पापी के भी अघ धुल जावे।
आपद विपदा सब मिट जावे, परम्परा से शिव को पावे॥२३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वर्तुफलादि शोभित तरुपरिणाम देवोपनीताशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

दर्पण जैसी निर्मल भू हो, पूजा करके निर्मल तू हो।
जो भज लेगा महावीर को, बन जायेगा महावीर वो २४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आदर्शतल प्रतिमारत्नमयी देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

पवन चलेगा सही दिशा में, भक्त रहेगा सही दशा में।
त्रिभुवनपति की भक्ति करे जो, मुक्तिवधू को शीघ्र वरे वो॥ २५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विहरणमनुगतवायुत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

समवसरण जब आता तेरा, घर-घर में हो सुख का डेरा।
श्रद्धा करले पूज्य वीर की, मिट जावेगी सभी पीर जी॥ २६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वजन परमानन्दत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

कंकर कण्टक दूर करेंगे, वायु देव आ पास रहेंगे।
दुख के काँटें शीघ्र हटेंगे, जो सन्मति की भक्ति करेंगे॥ २७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

गंधोदक की वर्षा करते, वीर भक्त नित सुख से भरते।
भज ले भज ले भज ले भाई, बन जावेगा सुख का सांई॥ २८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मेघकुमारकृत गन्धोदकवृष्टि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

सहस पत्र के पद्म रचेंगे, स्पर्श न लेकिन वीर करेंगे।
पंकज सा निर्लिप्त रहे जो, तो क्यों भव के दुःख वरे वो॥ २९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पादन्यासेकृत पद्मानि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

फसल धान्य से झुक जाती है, ईति भीति सब भग जाती है।
गुण से भरकर नम्र बनेगा, वीर प्रभु का भक्त बनेगा॥ ३०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं फलभारनम्रशाली देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

वीर पधारे जहाँ जहाँ पर, निर्मल होता गगन वहाँ पर।
आपद के सब बादल छटते, वीर भक्त के पातक घटते॥ ३१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शरत्कालवन्निर्मल गगनत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

आओ आओ आओ कहकर, बुला रहे हैं सबको मिलकर।
अतिशय माना सुरकृत प्यारा,पूजक को फल मिलता न्यारा॥ ३२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं एतैतैति चतुर्निकायामर परस्पराह्वानन देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

शरद काल के बादल सम ही, होती दिशियाँ निर्मलतमजी।
पूजे अन्तिम तीर्थंकर को, बन जावेगा क्षेमंकर वो॥ ३३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शरन्मेघवन्निर्मल दिग्विभागत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

सहस आर का धर्म चक्र जो, प्रभु के आगे चलता है वो।
सच्चे चक्रेश्वर प्रभु वीरा, नाम जपे सब जग के धीरा॥ ३४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं धर्मचक्रचतुष्टय देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

आठ प्रातिहार्य के अर्घ

(लय : कहाँ गये चक्री.....)

शोक मिटाता सब जीवों का रोग मिटाता है।
अशोक प्यारा नाम तभी है, पूज्य बनाता है॥
महावीर की पूजा से तो, पाप मिटेंगे रे।
भक्ति बढ़ा ले जग के वैभव साथ रहेंगे रे॥ ३५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अशोकवृक्षप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

तीन छत्र जो चाँदी के ये, शिर पर शोभित है।
उनमें लटके मोती जिन पर, सब जन मोहित है॥
वीर प्रभु की छत्रच्छाया, हमने पायी है।
धन्य धन्य कह सारी जनता, चरणों आयी है॥३६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं छत्रत्रयप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

चौंसठ चामर स्वर्ग लोक के, इन्द्र ढोरते हैं।
महावीर के भक्त शीघ्र ही, कर्म तोड़ते हैं॥
प्रातिहार्य गुण रत्नाकर ने, कैसे पाया है।
तीर्थंकर जो कर्म उदय में, वो ही आया है॥ ३७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुषष्टि चामरप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

अन्तरंग का शुद्ध भाव ही, बाहर आया है।
जगमग करता भामण्डल बन, सबको भाया है॥
सन्मति स्वामी आप भक्त को, सन्मति मिलती है।
चरणकमल के दर्शमात्र से, दुर्गति टलती है॥ ३८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भामण्डलप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

साढ़े बारह करोड़ बाजे, ढम ढम बजते हैं।
देव बजाते एक ध्वनि में, प्यारे लगते हैं॥
दुन्दुभि बाजे कहते शिव के, नायक आये हैं।
महावीर की पूजा ही बस, मन को भाये हैं॥ ३९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दुन्दुभिप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

रंग रंगीले भाँति भाँति के, पुष्प बरसते हैं।
जिन्हें देखकर पापी के भी, भाग्य पलटते हैं॥
महावीर अतिवीर देव की, महिमा न्यारी है।
चरण पड़े तो पल में पाते, सुख की क्यारी वे॥ ४0॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

सिंहासन यह बना स्वर्ण से, रत्न जड़े न्यारे।
उसके ऊपर अधर विराजे, महावीर प्यारे॥
सिद्ध शिला पर आसन होगा, भक्ति करेगा जो।
लौट न आवे भूमण्डल पर, वहीं रहेगा वो॥ ४१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सिंहासनप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

अष्टादश है महा, सात सौ, छोटी भाषा में।
दिव्यध्वनि से सर्व तत्त्व को, प्रभुवर समझावे॥

वीर प्रभु अतिवीर आपकी, ध्वनियाँ अद्भुत है।
पूजन करके हमने सारे, पाये सद्गुण है॥४२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

अनन्त चतुष्टय के अर्घ

अनन्त दर्शन अनुपम अद्भुत, तुमने पाया है।
दर्शन का आवरणी माना, उसे सताया है॥
अनन्त दर्शन महावीर का, रहा अलौकिक है।
भक्ति करे जो परम्परा से,बने अलौकिक वे॥ ४३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तदर्शन गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

रहा अंत से रहित अमित, जो ज्ञान सुपंचम है।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, पाया उत्तम ये॥
पाने केवलज्ञान आप सम, चरणों आये हैं।
सब देवों को देखा उसमें, आप सुहाये हैं॥ ४४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तज्ञान गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

आत्मिक सुख जो नहीं पराश्रित स्वाश्रित भाया है।
महावीर ने शुक्लध्यान से उसको पाया है॥
कुण्डलपुर के गौरव तेरी, गाथा जो गाते।
गर्व छोड़कर उत्तम मार्दव, वृष को वो पाते॥ ४५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तसुख गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

तीन लोक के सभी द्रव्य अरु, पर्यायें जानो।
लेकिन थकते नहीं कभी भी, यही वीर्य मानो॥
विपुलाचल के महावीर को, वंदन करता जो।
भव भोगों के क्लेश छूटते चंदन बनता वो॥ ४६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तवीर्य गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

पंचकल्याणक के अर्घ

(घत्ता एवं दोहा)

तब रत्न सुबरसे, मन भी हरषे, गर्भ पधारे आप यदा।
हम पूजा करते, सुख से भरते, ऐसा मिलता भाग्य कहाँ॥
सुर देवी आकर, सेवा पाकर, माँ की अति हरषाती है।
हम कल्याणक पा, चरणों में आ, पूजे प्रभु सुख पाती हैं॥
माह रहा आषाढ़ का, तिथि छठवीं सुखदाय।
अर्घ चढ़ाऊँ वीर को, मेरे भव घट जाय॥ ४७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं गर्भकल्याणकमण्डित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

प्रभु भू पर आये, दर्शन पाये, शचि ने सबसे पहले तो।
मिथ्यातम भागा, आतम जागा, मोक्षमार्गमय बनने को॥
हम नाचे गावें खुशी मनावें, जन्म कल्याणक आज हुआ।
ये अर्घ चढ़ाने पाप घटाने, भाग्य उदय यह खास हुआ॥
चैत माह की तिथि रही, अट्ठाइसवीं[१] जान।
महावीर को अर्घ दूँ, पूज्योत्तम यह मान॥ ४८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जन्मकल्याणकमण्डित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

प्रभु दीक्षा धारे, वस्त्र उतारें, लौकान्तिक भी आये थे।
सुर उठा पालकी धर्मपाल की, मन ही मन हरषाये थे॥
वे मौन सुधारें, काम सुधारें, जन जन उनके वन्दन से।
मम पाप कटेंगे सौख्य बढ़ेंगे, भाव बनेंगे चन्दन से॥
मार्गशीर्ष की पूज्य है, दसवीं तिथि यह आज।
तप कल्याणक वीर का, पूजूँ बनकर दास॥ ४९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं तपकल्याणकमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

जब ज्ञान उपजता लोक हरषता, समवसरण भी बनता है।
शुभ दिव्य देशना, छोड़ वेदना, सुनती सारी जनता है॥
तज घर कारा को, सुत दारा को, देश महाव्रत पाते जो।
शुभ मोक्षमार्ग पर, प्रतिपल चलकर,मोक्षमहल में जाते वो॥

---

१. शुक्ला त्रयोदशी

दशमी है वैशाख की, शुक्ल पक्ष की श्रेष्ठ।
पूजे सन्मति वीर को, बनता जग में ज्येष्ठ॥ ५०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ज्ञानकल्याणकमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

प्रभु मोक्ष पधारे, भव नहिं धारे, पुनः लोक में आकर के।
वे भव को तजते, सुख में रमते, शुद्ध अवस्था पाकर के॥
वसु कर्म नहीं है, सौख्य सही है, आठ गुणों को पाया है।
निधि निज की पायी, आनन्ददायी, हमने शीश झुकाया है॥
कृष्णा कार्तिक माह की, रही अमावस श्याम।
मोक्ष गये अतिवीर सो, लगती है अभिराम॥ ५१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोक्षकल्याणकमण्डितश्रीवर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

१८ दोष रहित भगवान के अर्घ

(दोहा)

मोह कर्म का नाम ना, साता है भरपूर।
भूख लगे कैसे किया अघ को चकनाचूर॥
कूल भूप ने वीर को प्रथम दिया आहार।
हुए पंच आश्चर्य तब, पाया शिव का द्वार॥ ५२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं क्षुधादोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

प्यास न आती पास है नहीं हेतु अवशेष।
अर्घ चढ़ाकर हे प्रभो, धारूँ मैं जिनवेष॥
नाच-नाच अतिवीर का, जो करते गुणगान।
स्वर्ग लोक को प्राप्त कर, करते शिव सुख पान॥५३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पिपासादोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

तीर्थंकर है आप सो, जरा न आवे पास।
जरा दोष को नाशकर, पद पाया है खास॥
चाँदनपुर के वीर को, जो पूजे त्रय काल।
अजर-अमर पद प्राप्त हो, फिर नहिं आवे काल॥५४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जरादोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

गर्भ सम्मूर्च्छन जन्म है, और रहा उपपाद।
तीनों के ही नाश से, हुआ मोक्ष उत्पाद॥
एक सहस वसु कलश से, सुमेरु पर अभिषेक।
जन्म जात जिन वीर का, तृप्त न होते देख॥ ५५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जन्मदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

मरण रहा अति कष्टमय, कष्ट किए सब साफ।
पण्डित-पण्डित मरण कर, अमर हुए है आप॥
त्रिशलानन्दन वीर के, स्पर्श करे द्वय पाद।
सम्यग्दर्शन धान्य में, मिल जाता है खाद॥ ५६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मरणदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

भोग रोग के हेतु हैं, नहिं करते तुम भोग।
स्वस्थ हुई है चेतना, नाश हुआ है रोग॥
सन्मति से सन्मति मिले, मिले सौख्य भण्डार।
द्वन्द-फन्द को छोड़कर, यदि आये प्रभु द्वार॥ ५७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रोगदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

इष्ट वस्तु में जीव के, रति उपजे निस्सार।
रति को नाशा पा लिया, आतम जो है सार॥
रहे पुत्र सिद्धार्थ के, महावीर जिनराज।
कर ले सेवा एक क्षण, सध जावे सब काज॥ ५८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रतिदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

तन ममता से भय बढ़े, शरण ढूँढ़ता जीव।
निर्भय तुम ही शरण हो, भय की मेटी नींव॥
सेवा करती देवियाँ, माता की दिन-रात।
गर्भ विराजे वीर सो, रही अलौकिक बात॥५९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भयदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

अचरज क्यों उपजे तुम्हें, झलक रहा सब लोक।
विस्मय लेश न अब बचा, सो पूजे त्रयलोक॥
पन्द्रह महिने रत्न की, वर्षा करते देव।
कल्याणक जब प्रथम हो, खोने भव की टेव॥ ६०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विस्मयदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

तीन लोक में आपका, शत्रु नहीं है शेष।
सबके सुख की भावना, भायी जो सुखवेष॥
महावीर के भक्त से, करे न कोई द्वेष।
पुण्यवान वह शीघ्र ही, धारेगा जिन वेष॥ ६१॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं द्वेषदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

स्वेद नहीं आवे कभी, आप देह में नाथ।
तब तो पाया आपने, मुक्ति रमा का साथ॥
कुण्डलपुरी के वीर का, नित्य करे गुणगान।
झंझट कर्मों के मिटे, करे मोक्ष का पान॥ ६२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं स्वेददोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

मन का यदि मिलता नहीं, तो उपजेगा खेद।
आवश्यकता है नहीं, इसीलिए निर्वेद॥
श्रेणिक नृप ने पूछकर, साठ सहस शुभ प्रश्न।
उत्तर पाये वीर से, रहूं भक्ति में मस्त॥ ६३॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं खेददोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

ज्ञान नाशकर मोह जो, हावी सब पर आज।
उसको नाशा वीर सो, निर्मोही है आप॥
महावीर के चरण में, हुआ समर्पित मोह।
तब तो पूजक शीघ्र ही, पा जाता है मोक्ष॥ ६४॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोहदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

निद्रा के वश में हुआ, सब कुछ जाता भूल।
मूल मिटाया वीर ने, नहीं बचा यह शूल॥
नहिं सोते नहिं जागते, महावीर अतिवीर।
नींद मिटेगी पूज ले, मिटे पाप के तीर॥ ६५॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निद्रादोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

चिन्ता उसको ही लगे, परिग्रह होवे पास।
मूर्च्छा त्यागी सो बने, सभी आपके दास॥
महावीर को अर्च ले, चिन्ता होगी दूर।
हो जावे निश्चिंत वो, पा जावे सुख पूर॥ ६६॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चिन्तादोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

कारण जो हैं शोक के, दिया सभी को रोक।
इसीलिए अतिवीर को, क्यों होवेगा शोक॥
महावीर के भक्त के, कभी न होते पाप।
तो क्यों पावे शोक वो, सुख पावे निर्माप॥ ६७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शोकदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

गुरु लघु में अंतर मिटा, पायी समता ज्येष्ठ।
तभी बचा नहिं मद प्रभु, निर्मद तुम ही श्रेष्ठ॥
सन्मति का जो भक्त है, मद मिट जाता शीघ्र।
पुण्यवान के मध्य में, पद पाता है अग्र॥ ६८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मददोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

अंतरंग बहिरंग के, नहीं परिग्रह पास।
कैसे उपजे राग ये, सुख पाया है खास॥
जो पूजेगा वीर को, ग्रह बाधा मिट जाय।
लक्ष्मी भी आग्रह करे, किन्तु न मूर्च्छा आय॥ ६९॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रागदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

गणधर देव का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

गौतम कुल में ब्राह्मण के घर, जिनका अन्तिम जन्म हुआ।
इन्द्रभूति का, गौतम गणधर, पूज्य नाम विख्यात हुआ॥
महावीर के मोक्ष गमन के दिन ही सायंकाल अहो।
पाया केवलज्ञान सुपंचम, गुण गा सकता कौन कहो॥
दोहा - गौतम आदिक जो रहे, ग्यारह गणधर देव।
सबको पूजूँ अर्घ से, मेरी नैया खेव॥७०॥

ॐ ह्रीं गौतमादि एकादशगणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं .....।

पावापुर सिद्धक्षेत्र का अर्घ (ज्ञानोदय)

पावापुर में पद्म सरोवर, कमल खिले है मनमोहक।
ठीक बीच में शिला सुशोभित, जहाँ विराजे जगमोहक॥
शेष बचे जो कर्म सभी को, नाश मोक्ष को पाया था।
अर्घ चढ़ाऊँ पूजा करने, स्वर्ग लोक भी आया था॥ ७१॥

ॐ ह्रीं पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ....।

पूर्णार्घ्य (घत्ता)

हे वीर जिनन्दा त्रिभुवन चन्दा आनन्द कन्दा आप रहे।
हम पद आकर के, गुण गाकर के, निज पाकर के पाप हरे॥
जो तुमको पूजे, भव से छूटे, अघ से रूठे जाप करे।
वो शिव में जावे निज को पावे, निज में आवे ताप तजे॥ ७२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः।

(१०८ बार जाप करें)

जयमाला (दोहा)

जयमाला अतिवीर की, मैं गाऊँ दे ताल।
फल में चाहूँ हे प्रभो, मिट जावे भव चाल॥१॥

(ज्ञानोदय)

सिंह चिह्न से चिह्नित प्रभु ने, सिंह देह में सम्यक् पा।
मोक्षमार्ग प्रारम्भ किया था, सुख पाने निज आतम का॥
अन्तिम के इन तीर्थंकर ने, अन्तिम का पुरुषार्थ किया।
जिससे अन्तिम गति को पाकर, अन्त रहित सुख प्राप्त किया॥ २॥
मोह कर्म की महाशक्ति को, नाशा सो महावीर कहे।
चार घातियाँ नाश किए सो, हम तुमको अतिवीर कहे॥
ज्ञान आपका सर्वोत्तम अति, वृद्ध हुआ है बढ़ा हुआ।
अतः आपको वर्द्धमान कह गौरव अनुभव आज हुआ॥३॥
श्रेष्ठ बुद्धि से उपादेय को, हेय वस्तु को जान लिया।
उत्तम-उत्तम गति पाई सो, सन्मति हमने नाम लिया॥
तीन लोक पर जय पाने से, गर्वित जो अति काम हुआ।
उसको जीता सो हे स्वामी! वीर प्रभु यह नाम हुआ॥४॥
चाँदनपुर के टीले में जब, आप बिम्ब शुभ राजित था।
गाय झराती दूध वहाँ पर, तो ग्वाला अति विस्मित था॥
टीला खोदा तो उसमें से, महावीर की प्रतिमा जी।
प्रकट हुई थी जिसे देखकर, सबने गायी महिमा जी॥ ५॥

तब से ही वह टीला अब तक, महावीर जी क्षेत्र बना।
दर्श मात्र से भव्य जनों के, पाप नाश का क्षेत्र बना॥
शुद्ध-बुद्ध चैतन्य आत्म में, यदा आप तल्लीन हुए।
किया महा उपसर्ग रुद्र ने, तो भी निज में लीन हुए॥६॥
राजगृही में महावीर का, समवसरण जब आया था।
श्रेणिक नृप ने श्रावक बनकर, उत्तम दर्शन पाया था॥
प्रश्न पूछकर साठ सहस श्री, तीर्थंकर पद पाने का।
बन्ध किया था पथ पाया था, सुख पाने शिव जाने का॥ ७॥
मोक्ष रमा की अति इच्छा सो, लोभी आप कहाते हैं।
लंगोटी भी नहिं रखते, निर्लोभी हमें सुहाते हैं॥
शिव ललना से राग रहा सो, रागी तुम्हें बताते हैं।
राग-द्वेष मद मोह मिटा सो, वीतराग हम ध्याते हैं ॥ ८॥
कर्म शत्रु को नष्ट किया सो, हिंसक तुमको हम कहते।
अभयदान तुम देते सबको, महा अहिंसक हम भजते॥
भाव शुभाशुभ नष्ट हुए सो, शुद्धातम में तुम रहते।
पाप कर्म सब नाश किए सो, सुखसागर में तुम रमते॥ ९॥
त्रिशला की गोदी में जनमे और अजन्मा कहलाते।
पुनः नहीं लो जन्म धरा पर, तब तो सुर नर गुण गाते॥
मरण किया है पण्डित-पण्डित, फिर भी तुम हो नाथ अमर।
सिद्धालय से कभी न लौटो, गुण गाते है देव अमर॥१०॥
देह नहीं हो जर-जर स्वामी, नहीं भाव ही जर-जर हो।
जरा रोग से पीड़ित ना हो, इसीलिए तुम अजर अहो॥
रही अमावस काली थी पर, वह भी उज्ज्वल धवल हुई।
महावीर के मोक्ष गमन से, सारी विधियाँ चमन हुई॥११॥
पाँच शतक शिष्यों का गुरु जो, मिथ्यामत का पोषक था।
ऐसे गौतम इन्द्रभूति को, बना पाप का शोषक वा॥
समवसरण में प्रथम सुगणधर, बना धर्म से जोड़ दिया।
आप भक्ति से उनने भी भव-भव से नाता तोड़ लिया॥१२॥

उस ही भव में मुक्ति रमा से, विवाह करके शिव पाया।
लौट न आवे कभी लोक में, हमने उनको सिर नाया॥
रत्नदीप से भी बढ़कर के, ज्ञान आपका विस्तृत है।
तीन लोक को करे प्रकाशित, तीन लोक से वंदित है॥१३॥
लोकोत्तर है आप अलौकिक, अनुपम अद्भुत सुखमय है।
महावीर अतिवीर प्रभु का, भक्त बनेगा शिवमय रे॥
लोकोत्तम है नहीं लोक में, कोई तुमसे उत्तम है।
सेवा करते आप चरण की, बन जाते हैं सत्तम वे॥१४॥
त्रिभुवन में श्री महावीर सा, शरण न कोई हो सकता।
आप शरण में नहिं आये तो, भव बंधन नहिं खो सकता॥
तीर्थराज हो तीर्थनाथ हो, तीर्थंकर में अन्तिम हो।
तीर्थंकर हो क्षेमंकर हो, तीर्थभूत अभिनन्दित हो॥१५॥
महावीर हो महाधीर हो, धर्म सुनायक नेता हो।
करे समर्पित जीवन जो भी, बन जावे शिव नेता वो॥
महाधैर्य है महावीर्य है महाशौर्य है जिनवर में।
महावीर तुम धैर्यवान हो, सौख्यवान हो त्रिभुवन में॥१६॥
वर्द्धमान के जन्ममात्र से, नरकों में भी शांति हुई।
भूमण्डल पर दीन दुखी के, जीवन की भी क्लांति गई॥
भारत भू पर पाप ताप का, हुआ यदा विस्तार हहा।
बलि देने में पापात्मा जब, हुए अग्रणी हाय वहाँ॥१७॥
सन्मति स्वामी के दर्शन कर मुँह मोड़ा था हिंसा से।
बने मोक्ष के पथिक श्रेष्ठतम, लगकर परम अहिंसा में॥
देव सुरासर नर नारक को, निगोदियों को पशुओं को।
चक्रेश्वर को राजाओं को, जीत लिया सुरवधुओं को॥१८॥
बजा दिया है डंका विजयी होकर हा! उद्दण्ड हुआ।
चढ़कर आया तुम्हें जीतने, जीतूँगा यह सोच हहा॥
ऐसे काम मल्ल को ओहो, बाल अवस्था में तुमने।
मार भगाया मूल उखाड़ा, सो भागा था इक पल में॥१९॥

लौट न देखा सपने में भी, कैसे देखे किस मुख से।
देखेगा इन महावीर को लीन हुए हैं ये निज में॥
बाल ब्रह्मचारी बन करके, शिक्षा दी थी सब जग को।
कैसे जीते विषय वासना, कैसे पावे निजपन को॥ २०॥
मात्र बहत्तर वर्ष आयु थी, उसमें से श्री सन्मति ने।
करी तपस्या उत्तम बारह, वर्ष मात्र तक सन्मति ने॥
चार घातिया कर्म नाशकर, केवल पाया प्रभुवर ने।
तीस वर्ष उपदेश सुना था, समवसरण में भविजन ने॥ २१॥
दिव्यध्वनि सुन छह-छह घटिका, तीनों संध्याकालों में।
उस ही ध्वनि को गणधर स्वामी ने, गूँथा था ग्रन्थों में॥
उन ही शास्त्रों से अद्यावधि धर्म जानते शिवपथ भी।
पाप काटते पुण्य कमाते सुनते बातें सुखपथ की॥ २२॥
अहो वीर के शासन में ही, हम सब अब तक जीवित हैं।
जयवंतें जयवंत रहे नित, जिन शासन यह पृथिवी पे॥
महावीर के गुण गाने में, पार न कोई पा सकता।
सुरगुरु भी गा थक जायेगा, पार न उनके जा सकता॥२३॥
फिर मैं कैसे आप गुणों को, गा पाऊँ हे वीर प्रभो।
तो भी गाये भक्ति लहर में, खुश होकर के आज विभो॥
अल्प बुद्धि है अल्प शक्ति है, मुझमें थोड़ी प्रतिभा है।
सो स्वामी यह जयमाला मैं, पूर्ण करूँ तव महिमा है॥ २४॥
छन्द ज्ञान नहिं अर्थ ज्ञान नहिं, ज्ञान रहा नहिं आगम का।
अलंकार का ज्ञान नहीं है, नहीं ज्ञान सुखसागर का॥
किन्तु वीर में महावीर में, अचल भक्ति है श्रद्धा है।
हृदयकमल के सिंहासन पर, केवल प्रभु की प्रतिमा है॥ २५॥
वीर प्रभु बस तुम ही मेरे, शरण रहे हैं उत्तम हैं।
मोक्षमार्ग में मार्ग प्रकाशक, नेता हैं सर्वोत्तम हैं॥
आप भक्ति से स्वामी मेरा, रत्नत्रय यह पूर्ण बने।
पाप पंक मिट जावे जीवन, सौख्य शांतिमय पूर्ण बने॥ २६॥

इस ही फल की इच्छा से यह विधान मैंने आज लिखा।
वर्द्धमान महावीर प्रभु अब, मिल जावे बस मोक्ष शिला॥
प्रमादवश यदि गल्ती होवे, शोध पढ़ो हे प्राज्ञ जनों।
महावीर की पूजा करके, मोक्ष पथिक ही आप बनो॥ २७॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वादः

वर्द्धमान श्री महावीर का, विधान जो भी करता है।
सुरनर किन्नर के सुख पाकर, शिव ललना को वरता है॥
पुनः लौट नहिं आता जग में, अमितकाल तक सुख पावे।
सिद्ध पंक्ति में रहे विराजित, पूजक के दुख मिट जावे॥

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

प्रशस्ति

क्षेत्र रहा विन्ध्यावली, बिजौलिया है ग्राम।
अहिजपुर अहिच्छत्रपुर, ये दोनों भी नाम॥ १॥
इसके ही इतिहास में, बतलाते विद्वान्।
इसी स्थान पर पार्श्व ने, पाया केवलज्ञान॥ २॥
विवेक सिन्धु की पाँचवीं, शिष्या जो विज्ञान।
अल्पबुद्धि ने भक्ति से, पाने पंचम ज्ञान॥ ३॥
विद्या गुरु आशीष से, रचकर करे प्रणाम।
इस भू पर श्री वीर का, रहे सदा ही नाम॥ ४॥
पार्श्वनाथ के दर्श कर, आह्लादित है चित्त।
मन केकी यह नाच कर, धारे उर में नित्य॥ ५॥
माघ कृष्ण की तिथि रही, नवमी है शनिवार।
वर्द्धमान अतिवीर का, विधान जग में सार॥ ६॥
वीर मोक्ष चालीस है, पाँच बीस सौ जान।
आये प्रभु के द्वार हम, कर्म नाश की ठान॥ ७॥
इसी क्षेत्र पर पूर्ण कर, विधान को मैं आज।
फल में माँगूँ हे प्रभो, मिले आत्म का राज॥ ८॥

श्री सम्मेदशिखर विधान

विधान पीठिका

(ज्ञानोदय)

पञ्च परम गुरु ज्ञान सूरि अरु, विद्या गुरु को नमन करूँ।
शारद माता दीक्षा गुरु जो, विवेक सिन्धु के चरण पड़ूँ॥
कहूँ पीठिका सिद्ध क्षेत्र की, शाश्वत तीरथ जग विख्यात।
सुनो भव्य भवतारक है यह, करो वन्दना शिव का पाथ॥१॥

कहते हैं जिस वनस्पति ने, जन्म लिया इस गिरि राजा।
वो भी शिव का राज करेगी, बनकर जग में कृत काजा॥
इसी तरह जो पशु पक्षी अरु, गाय, भैंस हरि चीता हो।
स्पर्श करेगा तीर्थ क्षेत्र का, सदा रहे भवभीता वो॥२॥

पापी के सब पाप धुलेंगे, पुण्यवान के पुण्य बढ़ें।
तपसी जन के तप वृद्धी हो, निज ध्यानी सुन मोक्ष चढ़े॥
वन्दन का यह शुभ फल सुनकर, करो वन्दना अन्तस से।
भाव विशुद्धी परम बढ़ाकर, छूटो भव के बन्धन से॥ ३॥

तीर्थक्षेत्र के व्रत की विधि को, आगम के अनुकूल सुनो।
उद्यापन अरु फल को भी सुन, व्रत को धारो चित्त गुनो॥
चौबीस कूट के एक एक शुभ, अनशन से यह व्रत होता।
उत्तम मध्यम जघन रीति से, सुख देता है अघ खोता॥४॥

एक वास अरु एक पारणा, मूर्च्छा आरंभ घर तजकर।
जिनमंदिर में रहे करे जिन, पूजन अर्चन मद तजकर॥
सामायिक स्वाध्याय क्षमा अरु, मौन रहे वृष चर्चा में।
तीत करे दिन रात शान्ति से, मात्र जिनेश्वर अर्चा में॥ ५॥

इस विधि उत्तम विधि से ये व्रत, अड़तालिस बस दिवसों में।
होता पूरा भक्तिभाव से, श्रावक मुनि के यह सोहे॥

मध्यम विधि में चौबिस अनशन, जब शक्ती हो तब करना।
निवृत्त होकर पापारम्भ को, कषाय अवश ही तुम तजन॥६॥

जघन्य विधि में एकाशन या, ऊनोदर रस त्याग करो।
नौ दस घंटे पाँच सात या, घंटे मंदिर आप रहा॥
जो ना आवश्यक है घर के, उन सब को तो तजना रे।
मध्याह्न में भी तुम मन्दिर, जाकर प्रभु को भजना रे॥ ७॥

इस विध व्रत को पूरा करके , उद्यापन भी भक्ती से।
करना पूजा विधान मँडाकर, और दान दे शक्ती से॥
चौबिस जन या युगलों को, सम्मेदशिखर ले जाना जी।
तीर्थ कराकर धन को पर के, उपकारों में लाना जी॥ ८॥

घंटा झालर जिन प्रतिमा या, गंधोदक का पात्र सही।
छत्र चमर भामण्डल वेष्टन, चौबिस चौबिस शास्त्र सही।
उपकरणों को दान करो अरु, चार संघ को भोजन भी॥
देकर करना महा महोत्सव, आनन्दित हो दिन रजनी॥९॥

इतनी शक्ती ना हो तो सुन, शक्ति देखकर करना जी।
बिल्कुल शक्ती ना हो तो तुम, दूने व्रत को धरना जी॥
अष्टाह्निक से पर्व दिनों से, कल्याणक की तिथि से ये।
शिखर कूट पर करना प्रारम्भ,चाहे कोई मिति से है॥ १०॥

जाप करो तुम उन उन प्रभु का, जिनका व्रत हो जिस दिन ही।
उसी कूट की इक्किस ग्यारह, माला फेरो उस दिन ही॥
मावस पडवा चौथ नवमी अरु, तिथियाँ जो है हीनाधिक।
और पक्ष जो कृष्ण रहा है, व्रत प्रारम्भ ना करना मित॥११॥

इस विधि व्रत का धारण-पालन, उद्यापन का जो है फल।
जिसकी जितनी श्रद्धा भक्ती, होगी उतना पावे नर॥

सद्य मिलेगी सौख्य शान्ति अरु, दूजे भव में सुर होगा।
कुछ ही भव में मुक्ति कान्त बन, शुद्धातम ही उर होगा॥१२।

श्रेष्ठ मनुज बन चक्रवर्ती महराजा राजा बनता है।
स्वर्ग लोक में इन्द्र बने तब, वश में रहती जनता है॥
इसीलिये ये भव्य जनों तुम, यथाशक्ति यह व्रत धारो।
और करो तुम नित्य वन्दना, आतम में चर भव टारों॥ १३॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

स्थापना

(ज्ञानोदय)

अनादिकाल से सिद्ध क्षेत्र यह, शाश्वत सुन्दर धाम रहा।
अब तक चौबीसों ही जिन ने, भवसागर का पार गहा॥
जैसे खाई बड़ी बड़ी अर, पर्वत भी अति ऊँचे हैं।
तैसे ही प्रभु कर्म नाशकर, बने जगत में सच्चे है॥ १॥

सीसम कैथा जामुन आदिक, गगन चूमते वृक्ष रहे।
निकट लगे यह नभ तो ऐसे, मानो हाथों ऋक्ष गहे॥
तीर्थंकर अरु ऋद्धीधर औ, नेक मुनीश्वर आये थे।
तप अग्नी में विधि ईंधन को, जला मोक्ष को पाये थे॥२॥

(दोहा)

आह्वानन अरु थापना, निकट करन ये काज।
मैं करता बस पावने, मोक्ष-पुरी का राज॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(लय : जहाँ डाल डाल पर..... ।)

क्षीर उदधि के प्रासुक जल की, झारी भरकर लाया।
धारा देकर जन्म नाश हो, विनती करने आया॥
मैं पूजन करने आया।

सम्मेदशिखर शुभ सिद्ध क्षेत्र की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ....।

चन्दन लिपटे सर्प भागते, देख मोर को आया।
त्यों ही चंदन देकर भव का, ताप मिटाने आया॥
मैं पूजन करने आया।
सम्मेदशिखर शुभ सिद्धक्षेत्र की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं ....।

चौखे चौखे तन्दुल चुगकर, थाली भरकर लाया।
अक्षय पद की अतुल भक्ति ले, चरण चढ़ाने आया॥
मैं पूजन करने आया।
सम्मेदशिखर शुभ सिद्धक्षेत्र की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् ....।

हे काम विजेता ! पुष्पों को ले, अर्पण करने आया।
कामवासना कनक कामिनी, इच्छा मारन आया॥
मैं पूजन करने आया।
सम्मेदशिखर शुभ सिद्धक्षेत्र की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं ....।

नैवज लेकर नाना विध के, तुमको देने आया।
क्षुधा वेदना अरु भोगों की, भूख मिटाने आया॥
मैं पूजन करने आया।
सम्मेदशिखर शुभ सिद्धक्षेत्र की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ....।

अंधकार ज्यों सूर्य उदय से, भागा मग भी पाया।
दीपक के मिस ज्योती पाने, चरणों पूज रचाया॥
मैं पूजन करने आया।
सम्मेदशिखर शुभ सिद्धक्षेत्र की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं ....।

चंदन-बूरा कपूर मिश्रित, धूप बनाकर लाया।
जलकर होवे भस्म कर्म की, तुम्हें चढ़ाने आया॥
मैं पूजन करने आया।
सम्मेदशिखर शुभ सिद्धक्षेत्र की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्योऽष्टकर्म दहनाय धूपं ....।

लौंग सुपारी एला भेला, मिष्ट पुष्ट फल लाया।
तुमको भेटे क्योंकी मन में, केवल शिवफल भाया॥
मैं पूजन करने आया।
सम्मेदशिखर शुभ सिद्धक्षेत्र की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलं प्राप्तये फलं ....।

दीप धूप फल अक्षत चंदन, पुष्प चरू फल लाया।
अर्घ बनाकर शाश्वत पद को, पाने अब मैं आया॥
मैं पूजन करने आया।
सम्मेदशिखर शुभ सिद्धक्षेत्र की, पूजन करने आया।
मैं पूजन करने आया॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घं ....।

प्रत्येक अर्घ्य।

प्रति कूटों को भक्ति से, देता हूँ मैं अर्घ्य।
मात्र भावना मम रही, हो मुक्ती संसर्ग॥

१. गौतम गणधर कूट

(गीता) (लय : नवदेवता.....)

जब कोस त्रय का मार्ग तय कर, नाथ गौतम पावते।
तब दर्श मिलते चरण बहुत जो, एक शिल पर राजते॥
हैं गणधरों में प्रमुख गौतम, वीर के इस काल में।
हमने सुपाया धर्म इनसे, इसीलिए यह नाम है॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर कूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

तह पवन शीतल परस मानो, धर्म का ही परस हो।
मिटती भवोदधि भ्रमण की वह, टेव जब पद दरस हो॥
सुन्दर मनोहर उच्च मन्दिर, शिखर युत इह सोहता।
मैं ऋद्धिधर सब गणधरों को,अर्घ दे अघ खोवता॥२॥

ॐ ह्रीं वृषभसेनादि सर्वगणधरेभ्यो नमः अर्घं ....।

जो वेदज्ञाता गृहित मिथ्या दृष्टि जग में ख्यात थे।
उन मानथम लख वीर का दी ना दरप को थाम है॥
औ फिर बने वे शिष्य गणधर, प्रथम पद को पाय के।
वे पूर्ण ज्ञानी दीप उत्सव,अर्घ दे हम पाद में॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधरेभ्यो नमः अर्घं ....।

२. ज्ञानधर कूट

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः।

ये कुन्थु आदि क्षुद्र जैसे, जीव के भी रक्षका।
औ पूर्ण हिंसा त्याग के ये, पाप के हैं भक्षका॥
सम्मेदगिरि पे आय के गुरु, धर्म सागर बन सके।
ये अर्घ दे हम भक्ति से नित, आपदा से बच सके॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

गुरु ज्ञानधर ये कूट मानो, ज्ञान को ही धारता।
ये पूज्य पहला पूजकों के, पाप को भी वारता॥

मुझे ज्ञान दे दो पाँचवा बस, मात्र ये ही माँगता।
इस कूट को लख मौत का भय, शीघ्र डर के भागता॥२॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानधरकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

ये छ्यानवे है कोड़कोड़ी, और कोड़ी छ्यानवे।
अरु तीस दो है लाख छ्यानव, ही सहस को जान ले॥
ब्यालीस ऊपर सात सौ है, औ असंख्यों सिद्ध है।
रे ! एक कोड़ि प्रोषधों का, फल मिले वृष वृद्ध है॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि षड्नवति कोड़ाकोड़ी षड्नवति कोड़ी द्वात्रिंशत् लक्ष षड्नवति सहस्त्रसप्तशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

३. श्री मित्रधर कूट

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

नाथ नमि को माथ नमि के, मैं करूँ नित वन्दना।
वन्दना का फल मिले बस, होय अब तो बन्ध ना॥
चिह्न इनका कमल है ये, कमल सम ही मनहरा।
आपके दरशन किये तो, काम मेरा सब सरा॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

शुभ मित्रधर यह कूट कहता, मित्रता सब जीव से।
तू कर सदा ही आत्म से भी, बच सके भव पीव से॥
ये कुन्थु अर के बीच में है, दर्श कर कृत कृत्य तू।
बस हो सकेगा शुद्ध आतम, ना बने फिर भृत्य तू॥२॥

ॐ ह्रीं श्री मित्रधरकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

अरब इक है कोड़कोड़ी, नव शतक हैं ऋषिवरा।
लख पितालिस सात सहस ब्या-लीस ने है शिववरा।
औ कोड़ि प्रोषध फल कहा है, कूट वन्दन का सुनो।
चारित्र धर के भवदधि में, जन्म ना लो तुम पुनो॥३॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि नवशतक कोड़ाकोड़ी एक अरब पञ्चचत्वारिंशत् लक्ष सप्तसहस्त्र द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

४. श्री नाटक कूट

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः।

ये तीर्थंकर है ठारवें ठा रह सहस शुभ शील को।
ये धारते रत आत्म में नित, मेटते भव पीर को॥
आये शिखर सम्मेद पे ये, पूर्ण विधि को मेटने।
मैं भव भ्रमण के नाशने को, अर्घ लाया भेंट में॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

तू ना अटक इस लोक में, मानों कहत यह कूट है।
सो नाम सार्थक दिव्य नाटक, अर्चते अघ टूट है॥
ये मित्रधर अरु सम्बलों के, बीच में ही शोभता।
रे ! पूज कर्त्ता के सदा ही, बीज सुख के बोवता॥२॥

ॐ ह्रीं श्री नाटककूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

है कोड़ि न्यानव लाख न्यानव, सहस न्यावन अर्चना।
मम शतक न्यानव और न्यानव, के पदों में अर्पणा॥
है कोटि छ च्यानव प्रोषधों का, फल कहा है सर्वदा।
जो करत नित आ पूज इसकी, होत जीवन अर्थदा॥३॥

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्रादि नवनवति कोड़ी नवनवति लक्ष नवनवति सहस्त्र नवनवति शतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

५. सम्बल कूट

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

ये मल्ल है जो मोह उसके, मारने में शूर थे।
मम मल्लि स्वामी अष्ट विधि के, कर्म को भी चूरते॥
है कलश मंगल चिह्न इनका, ब्रह्मचारी-बाल हैं।
शुभ अर्घ देते भक्ति से हे, नाथ! हम तो बाल हैं॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

ये नाम सम्बल कूट जिसका वो जगत में ख्यात हैं।
इस कूट के द्वय चरण में, नमता निरन्तर माथ ये॥

मैं पावने शुभ श्रेष्ठ बल को, आपके पद आऊँगा।
अरु श्रेष्ठ बल को पाय के मैं, मोक्ष पद को पाऊँगा॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सम्बलकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

कोटि छ च्यानव ज्येष्ठ मुनि का, आय चेतन चेतना।
फिर बनाकर मोक्ष पद जो, शाश्वता है केतना[१]॥
सुन असंख्यों बलवतों का, आत्म को नित ध्यावना।
है कोटि छ्यानव प्रोषधों का, फल कहा जिन पाप ना॥३॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि षण्णवति कोटि मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

६. संकुल कूट

ॐ ह्रीं श्री श्रेयोनाथ जिनेन्द्राय नमः।

मैं श्रेय की निःश्रेय की अति श्रेय की अर्चा करूँ।
जिनदेव की सुरसेव की, भव खेव की चर्चा करूँ॥
ये नाथ सन्मति श्रेष्ठ[१] मति को, देत है नौ खेत है।
हे पूज्य ! तुमको अर्घ देना, मोक्ष का ही हेत है॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री श्रेयोनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

ये कूट संकुल श्रेय का है, श्रेय का ही शासका।
ये मल्लि प्रभु के निकट सुन लो, भव्य के अघ नाशका॥
जो लोक में गुण संकुला है, पूज करके राजते।
उसके कहो फिर कर्म बंधन, क्यों नहीं है भागते॥२॥

ॐ ह्रीं श्री संकुलकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

छ च्यानवे है कोड़कोड़ी, कोड़ी छ च्यानव लाख भी।
छ च्यानवे है नव सहस अरु, पञ्च शत ये साथ भी॥
और सुन ब्यालीस ऊपर,ऽसंख्य मुनि सत्यार्थ है।
रे फल रहा है, कोटि प्रोषध, अर्घ दे मोक्षार्थ ये॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयोनाथ जिनेन्द्रादि षण्णवति कोड़ाकोड़ी षण्णवति कोड़ी षण्णवति लक्ष नवसहस्त्र पञ्चशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

१. घर

७. सुप्रभ कूट

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(ज्ञानोदय)

पुष्पदन्त पर से पर रहते, पुण्य पाप से दूर रहे।
सुविधि श्रेष्ठ शम समता रस अरु, परम शान्ति के पूर कहे॥
नाच नाच कर नम नम नमता, नवमें तुम ही नाथ परम।
अर्घ अल्प है आप अधिक है, फिर भी लाया साथ दरब॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

हाँप गया हूँ चढ़ते चढ़ते, ऊँचे सुप्रभ कूट विमल।
श्रेष्ठ प्रभा यह ऐसी लगती, मानो आई छूट सबल॥
श्वेत चरण ये कहते सुन लो, वर्ण रहा प्रभु श्वेत गति।
श्वेत भाव ये अर्घ चढ़ा तुम, भाव बनाओ श्वेत मति॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सुप्रभकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

कोड़ाकोड़ी एक निन्यानव, लाख सहस है सात मुदा।
सात शतक अरु अस्सी मुनिवर, मोक्ष गये हैं साथ सदा॥
एक कोटि है प्रोषध का फल, वन्दन का सुन श्रेय सहा।
और असंख्यों मुनि को देता, अर्घ बनाकर प्रेय यहाँ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्रादि एक कोड़ाकोड़ी नवनवति लक्ष सप्त सहस्त्र सप्त शतक अशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

८. मोहन कूट

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

पद्मप्रभ जी पद्म समा ही, रक्त वर्ण के तीर्थंकर।
हित करते हैं तीन लोक का, अतः कहाते क्षेमंकर॥
अर्घ चढ़ाने से चरणों में, क्या मिलता है कौन कहे ?।
भुक्ति मुक्ति सब मिलती उसको, इसीलिए तव चरण गहे॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

मोह नहीं था शेष तथापि, चार अघाती घातन को।
कूट सु मोहन आये जिन जी, मेटन भव के मातम को॥

तभी हुआ यह नाम सु सार्थक,भवि के मन को भाया था।
पूजन से जो आनन्द मिलता, कौन कहाँ कह पाया था॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री मोहन कूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

कोड़ि निन्यानव लाख सतासी, सहस तयालिस ज्ञानीश्वर।
सात शतक अरु सत्तावन है,असंख्यात ही मुक्तीश्वर॥
सुविधिनाथ अरु मुनिसुव्रत के,बीच रहा यह कूट महा।
श्याम वर्ण के चरण पूज का,शुभ फल कोटी वास कहा॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभ जिनेन्द्रादि नवनवति कोड़ी सप्ताशीति लक्ष त्रिचत्वारिंशत् सहस्र सप्त शतक सप्तनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

९. निर्जर कूट

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

मुनिवर के सब श्रेष्ठ व्रतों को, पालन कर ये सुव्रत जी।
देवों के भी देव बनन को, किया अक्ष को संवृत जी॥
सुव्रत जी को जो नित पूजे, होता बीसो बीस अरे।
अर्घ चढ़ा दे जो भावों से,झट से उसकी रीस[१] टरे॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डितश्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

सुन्दर निर्जर कूट सदा ही, धरती पर जयवन्त रहे।
इसके दर्शक पूजक वन्दक,पापों से भयवन्त कहे॥
चन्द्रप्रभ के दर्शन करने, जाने का यह मारग है।
सुरनर किन्नर पूजन करके,बनते भव के हारक हैं॥२॥

ॐ ह्रीं श्री निर्जर कूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

कोड़ाकोड़ी निन्यानव है, कोड़ि निन्यानव मुनिवर हैं।
लाख निन्यानव शतक नोय है,और निन्यानव अघहर हैं॥
एक कोटि है प्रोषध का फल,गाया जिन ने आगम में।
और असंख्यों अर्घ चढ़ाकर, पा जाऊँ निज आतम मैं॥३॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि नवनवति कोड़ाकोड़ि नवनवति कोड़ि नवनवति लक्ष नवशतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

१. क्रोध

१०. ललित कूट

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

चन्द्रप्रभ जी चन्द्र चिह्न अरु, चन्द्र समा ही चन्दन है।
चतुर चतुर नर छम छम छम छम,नृत्य करे नित वन्दन है॥
चम-चम करता चाँदी का ये, थाल चाव से भरता हूँ॥
चारु चन्द्र की चर्चा करके,चतुर्गति नहिं भ्रमता हूँ॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

ललित छटा युत ललित कूट की, सबसे कठिन चढ़ाई है।
मन होता है ना जाएँ पर,इसकी सुनी बढ़ाई है॥
काले नीले सफेद बादल,घुमड़-घुमड़ कर यूँ कहते।
धीरे जल्दी थकते रुकते,वन्दन कर लो अघ भगते॥२॥

ॐ ह्रीं श्री ललितकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

नव सौ है चौरासी अरबा,द्वादश कोड़ी लाख असी।
चौरासी है सहस पाँच सौ,पञ्चानव है परम ऋषी॥
और असंख्यों कूट बसा जो, एक तरफ से मोक्ष गये।
छ्यानव लाखों उपवासों का,फल है विधि को शोख गये॥३॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रादि नव खरब चतुरशीति अरब द्वादश कोड़ि अशीति लक्ष चतुरशीति सहस्त्र पञ्चशतक पञ्चनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

११. कैलासगिरि

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

वृषभ देव का वृषभ चिह्न है,वृष के ये भरतार रहे।
आदिनाथ जी कर्म नाश कर, मोक्ष महल में सार गहे॥
धर्म दया सुख करुणा केअरु, श्रेष्ठ गुणों के सागर हैं।
अर्घ चढ़ाकर भक्त सिन्धु से, भरने आया गागर है॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

केला सम कैलाशनाथ का, इष्ट मिष्ठ ही जीवन है।
बाल वृद्ध को तभी आपका,जीवन ही संजीवन है॥

अष्टापद है जिसके चारों,ओर सीढ़ियाँ आठ रही।
मोक्ष वृषभ का अर्घ चढ़ाऊँ,देवे शिव का ठाठ सही॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टापद सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अर्घं ....।

प्रथम तीर्थकर इसी कूट से,जायेंगे अरु मोक्ष गये।
हुण्ड काल के कारण ही तो,अष्टापद वृषभेश गये॥
दस सहसों मुनि वृषभ देव के, साथ निजातम लीन हुये।
जिनने शरणा पाया तुमरा,वो भी आतम चीन गये॥३॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि दस सहस्र मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

१२. विद्युत्वर कूट

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(ज्ञानोदय)

शीतल सम औ जग में शीतल,होगा नाहीं कोइ यहाँ।
इसीलिए तो महिमा गाने, में समरथ है कौन कहाँ॥
चन्दन मुक्ता चन्द्र सभी ये, फीके ही पड़ जाते हैं।
अर्घ चढ़ाते शीतल को जो, शीतल झट बन जाते है॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

विद्युत सम ही चंचल देखो, ध्वजा यहाँ फहराती है।
भव भोगों की चंचलता को, बतला पास बुलाती है॥
छुपा हुआ यह कूट छूटता,यात्री फिर से लौटत हैं।
आकर देवे अर्घ यहाँ जो, उसके अघ भी छोंटत हैं॥२॥

ॐ ह्रीं श्री विद्युतवर कूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

ठारह कोड़ाकोड़ि बयालिस, कोटि लाख बत्तीस कहे।
सहस बयालिस शतक नोय है, पाँच गये शिव ईश भये॥
विद्युत् सम भव भोग देह को, देख असंख्यों शीश गये।
प्रफुल्लित हो वन्दन का फल,कोटि वास का धीश कहे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि अष्टादश कोड़ाकोड़ी द्विचत्वारिंशत् कोड़ी द्वात्रिंशत् लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्त्रनवशतक पञ्च मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

१३. स्वयंप्रभ कूट

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(नरेन्द्र)

नन्तकाल की पर्यायों को, नन्त गुणों अरु द्रव्यों।
नन्तनाथ जी एक समय में, जानत अचरज है क्यों ?॥
तीर्थंकर हैं चौदहवें ये, चौदह गुण के पार।
अर्घ चढ़ा दे तो फिर क्यों ना, होवे भव से पार॥ १॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

आप स्वयंभू होने से ही, स्वयंप्रभा पर आये।
कूट नाम यह सार्थ हुआ तब,निज में निज को ध्याये॥
ऊँचा है यह मानो लगता, बहुत पास में होय।
लेकिन चलते थकते पाते, प्रभु के चरणा दोय॥२॥

ॐ ह्रीं श्री स्वयंप्रभ कूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

छ्यावन कोड़ाकोड़ी सत्तर, कोटि लाख है सत्तर।
सत्तर सहसो सात शतक मुनि, गये जगत के उत्तर॥
एक कोटि है प्रोषध का फल, वन्दन का सुन भाई।
भव्यों शिर को टेको तो तुम, बन जाओ शिव साँई॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि षड्नवति कोड़ाकोड़ी सप्तति कोड़ी सप्तति लक्ष सप्त सहस्त्र सप्त शतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

१४. धवल कूट

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः।

संभव प्रभु की भक्ति से तो, सब कुछ जग में संभव ।
तीन रतन से शोभित तीजे, तीन लोक का वैभव॥
हम आये हैं अर्चन करने, अड़चन अब ना शेष।
जब तक शिवसुख पाएँ ना हम, मिले दिगम्बर भेष॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

धवल भाव से धवलिम बनने, धवल कूट पर आए।
संभव सं सुख सुरभित सुन्दर, सार स्वरूपों भाये॥

भक्तिभाव से भव हरने को, भविजन पूजन आये।
अर्पण करते अर्घ अभी हम, अविचल पद को चाहे॥२॥

ॐ ह्रीं श्री धवलकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

कोड़ाकोड़ी नव है बारह, लाख मुनीश्वर शीश।
सहस बयालिस पाँच शतक है, सिद्ध भये जग ईश॥
घननं घननं घंटा देकर, तननं तननं ताल।
वन्दन का फल ब्यालिस लाखा, कहते जिनवर पाल॥३॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्रादि नव कोड़ाकोड़ि द्वादश लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्त्र पञ्चशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

१५. चम्पापुर मन्दारगिरि

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।

वसुसुत है ये वासुपूज्य जी, वासव से भी पूज्य।
चम्पापुर में चेतन ध्याया, तुमसे ना हो दूज्य॥
तरण तुम्ही हो तरणी भी हो, तैर गये भव तीर।
पावन पूत पवित्र प्रभू जी, पार करो हर पीर॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

परम कल्याणक पाँचों पाये, पञ्चम पद के काज।
पाँच पाद युग बने तभी तो, श्रेष्ठ गिरी पर आज॥
जलमंदिर के पहले प्रभु का, कूट यहाँ है शोभित।
हरी भरी में भैंसे चर इह, वन्दन करती मोहित॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अर्घं ....।

मंदिर गिरी है चम्पापुर में, वासुपूज्य जिनदेवा।
शिव ललना को वरने वाले, मेरे प्रभु भव खेवा॥
एक सहस मुनि मोक्ष हेतु ही,आये निर्जन देखा।
ऊँचा पर्वत मानो शिव का, देता है संदेशा॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि एक सहस्त्र मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

१६. आनन्द कूट

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः।

चौथे युग में चौथे जिन ने, दीना शिव का मारग।
मूल मारने मग दर्शक को, अर्घ चढ़ाऊँ आकर॥
अभिनन्दन जी अभिनन्दन कर, नन्त गुणों में राज।
नन्दन पाने ज्ञानेश्वर जी, नमता शिव के काज॥ १॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

आनन्द पाने आनन्द कूटों, पर मैं आऊँ वन्दन।
वन्दन के बिन कहो जगत में, कैसे कटते बन्धन॥
छोटे-मोटे बन्दर मानो, कूद-कूद कर बोले।
अर्घ चढ़ाकर पूज्य कूट को, अब तो कृतकृत हो ले॥२॥

ॐ ह्रीं श्री आनन्दकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

कोड़ाकोड़ी बत्तर सत्तर, कोड़ी सत्तर लाखा।
सहस बयालिस सात शतक मुनि, और असंख्ये भाखा॥
वासुपूज्य का वन्दन करके, फिर पाते आनन्दा।
कूट लाख है प्रोषध का फल, वन्दन से हो नन्दा॥३॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि द्वासप्तति कोड़ाकोड़ी सप्तति लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्त्र सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

१७. सुदत्तवर कूट

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः।

वज्रदण्ड है चिह्न वज्र सम, देह यष्टि है पुष्ट।
वृष भर्त्ता ये वृष कर्त्ता है, नमते भगते दुष्ट॥
भिन्न-भिन्न है द्रव्य भिन्न ही, उनके माने धर्म।
धर्मनाथ ने सर्व जानकर, बतलाया शिवशर्म॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

सुदत्तवर ये श्रेष्ठ - श्रेष्ठ को, देने में परवीणा।
अहो नाम है सार्थ तभी तो, धर्मनाथ अघहीना॥

उच्च चढ़ाई जलमन्दिर की, चढ़ते बढ़ती हॉफ।
पास कूट है गौतम के यह, नमते मिटते पाप॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सुदत्तवर कूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

कोड़ाकोड़ि उनीस कहे है, कोड़ि उनीसा बुद्ध।
लख नव-नव ही सहस सात सौ, पञ्चानव है शुद्ध॥
हुए सिद्ध है वन्दन का फल, एक कोटि उपवासा।
मिलता है अरु शीघ्र मिले फिर, सिद्ध शिला का वासा॥३॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि एकोनविंशति कोड़ाकोड़ी एकोनविंशति कोड़ी नव लक्ष नव सहस्त्र सप्त शतक पञ्चनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

१८. अविचल कूट

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

सुमतिनाथ जी सुन्दर मति से, सुन्दर जीवन स्त्रष्टा।
श्रेष्ठ बुद्धि दो हमने ईश्वर, सहे जगत में कष्टा॥
कर्म नहीं है शर्म श्रेष्ठ है, पञ्चम प्रभु में ढेर।
अर्घ चढ़ाकर अब तो भव को, भविजन झट से तेर॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

अविचल कूटों पर अविचल ही, पद पाने मुनि आये।
इच्छा बिन भी योग रोधने, जिनवर ध्यान लगाये॥
कण-कण-कण है पूज्य यहाँ का, पूज्य[१] पूजता जो जन।
इसीलिए तो अर्घ बनाकर, लाया चरणों पावन॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अविचलकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

कोड़कोड़ि चौरासी कोड़ी, लाख बहत्तर जानो।
सहस इक्यासी सात शतक अरु, इक्यासी भी मानो॥
बत्तिस लाखा नौ करोड़ है, प्रोषध फल इह वन्दन।
करो वन्दना भाव भक्ति फिर, बचे कहाँ भव बन्धन॥३॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि एककोड़ाकोड़ी चतुरशीति कोड़ी द्वासप्तति लक्ष एकाशीति सहस्त्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

---

१. आदरणीय

१९. शान्तिप्रभ कूट

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

चक्रवर्ती अरु कामदेव पद, छोड़ धर्म के चक्री।
हुए सुशोभित ऐसे जिनके, आगे लज्जित शक्री॥
शान्तिनाथ यह नाम सार्थ वृष, शान्ति ध्वजा फहराई।
परम शान्ति में लीन आत्म में, पाई है गहराई॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

शान्ति प्रभा यह कुन्द प्रभा है, कूट निराला देख।
महावीर अरु सुमतिनाथ के, बीच निरख निज पेठ॥
उच्च नीच नहिं नही चढ़ाई, ये है दीन दयाला।
मोक्ष गये है इह आकर के, वृद्ध बाल को पाला॥२॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिप्रभकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

कोड़ाकोड़ी नव है नव ही, लाख रहित जो पाप।
नव ही सहसा नव ही शतका, और निन्यानव साफ॥
और असंख्यों जित अक्षों ने, किया निजातम पान।
एक कोटि प्रोषध का फल है, अर्घ चढ़ाऊँ आन॥३॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्रादि नव कोड़ाकोड़ी नव लक्ष नव सहस्र नव शतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

२०. पावापुर पद्म सरोवर

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

(गीता)

वीर का है चिह्न शार्दुल, सिंह सम ही वीर थे।
क्षेत्र पावापुर रहा जह, मोक्ष पाया धीर ने॥
नित्य निरंजन आत्म में तब, लीन हो अक्षय बने।
हम अर्घ दे महावीर को अब, मोक्ष पावे शिव[१] बने॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

पावापुरी के पद्म सर के, मध्य में यों राजते।
मानो नखत के बीच चन्दा, देख तम भी भागते॥

१. सिद्ध भगवान

जब हवन में पशु होम करके, पाप करते जीव थे।
तब आप आये मेटने को, सर्व जन की पीव थे॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रोभ्यो नमः अर्घं ....।

शांतिप्रभ के पास प्यारा, वीर जिन का कूट है।
ये तीर्थकर जो अंत वाले, आय इह से छूटते॥
लेकिन रहा है काल हुण्डा, क्षेत्र पावापुर बना।
साथ छत्तिस साधु भी शिव, पाय भोगे सुख घना॥३॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रादि छत्तीस मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

२१. प्रभास कूट

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

सुपार्श्व के ये पार्श्व देखो, विमल निर्मल श्रेष्ठ है।
इसीलिए तो सार्थ नामा, पास रहते जेष्ठ है॥
वर्ण नीला आपका, मानो रहे हो मेघ दल।
आपके पद पूज से हम, पा सके वह नन्त बल॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

प्रभास है सूपार्श्व जिनका, कूट को मम नमन हो।
अर्घ देता आपको अरु, चाहता शिव गमन हो॥
धूल पद की दूर मिट्टी, भी वहाँ की रोग को।
नाशती है सौख्य देती, वो दुखी हो चोर हो॥२॥

ॐ ह्रीं श्री प्रभासकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

उनचास है सब कोड़कोड़ी, कोटि चुरासी सार है।
लाख बहत्तर सहस सातो, सात शतक भव पार है॥
और बयालिस ज्ञान पाकर, बना विधी को दास है।
बत्तीस कोड़ि वास फल को, कहत जिनवर खास है॥३॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि एकोनपञ्चाशत् कोड़ाकोड़ी चतुरशीति कोड़ी द्वासप्तति लक्ष सप्त सहस्र सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

२२. सुवीर कूट

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।

हे विमल गुणमय! विमल देही! विमल ही तव ज्ञान है।
आता शरण में आपके जो, पूर्ण भरता भान से॥
हो मात्र तेरा वास उर, जब तक रहूँ इस लोक में।
मैं अर्घ देकर चाहता बस, वास हो निजलोक में॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

ये कूट सुविर है विमलस्वामी, वीरता के पार है।
ये पास में सूपार्श्व के हैं, दर्श जग में सार है॥
विद्युत सहित ये बरसते घन, गरजते यों बोलते।
तुम अर्घ दे दो भाव होगें, श्रेष्ठ ही नित तोल के॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सुवीरकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

सत्तर कहे है कोड़कोड़ी, लाख षष्ठी सहस छे।
ब्यालीस ऊपर सात सौ के, मोक्षपुर में बसत है॥
और असंख्यों ध्यान दोनों, भव-भ्रमण के हेतु जो।
छोड़ करके शिव गये हम, अर्घ दे शिव केतु हो॥३॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि सप्तति कोड़ाकोड़ी षष्ठी लक्षषष्ठी सहस्त्र द्विचत्वारिंशत् सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

२३. सिद्धवर कूट

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।

हे जन्म मृत्यु अक्षजेता, नाथऽजित ही शरण है।
हे मोक्ष मग के जेष्ठ नेता!, चरण तारण तरण है॥
तुम छत्र चामर पुष्प वृष्टि, दुन्दुभि से राजते।
अरु एक सहस वसु लक्ष्य तन में, अर्घ दे हम आज ये॥ १॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अजितनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

इस कूट से जब अजित जिन ने, सिद्धि पाई श्रेष्ठ है।
तब नाम सिद्धवर कूट पूजे, सगर जैसे जेष्ठ है॥
यह सुविर से जब उतरते अरु, फिर चढ़े तब आवता।
हैं नेमि के ये पूर्व में मैं, अर्घ दे गुण गावता॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

मुनि अरब इक चौरसि कोड़ी, लाख पितालिस मुनिवरा।
इन परम विरागी मौनधर ने, मोह तज कर शिववरा॥
बत्तीस कोटि वास का फल, वन्दना का जिन कहे।
हम वन्दना कर अर्घ देकर, मोक्ष लक्ष्मी बस चहे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि एक अरब चतुरशीति कोड़ी पञ्चचत्वारिंशत् लक्ष मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

२४. गिरनार गिरी

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

ये आत्मरस के रसिक नेमी, धर्म के भी नेम है।
इन चरण युग के पूजकों के, नित्य होते क्षेम है॥
ये ब्रह्मचारी बाल है, बालक समा ही निर्मला।
मैं अर्घ देकर नाथ अब तो, बन सकूँ बस गतमला॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

राजुल सती सम नार तजकर, नेमि जा गिरनार है।
गिरि ऊर्जयंत शैलेश पे शैलेश शिव भरतार है॥
मम हो गया पावन पवित मन, अर्घ दे इन पाद में।
भव-भव रहूँ बस आप पद में, मात्र मेरी साद ये॥२॥

ॐ ह्रीं श्री ऊर्जयंत सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अर्घं ....।

शुभ चरण युग है तीन जह पर, कूट अजित के पास है।
अनिरुद्ध शंबू किशन-सुत[१] के, जन बताते खास हैं॥
प्रभु नेमि के सुन संग बत्तर, कोड़ि सत सौ[२] साथ थे।
कालिख मिटाई मोह की इन, अर्घ देते दास ये॥३॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शंबू प्रद्युम्नकुमारादि द्वासप्तति कोड़ी सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

---

१. प्रद्युम्नकुमार
२. सात सौ

२५. सुवर्णभद्र कूट

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

हम पार्श्व के हैं भक्त निशदिन, पार्श्व को ही पूजते।
आप बिन हे नाथ हमरे, पाप कैसे धूजते॥
यह सत्य है कि दस भवों तक, आप समता धारके।
सर्व विधि को नाश करके, मोक्ष पहुँचे पार है॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं ....।

शुभ कूट सुवरणभद्र प्यारा, उच्च सबमें श्रेष्ठ है।
प्रभु पार्श्व का भी मोक्ष पाना, रे जगत में जेष्ठ है॥
यह वन्दना की पूर्णता का, देख उत्तम चिह्न है।
मम शुद्ध पावन भाव में भी, हेतु उत्तम भिन्न है॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णभद्र कूटेभ्यो नमः अर्घं ....।

ये कोड़ि ब्यासी लाख है, चौरासि मुनिवर जानिये।
सहस पैतालिस सात शतक अरु, बय्यालिस भी मानिये॥
सुन कोटि षोडस वास का फल, वन्दना का जान ले।
अर्घ दे दे आत्म अब तो, मोक्ष की भी ठान ले॥३॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि द्वयशीति कोड़ी चतुरशीति लक्ष पञ्चचत्वारिंशत् सप्तशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं ....।

सम्मेदशिखर की तलहटी में स्थित जिनालयों को अर्घ

(ज्ञानोदय)

कल्याण निकेतन पार्श्वनाथ का, दूजा मंदिर मदहर है।
रहे जिनालय जहाँ बहत्तर, शिखर मध्य अति मनहर है॥
वृषभ अणिन्दा पार्श्वनाथ अरु, संग्रह आलय के अन्दर।
पार्श्व चन्द्र के सन्मति आश्रम, में राजित है दो मन्दर॥१॥

ॐ ह्रीं कल्याणनिकेतनादि जिनालयस्थित सर्वजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं ....।

(दोहा)

आश्रम व्रति के दो रहे, पार्श्व शान्ति के जान।
त्रीयोगी में पार्श्व को, अर्घ दऊँ पद आन॥२॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वशान्तिनाथ जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं ....।

(ज्ञानोदय)

तेरहपन्थी कोठी में श्री, चन्द्र प्रभ का मनमोहक।
देवालय है श्वेत बिम्ब है, दिखलाता है शिव का मग॥
सुविधि पार्श्व के अजित शान्ति के, नन्दीश्वर के हैं प्यारे।
सहस कूट अरु चौबीसी का, नेमिनाथ के दो न्यारे॥
चन्द्र पार्श्व दो गन्धकुटी में, शान्तिनाथ का इक मन्दिर।
चार जिनालय कटक विराजे, पूजन करते हम अन्दर॥
मानस्तम्भ हैं ठीक बीच में, चन्द्र प्रभ का है ऊँचा।
अर्घ चढ़ावे हम सब मिलकर, जीवन होवे बस सच्चा॥३॥

ॐ ह्रीं तेरहपंथी कोठी स्थित सर्व जिनालयेभ्यो नमः अर्घं ....।

आदि शान्ति अरु पार्श्वनाथ है, पार्श्व शान्ति है पार्श्व जिनेश।
पुष्पदन्त का वृषभनाथ का, आदि जिनेश्वर है वृषभेश॥
मानस्तम्भ है पार्श्वनाथ है, पार्श्वनाथ है बाहुबली।
बीसपन्थी में ये सब मन्दिर, अर्घ चढ़ाऊँ सौख्यगली॥४॥

ॐ ह्रीं बीसपंथी कोठी स्थित सर्व जिनालयेभ्यो नमः अर्घं ....।

बीसपन्थी के ठीक सामने, मध्यलोक की रचना है।
पार्श्वनाथ है बहुत बड़े तह, पूजन कर भव बचना है॥
उसके आगे बाहुबली का, चौबीसी भी सुन सोहे।
समवशरण के मंदिर ऊपर, भूत चौबीसी मन मोहे॥
तीस चौबीसी का जो मंदिर, उसकी महिमा कौन कहे।
अर्घ चढ़ाकर हम तो केवल, भवसागर का पार चहे॥५॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकादि जिनालयस्थित सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घं ....।

(दोहा)

पार्श्वनाथ महावीर है, कुण्ड चौपड़ा देख।
बाहुबली भी राजते, अर्घ दऊँ शिर टेक॥ ६॥

ॐ ह्रीं चौपड़ाकुण्डस्थित श्री पार्श्वनाथादि सर्व जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं ....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। (१०८ बार)

जयमाला

(दोहा)

सम्मेदाचल क्षेत्र की, जो है सबसे उच्च।
जयमाला गाऊँ अबे, पाने को सुख सच्च॥१॥

(पद्धरी)

जय क्षेत्र रहा यह न्यारा है, जय लगता सबको प्यारा है।
जय शेर व्याल अरु व्याघ्र सभी, जय मिल जाते हैं कभी-कभी॥२॥

जय फिर भी भविजन ना डरते, जय प्रभु का सुमरण कर बढ़ते।
जय झाड़ झाड़ियाँ घने घने, जय शोभा कहते नहीं बने॥३॥

जय खड़ी चढ़ाई रही कहीं, जय रहा ढलाना वहीं कहीं।
जय बढ़ती हाँफी जन चढ़ते, जय घुटने भरते जब उतरे॥४॥

जय फिर भी श्रावक बढ़ते हैं, जय उच्च चढ़ाई चढ़ते हैं।
जय मदमाते गज यहाँ रहे, जय नाम तभी सम्मेद कहे॥५॥

जय नाला गन्धर्व सीता है, जय इन सब ने मन जीता है।
जय कुण्ड चौपड़ा तह प्रसिद्ध, जय पार्श्वनाथ है यहाँ सिद्ध॥६॥

जय गौतम स्वामी प्रथम कूट, जय ज्ञान मित्रधर तहा कूट।
जय फिर तो नाटक कूट रहा, जय संबल संकुल कूट रहा॥७॥

जय सुप्रभ उसके आगे है, जय मोहन में मन पागे है।
जय निर्जर है फिर ललित कूट, जय वृषभ दरश से पाप छूट॥८॥

जय विद्युत्वर अरु स्वयं प्रभा, जय धवल कूट की धवल प्रभा।
जय वासुपूज्य अरु आनन्द है, जय कूट सुदत्ता नन्दन दे॥९॥

जय अविचल है फिर कुन्दप्रभा, जय महावीर की शान्त सभा।
जय कूट प्रभासा सुविर कूट,जय दरश करो-अघ जाय छूट॥१०॥

जय कूट सिद्धवर अजितनाथ, जय नेमिनाथ के चरण माथ।
जय सुवर्णभद्र अरु एक गुफा,जय दर्शन हो फिर एक दफा॥११॥

जय एक बार भी नमन करे, उनचास भवों में मोक्ष वरे।
जो नरक ढोर में जाने का, यह किया बन्ध भव पाने का॥१२॥

यदि बाँध चुका है तो सुनले, वह दरश करे नहिं पर्वत के।
ये रावण श्रेणिक और कई, इह आकर हारे सुनो सभी॥१३॥

इन करी प्रदक्षिण नीचे से, औ आये फिर फिर खीचे से।
जय अब भी जाते बहुत लोग, जय उठकर तजकर शीघ्र भोग॥१४॥

तह कोई मधुवन रुकता है, तो कोई को नहि दिखता है।
तो कोई आ बीमार पड़े, तो कोई पर्वत नहीं चढ़े॥१५॥

वह चाहे जाऊँगा वन्दन, पर जाय सके ना हो क्रन्दन।
जो पुण्यवान है निकटभवि, वो दरशन पाता शिखर रवि॥१६॥

हे नन्त नन्त सब चौबीसी, इह मोक्ष गयी अरु जायेगी।
सुन और अनन्तों मुनिवर जी, ये शुद्धातम को भजकर ही॥१७॥

जय पाकर निज के आनन्द को, जय शीघ्र बने शिव नन्दन वो।
ज्यों देख शेर को भगते गज, त्यों वन्दन करते मिटते मद॥१८॥

इन गगन चूमते शिखरों पर, है ध्यान लगाया तज के घर।
वे आकिंचन बन इसीलिए, है पाया शिव का वैभव ये॥१९॥

इक निर्धन बुढ़िया वन्दन को, जय गयी ज्वार ले चन्दन हो।
वह छुपकर पर्वत पार गयी, वह माने जीवन सार यही॥२०॥

वह कूट कूट पर नमन करे, जय पुलकित होकर गमन करे।
तब देवों ने उस भक्ति देख, जय अतिशय कीने तहाँ नेक॥२१॥

जय ज्वार बनाई मोती सी, वह लगती सुर की ज्योती सी।
जय भक्त लालमन इसी भाँति,जय चला पूजने शिखर माटि॥२२॥

जब ध्यान लगाने मधुवन में, वह बैठा मानो निज मन में।
सुन तब आया इक नागराज, अरु काटा तज के सभी काज॥२३॥

जय सर्प काट के यह मुझको, जय कहता मानो रुको रुको।
मैं वन्दन को ना जाने दूँ, तब सेठ सोचता मन में यूँ॥ २४॥

मैं नहीं उठूँ मैं नहीं हिलूँ, मैं नहीं चलूँ मैं नहीं खिलूँ।
जय जब तक ना आ सर्प वही, इस विष को चूसे नहीं नही॥२५॥

तब इक दो दिन तो निकल गये, जय फिर तो मन आनन्द गहे।
सुन क्यों की वो ही सर्प वहाँ, जय दिखा आवता अहा-अहा॥२६॥

वो आया आकर विष चूसा, अरु चरण छुये वह नहिं रूसा।
तब सेठ चला उठ वन्दन को, बस पूर्ण मिटाने क्रन्दन को॥२७॥

जय तीन उपासों में कैसे, जय करी वन्दना घर जैसे।
वह चक्कर खा ना गिरा कहीं, वह थका नहीं मन म्लान नहीं॥ २८॥

तिन पर्वत पर ना नीर पिया, ना मन में उसकी पीर जिया।
जय क्योंकी गिरि की महिमा थी, जय उर में प्रभु की गरिमा भी॥ २९॥

जय इस विध नेको आय-आय, जय अतिशय बहुविध पाय-पाय।
जय कीना जीवन धन्य-धन्य, जय हुए लोक में रम्य रम्य॥ ३०॥

बस एक बार के वन्दन का, फल कोड़ाकोड़ि उपास कहा।
अरु कुछ ही भव में शिव जावे, वो लौट कभी ना भव आवे॥३१॥

सुन बीच काल में मनुज देव, वह होता सब जन करे सेव।
औ भुक्ति मुक्ति सब मिलते हैं, तिस बन्धन भव के टलते हैं॥३२॥

तुम सुनकर महिमा नित आओ,यदि स्वर्ग मोक्ष फल अब चाहो।
तुम करो वन्दना भक्ति भाव, अरु धर कर उर में अति उछाह॥३३॥

फिर साधर्मी को दान करो, अरु नये चैत्य निर्माण करो।
जय जैसे कीर्ति स्तम्भ बना, चित्तौड़ नगर में पाप हना॥३४॥

यह यादगिरी है अर्चन की, सम्मेदशिखर के चर्चन की।
इक श्रेष्ठी ने की भक्ति से, तुम इसीलिए निज शक्ति से॥३५॥

जय दान त्याग व्रत वास करो, जय तीर्थ याद कुछ खास करो।
मैं बलि बलि जाऊँ कूट-कूट, बस मिट जावे मम कर्म घूट॥३६॥

मैं लाऊँ क्या प्रभु आप चरण, हे तीन लोक के आप तरण।
मम विनती है यह बार-बार, तुम चरण रहे मम उर मझार॥३७॥

मैं जय जय जय जय जय उचरूँ, मैं आप चरण में मात्र चरूँ।
जय जब तक ना हो मुक्ति रमण, जय मात्र शरण हो आप चरण॥ ३८॥

जय सूरिकल्प से दीक्षा ले, जय विवेकसिन्धु की शिष्या से।
यह विधान पूर्ण है हुआ यहाँ, जयवन्ते रवि-शशि होय जहाँ॥ ३९॥

(घत्ता)

सम्मेदशिखर है, नहीं फिकर है तुमको पाकर अब हमको।
क्योंकी ना भटके, भव में अटके, ना पावे हम बहु दुखको॥
मैं भाव लगाकर, अर्घ सजाकर, चरणों भेंट चढ़ाता हूँ।
मैं वन्दन करके, चंदन बनके, शिवपथ कदम बढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

सम्मेदशिखर निर्वाण क्षेत्र की, पूजन जो नित करते हैं।
श्रेष्ठ देव हो श्रेष्ठ मनुज हो, शिव ललना को वरते हैं॥

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूर्ण होने का काल-माह आदि

नभ गुप्ती रस गन्ध है, महाराष्ट्र है प्रान्त।
कुन्थलगिरि के निकट में, करमाला निरभ्रान्त॥
गुरु पूनम शुकवार जो, षाढ मास का जान।
थापन वर्षायोग में, पूर्ण हुआ यह मान॥

गुरु परम्परा एवं अंतिम भावना

शांतिसिंधु के वीरसिंधु शुभ, वीरसिंधु के शिवसिंधु।
शिवसिंधु के प्रथम शिष्य थे, ज्ञानसिंधु जो जगइन्दु॥

उनके सर्वोत्तम जगनामी, विद्यासागर सूरी हैं।
और दूसरे परम तपस्वी, विवेक सिंधु अघ चूरि हैं॥

'विजय विनय' ये दो मुनिवर अरु,'विपुल विशाला' श्रमणी यूँ।
और पाँचवी अल्पबुद्धि मैं, विवेक सूरि की श्रमणी हूँ॥

इस ही अल्पबुद्धि के द्वारा सम्मेदाचल यह महिमा।
गायी गइ है प्राज्ञ शोध ले, जिससे बनी रहे गरिमा॥

जब तक सूरज चाँद रहे यह, धरती पर जयवन्त रहे।
भक्ती पूजन वन्दन करके, हम भी अब भगवन्त बने॥

सम्मेदशिखर वंदना

सम्मेदशिखर वन्दूँ सदा, भाव सहित नत भाल।
कहूँ वन्दना क्षेत्र की, पाने शिव की चाल॥

चौपाई

प्रथम कूट है गौतम स्वामी, वन्दो गणधर पद जगनामी।
चौबीसों के परम गणीशा, चौदह सौ बावन श्री ईशा॥ १॥

कूट ज्ञानधर कुन्थु जिनंदा, वन्दूँ मन-वच मेटो फंदा।
बहुत निकट हैं पूर्ण दयालू, हो जाऊँ में परम कृपालू॥ २॥

नमि जिनवर जी जग के चंदा, कूट मित्रधर सुख आनंदा।
तीनलोक के सभी जीव जी, बने मित्र मम मिटे पीव जी॥ ३॥

नाटक तजकर अर जिनस्वामी, नाटक वन्दूँ शिवपथ गामी।
चक्रवर्ती का चक्कर छोड़ा, हमने तुमसे नाता जोड़ा॥४॥

मल्लिप्रभु का कूट सुसंबल, बसो हृदय में मेरे पल-पल।
बाल ब्रह्ममय विरत विरागी, बना रहूँ मैं तुम पद रागी॥ ५॥

सुरनर किन्नर संकुल पूजें, वन्दत श्रेयनाथ अघ धूजे।
समवशरण में ऐसे सोहे, नखतों में ज्यों चंदा मोहे॥ ६॥

सुप्रभ से श्री सुविधिनाथ जी, वन्दूँ देना नित्य साथ जी।
धवल वर्ण के चरण तुम्हारे, धवल भाव हो नाथ हमारे॥ ७॥

पद्मप्रभ का मोहन कूटा, माना जग में शिव का खूँटा।
मोहनाश कर शिव मही पाई, वन्दूँ तुमको नित शिर-नाई॥ ८॥

मुनिसुव्रत का कूट सुनिर्झर, वन्दत होते अघ भी झर-झर।
मुनियों में तुम श्रेष्ठ मुनि हो, चरणा नमते श्रेष्ठ गुणि औ॥ ९॥

चन्द्रप्रभ का ललित सुहाना, वन्दूँ देना शिव का दाना।
इसी कूट से असंख्यात भी, साधू गये शिव कर्म घात ही॥१०॥

कैलाशगिरि से आदि जिनेश्वर, वन्दूँ निशदिन हे परमेश्वर।
सहस मुनीश्वर बाहुबली भी, मोक्ष गये इह आत्म बली जी॥ ११॥

शीतल जिनवर विद्युतवर से, पूजक को ये इच्छित वर दे।
पाप-ताप को शीतल करके, भक्ति से हम उर में धर लें॥१२ ॥

स्वयंप्रभा के नाथ अनंता, वन्दूँ मेटो दुख के कंता।
नमः सिद्ध कह दीक्षा लीनी, भव्यों को शिव शिक्षा दीनी॥ १३॥

संभव सम सुख पाने हेतू, वन्दूँ धवल कूट वृष केतू।
तीनों रत्नों को पा तीजे, पहुँचे शिव में सब अघ छीजे॥ १४॥

चम्पापुर से वासुपूज्य है, मन-वच-तन से करुँ पूज मैं।
पंचकल्याणक गिरि मंदारा, पाये पाँच युगल इह सारा॥ १५॥

अभिनंदन जी आनंद दाता, आनंद कूटा बहु विख्याता।
सर्व गुणों का नंदन करने, आये हम सब वंदन करने॥ १६॥

सुदत्तकूट है नाथ धर्म का, कारण है यह मोक्ष शर्म[1] का।
धर्म पुण्य को करलो भाई, वंदत ही सब अघ नश जाई॥ १७॥

सुमतिनाथ जी अविचल कूटा, गये मोक्ष ये जग से छूटा।
श्रेष्ठमती दो हमको जेष्ठा, सुर-नर वन्दित वन्दूँ श्रेष्ठा॥ १८॥

शांतिप्रभ हैं शांति जिनेशा, वन्दूँ तुमको हे तीर्थेशा।
कुन्दप्रभ है दूजा नामा, नमते बनते सार्थक कामा॥ १९॥

पावापुर से श्री महावीरा, वर्द्धमान हो सन्मति धीरा।
पद्म सरोवर शिव का थाना, वन्दूँ सुख का द्वारा माना॥ २०॥

सुपार्श्वनाथ का कूट प्रभासा, चमके सूरज सम है खासा।
रोग मिटाती इसकी धूली,वन्दूँ, पाने शिव की चूली॥ २१ ॥

सुवीर कूट श्री विमल प्रधाना, वन्दूँ मन में धरि-धरि ध्याना।
चरण-शरण के विन ही नाथा, भटका कर दो आज सनाथा॥ २२॥

चढ़ते-चढ़ते घाटी उच्च, हाँफ गया हूँ प्रभुवर सच्च।
सिद्धिवरा है कूट अजीत, वन्दूँ गाऊँ तुमरे गीत॥ २३॥

ऊर्जयन्त है श्री गिरनारी, पाई तप बल से शिवनारी।
कारण हुण्डासर्पण काल, वन्दूँ नेमि जिनेश्वर चाल॥ २४॥

स्वर्णभद्र है कूट प्रसिद्धा, पार्श्वनाथ का मानों सिद्धा।
वंदन होती पूर्ण यहाँ है, चरण गुफा में श्रेष्ठ तहाँ है॥ २५॥

एक बार भी करलो वंदन, मिट जावे फिर भव के बंधन।
तीन काल में तीन योग से, वन्दूँ चरणा नित्य धोक दे॥ २६॥

विवेकसूरि की शिष्या पञ्चम, भव को तज गति पाने पञ्चम।
बार-बार ये विनती करके, फिर-फिर वन्दें उर में धरके॥ २७॥

---

१. शर्म=सुख

प्रशस्ति

(ज्ञानोदय)

अकलंक सूरि ने सौंदा मठ में, जिनशासन की रक्षा की।
बौद्धमती से वाद जीतकर, जैनधर्म की शिक्षा दी॥
यहीं हुई यह सिद्धक्षेत्र की, पूर्ण वंदना प्यारी है।
पढ़ो सुनो हे भव्य जनो, यदि चाहो सुख की क्यारी है॥

(दोहा)

[१]माघ शुक्ल की पञ्चमी, सूर्यवार इकतीस।
वीर मोक्ष पच्चीस सौ, पूर्ण हुई थुति ईश॥

---

१. माघ शुक्ल ५, वीर निर्वाण संवत् २५३१, रविवार